निम्नलिखित महानुभावों ने द्रव्य सहायता प्रदान की उनकी शुभनामावली

३००) जयचन्द बाबु रामपुरिया की धर्मपत्नि अखंड सोभाग्यवती अमराव बाई

१००) जीवराजजी नथमलजी रामपुरिया

१६६) ज्ञान खाते का

७५) घेवर चन्दजी रामपुरिया की धर्मपत्नि अखंड सोभाग्यवती लक्ष्मी बाई

५१) पंचीलालजी काकरीया भीनासर वाला की धर्मपत्नि बाई कस्तूरी

मङ्गल मुद्रणालय, बीकानेर ।

ॐ अर्हं श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमो नमः

श्री पार्श्वचंद्र सूरी सद् गुरुभ्यो नमः

श्री कुशलचंद्र गणीश्वर सद् गुरुभ्यो नमः

भ्रातृचंद सूरी सद् गुरुभ्यो नमः

श्री प्राचीन साधुवंदनादि चोढालीया भावना सजायादि संग्रह

श्री नागोरी बृहन् तपा गच्छीय पूज्य महतरा साध्वीजी श्री प्रमोद श्रीजी महाराज का शिष्या पूज्य अणगार श्रीजी का स्मरणार्थे पूज्य साध्वीजी दया श्रीजी महाराज तथा पून्योदया श्रीजी का उपदेश से :—

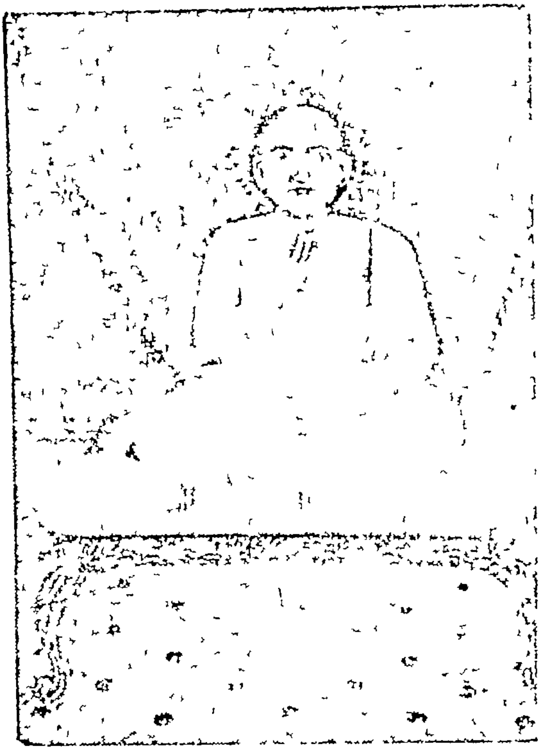
संशोधक संग्रहकरनार

पूज्य साध्वी प्रमाण श्रीजी

श्रीमन्नागपुरीय वृहत् तपागच्छाधिराज शास्त्र विशारद

बाल ब्रह्मचारी युग प्रधान १००८

श्रीमत् पार्श्वचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज



जन्म सवत १५३७ चैत्र सुदी ९ जन्म स्थान हमीरपुर

दीक्षा संवत १५४६ उपाध्यायपद सवत् १५५४

क्रियोद्धार सवत् १५५४ आचार्यपद संवत् १५६५

युगप्रधानपद सं० १५९९ स्वर्ग स० १६१२ मीघसर सुदी ३

अनुक्रमणिका

॥ अथ श्रीसाधुवंदना ॥

रिसहजिण पमुह चउवीश जिण वंदियें ॥ हेलि संसारना दुःख सवि छेदियें ॥ पुंडरीकादि गणधार मुणि साहुणी ॥ सार परिवार जग जासु महिमा घणी ॥ १ ॥ भरह नरराय आर्य सवर पत्तओ ॥ सार सिगार नर नारि संजुत्तओ ॥ ध्यान बल कर्म खय करिय थयो केवली ॥ तेहनुं नाम मन ध्याइयें वलि वली ॥ २ ॥ एणिपरे अठ आइच्च जस महजसो ॥ नरवइ अति बलो महबलो वर जसो, तेजवीरिय निवो दंडवीरिय वली ॥ नमुं जलवीरिय क्रित्तिवीरिय रली ॥ ३ ॥ जंबूपन्नत्ति ठाणांग ए भाखिया ॥ भरत जिम केवली केवली दाखिया ॥ प्रहसमें तेहना नाम संभारियें ॥ आवता पाप संताप सवि वारियें ॥ ४ ॥ रायभिनिवेशि पएसि संबोहणो ॥ केशिकुमार वर समण गुण सोहणो ॥ रायपसिणिय आगमें जाणियें ॥ तेह गरुआ तणा सुगुण मन आणियें ॥ ५ ॥ धन्य ते खंदगो नाम परि वायगो ॥ वीरजिन वचनें थयो परम गुण साहुणो ॥

तुंगियानयरि तप संयम फल कह्यु ॥ उत्तम श्रावकें तहत्ति करी सदह्यु ॥ ६ ॥ पास संतानिया थविर गुणसायरा ॥ वीर सुप्रशंसिया हुं तुम्हे सुहकरा ॥ निगम अड सहस परिवार संजुत्तओ विमल संयम धरो शेठिवर कत्तियो ॥ ७ ॥ ढाल ॥ उत्तम हिव शिवरायरिषी महासतियजयंती ॥ ऋषभदत्त देवानंद नमुं जिण जणणीय हुंती ॥ पूरव भव दाखविय वीरजिण जासु महा वल ॥ जाणि सु दंशण शेठ थयो संयम गुण सबल ॥ ८ ॥ राय उदायण राज छंडि देश सिंधु सोवीर ॥ चारित्र पाल्यं अति पवित्र मंदर गिरिधीर ॥ पंचम अंगें सांभल्याए तेहना पाय शरण ॥ दुख हरण सुख करण सही टाले जन्म मरण ॥ ९ ॥ मल्लि जिणेसर पुव्व मित पडिवुधि नामें, इक्खागराय नृप शंख जाणि कासीपुर ठामें ॥ रूप्पि कुंणालाधिपति अंग राजा चंद्र छाय ॥ अदीणशत्रु कुरुराय तहां पंचालहराय ॥ १० ॥ जितशत्रु ए छह मल्लि पास हुआ संजमधारी ॥ विचरया उग्र विहार सयल जीवह उपगारी ॥ मंत्री सुवुद्धियें वोहियोए राजा जितशत्रु ॥ लेइ संयम अंतरंग जीता जिणे शत्रु ॥ ११ ॥ तेतलि पुत्र सुमंत्रि मुकुट पोटिल पडिवोहिय ॥ ध्यान बलें ततकाल थयो केवल गुण सोहिय ॥ पुंडरिक मुनिराय हुओ सरवारथ सिद्धि ॥ सुरवर लहिस्यें कर्म खपी तप

संयम सिद्धि । १२ ॥ धन धन धर्मघोष शीश धर्म्मरुचि अणि-गार । जीव ऊगारी जेणे कियो कडुतुंब आहार ॥ पांडव पंच नेमि सिद्धि सांभलि संपत्त ॥ शत्रुंजें अणसण करिय सिद्ध थया निर्मल चित्त ॥ १३ ॥ थावच्चासुय सेलगराय धन मेघ मुणिंद ॥ छट्ठें अंगें एह सुणि हुवो परमाणंद ॥ जादव वंश प्रसिद्ध कह्यो उत्तम नर नार आदर संयम आदरि ए पहुता भव पार ॥ १४ ॥ भूपति अंधकविश्नु ताय जसु धारणि माय गोयम पमुहा दश कुमार हुआ मुनिराय ॥ भिक्खु पडिमा चार वही व्रतधार वरिस, पालिय शत्रुंजे सिद्ध थया तसु नामुं शीश ॥ १५ ॥

॥ ढल ॥ ३ ॥ गोडीनो ॥ गोतम समुद्र कुमार, सागर गंभीर, स्तिमित अचल पय वंदियें ए ॥ कंपिल्ल ने अक्षोभ, कुमेर प्रशेनजित, विष्णु नाम इह छंदियें ए, कृष्ण पुत्र वलि आठ, धारणी अंगज, गज जिम गुरु गुण गाजता ए ॥ अक्षोभ सागर समुद्र, हिमवंत गुणवंत, अचल धरण जग दीपता ए ॥ १६ ॥ पूरण नें अभिचंद, मुनिवर आठ ए, आठ करम खपवा भणी ए ॥ आणिय मन आणंद, तप गुणरय-णह, संवच्छरि महिमा घणीए ॥ संयम सोल वरीस, पालि विमल गिरि, संथारे सिद्धें गया ए, ते समरुं निशि दीस,

धन धन यादव वंश विभूषण ए हुवा ए ॥ १७ ॥ अणिय-सकुंमर अणंत सेण अजितसेन,, अणिहत रिपु गुण मन धरु ए, देवसेन शत्रुसेन, ए छह देवकी, नंदन गुणकीरतिकरु ए ॥ काजल शामल देह, रूप अनोपम, सहुय दीसे समतुले ए ॥ वाध्या देवनुभाव, भागशोभागिह, नाग घरणि सुलसा घरें ए ॥ १८ ॥ देशना सुणि बत्रीश, नारि बत्रीशए, कोडि-सोवन जिणें परिहरीए ॥ चऊदह पुरव धार, अणसण शेत्रु जें, गिरि शिवरमणी वरीए ॥ वसुदेव धारणी पुत्र, सारण यति वर, आतम तारण गुणनिलो ए ॥ छंदी रमणि पंचाश, कोडी पंचाशए, सोवन यादव कुल तिलोए ॥ १९ ॥ मुणिवर गज-सुकुमाल, सोमिल उपसर्ग, खिमा खडग जेणे कर धयुं ए ॥ वसुदेवराय मल्हार, देवकी नंदन, सिद्धि रमणिसें वरि वर्यो ए ॥ जाणग शरीर द्रव्य साधु जाणिय सुरवर, भगति कुसुम वर्षण कर्यो ए ॥ नाटक गीत निनाद, उछव अति घणा, जय जयारव मुख उच्चरे ए ॥ २० ॥ सुमुह दुमुह कुमार, कूवर दारुक, अणाधृष्टि मुनिवर तणाए ॥ बलदेव घर अवतार, माता धारणि, जन गावे जसुगुण घणाए ॥ सोवन कोडि पंचाश, रमणि पंचाशय, परिहरि परमारथ धर्युं ए॥ शेत्रुंजशिहर विचार, जाणिय अवसर, काल संथारो जिण कर्यो ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ वसुदेवराय घर धारणी ॥ घरणो शील निर्म्मल धारणि, तेहनो नंदन जालि कुमार, जयजय यादव वंशशृंगार ॥ २२ ॥ कृष्ण पुत्र रुकमणि अंग जात ॥ निरुपम शम दम जग विख्यात ॥ वारिषेण उवयालि मयालि ॥ पुरिसषेण पजुन्न संभाल ॥ २३ ॥ संबु कुमार नृप कृष्ण मल्हार जंबूवती उयरें अवनार ॥ वैदरभी माता सुपसिद्धि पिता पज्जुन कुमार अनीरुद्ध ॥ २४ ॥ सत्यनेमि दृढनेमि वदीत ॥ अंतर रिपु लीलें जिण जीत ॥ समुद्रविजय शिवादेवी मल्हार ॥ यादव वंश धन्य अवतार ॥ २५ ॥ जालि प्रमुख ए दशय कुमार ॥ छंडिय राजरिद्धि भंडार । सिंह जेम संयम आदरी, सुगतिरमणि हेलाशु वरी ॥ २६ ॥ पउमावइ गोरी गंधार, लखणा सुसीमा नामें नार । जंबूवती सत्यभामा सही । रुकमिणि कृष्ण घरणी ए कही ॥ २७ ॥ आठ अग्रमहिषी ए जाण । धरि संयम पहुती निरवाण । संबु कुमर वर अंतेउरी । मूलदत्ता बीजी मूलसिरी ॥ २८ ॥ वेगइ नेमि जिणेसर पास सुणीय धर्म्म मनने उल्लास, दुकर तप संयम प्रतिपाल । परमारथ साध्यो ततकाल ॥ २९ ॥ यादव वंश विभूषण थया । नरनारी ए सुगतें गया । अष्टम अंग कह्या गुण घणा । सुज्ञनें चरण शरण तेह तणा ॥ ३० ॥ मकाइ हकम पुरुष प्रधान ।

तिण प्रणम्या स्वामी वर्द्धमान, संयम पाली सोल वरीस । सिद्ध थयां तसु नामुँ शीश ॥ ३१ ॥ अर्जुनमाली पाली दया । परीसह सहिवें निश्चल थया । छठतप संयम छम्मास । आदरि कीधो शिवपुरि वास ॥ ३२ ॥ कासव खेम धृतिधर-कैलास, हरिचंदण पूरिय मन आश । वारत सुदंशण पूरणभद्र श्रमणभद्र पाम्या शिवभद्र ॥ ३३ ॥ सुप्रतिष्ठ गुण गीरुउ मेह, तृण सम गणी सहु धन्न देह । चरण करण सित्तरी भंडार । वलि टाल्यो जेणें भव अवतार ॥ ३४ ॥ बालक माँहें रमतो बाल । अइमुत्तो गुण गणह विशाल । श्री गौतम विहरत गोचरी । देखी हरखी साथें करी ॥ ३५ ॥ घर तेडी मातानें पास । प्रतिलाभ्या मननें उल्हास । वरी पासेंसरिसो आवीयो । तप संयम शिवपुर पावियो ॥ ३६ ॥ मोटो राजा नाम अलक । दुक्कर तप करतो नहुं थक । विपुल गिरें संथारो करी । वीर वचन शिवरमणी वरी ॥ ३७ ॥ श्रेणीक नरवइ अंतेउरी । तेरह तेर क्रिया परि हरी । अष्टम अंग भाखी सुप्रसिद्ध । सुगतिपहुती नमियें सिद्ध ॥३८॥ नंदा नंदवती संयती । नंदुत्तर उत्तम गुणवती । चोथी राणी भणि नंदणी । शिवा साधु जन आणंदिणी ॥ ३९ ॥ मरुता सत्तम वलि सु-मरुता । मह मरुदेवा उपशम जुत्ता । भद्र सुभद्रा सुजया

जाण । सुमणा भुइदिन्न वखाण ।। ४० ।। श्रमणी शिरोमणि तेरह एह ।। दुक्कर तप शोपी निज देह ।। सिद्ध थइ कीधो भव अंत ।। दंशण नाणे सुख्ख अणंत ।। ४१ ।। दशे अनेरी श्रेणिक नार ।। दुःकर तप करि पहुती पार ।। तेह तणा हवे गुण वर्णवुं ।। जिम आनंद लहुँ नव नवुं ।। ४२ ।। काली रयणा वलि तप कीध ।। उत्तम संयम ऋद्धि समिद्ध ।। कणगावली सुकालीदेवी । कर्म खप्यां तप एह करेवी ।।४३।। लहुडो सिंह निःक्रीडित कर्यो ।-महाकाली आतम उद्धर्यो, । किन्हा राणी संयम लीध, महा सिंह नि.क्री डित कीध ।।४४।। देवी सुकण्हा श्रेणिक तणी, जग जागें जस महिमा घणी, सत्तम सत्तमिया एक जाण । अठम अठमीया सुवखाण ।।४५।। त्रीजी अछे नवम नवमिया । चोथी प्रतिमा दशम दशमिया । ए च्यारे तिण प्रतिमा वही । साधु मारग जिणवरनी कही ।। ४६ ।। महकन्हा लघु सर्वतोभद्र तप करी पाम्यो परम सुभद्र ।। सर्वतभद्र वडो तप कह्यो । वीरकन्हा ते निरतो वह्यो ।। ४७ ।। भद्रोत्तर प्रतिमा जे कही, रामकन्हा साहुणि ते वही । पिऊसेणकन्हा मुगता वली तप करि पुरी निज मन रली ।।४८।। महसेणकन्हा सुगुण प्रधान, तिण कीधो आंबील वद्धमान ।। अंतगड अंग कह्या गुण घणा, सुजने चरण शरण तेहतणा ।।४९।।

॥ ढाल ५ ॥ हिव श्रेणिक सुत जाली मयाली ॥ ऊव-
याली अनोपम चरण पाल ॥ थया सिद्ध पुरुषसेण वारिषेण।
जीती जिण अंतर शत्रुसेण ॥ ५० ॥ दीहदंत मुनो सरलठ्ठ-
दंत, श्रीहलकुमर सम रस महंत, वेहास चऊव्विह बुद्धि धार,
जयवंतो जाणि अभयकुमार ॥ ५१ ॥ व्रतपाली टाली घणा ।
कषाय ॥ पाम्यो जेण अणुत्तर ऊववाय ॥ ते साधु शिरोमणि
चरण वंदि, मन हरष धरुं जन तणों व्रंद ॥ ५२ ॥ वली
बीजा श्रेणिकना कुमार ॥ दीहसेण महसेण चरण धार ॥
लठ्ठदंत निपुण गुण गूढदंत ॥ शुद्धदंत हल्ल दुम प्रशम वंत
॥ ५३ ॥ दुमसेण महा दुमसेणसिंह ॥ सिंहसेण महसेण भय
अबीह ॥ पुण्णसेण भणया ए कुमर तेर ॥ तप टाल्यो जेणे
भव भमण फेर ॥ ५४ ॥ काकंदीपुरी भद्रा कुमार । धन धन्नो
धर्मे निरतिचार । बत्रीशरमणि बत्रीशकोड । धन संयम लीधोजेणे
छोड ॥ ५५ ॥ अंबिल तप पारणेछठ सोय, आहारे ते जे
नल्ये कोय । चउद सहस श्रमण मंडलि मझार । श्री वीर
प्रशंसिय तप विचार ॥ ५६ ॥ सो नामनें परिणाम धन्य ।
वंदेवि करिशुं निय जनम धन्य । सुनखत्त महामुणि इसिय-
दास । निःशल्लपल्ल मुणि गुण विकाश ॥ ५७ ॥ चंद्रमहा
मुनीसर रामपुत्र ॥ पुढिमाइमुनिपेढाल पुत्र ॥ पोटिल्ल विहल्ल

पय नसेसु ॥ त्रिहुकाले वंछिय फल लहेसु ॥ ५८॥ ए वोल्या जिणवर नवमअंग । अणुत्तरउववाइ नमुमन रंग । अग्यारम अंग वीय खंघ । दशवोल्या पूरे साधु खंघ ॥ ५६ ॥

॥ढाल ६ ॥ कुमर सुबाहु वखाणियेजी सोहम सुंदर सार । भोगदुगुंदक देवताजी । रूप मयण अवतार मुनीसर जयजय गुण भंडार ॥ ६० ॥ तसुनाम जपु अनिवार ॥ मुनी० आंकणी ॥ भद्रनंदि जग वंदियेजी, श्री सुजात व्रतधार । वासपूज्य सुवासवोजी । श्री जिनदास कूमार । मुनीसर० ॥६१॥ श्रमण महावल जाणियेंजो । भद्रनंदि महचंद । वरदत्त ए दश भाखियाजी । शेवे सुर नर वृंद । मुनीवर० ॥ ६२ ॥ पंच पंचसय परहरीजी । रूद्धि सहित जिण नार । दश विध यति-धर्म आदरीजी । खूतानहुँ संसार । मुनीस० ॥ ६३ ॥ उत्त-राध्ययने जे कह्याजी । ते संभारु साध । सफल कर्यो जिणे आपणोजी । धन मानव भव लाध ॥मुनीसर० ६४॥ कापिल महाऋषि केवलीजी । प्रति बोध्या जिणे भील । ध्रुवकि ध्रुवकि सवि पंचसेंजी । चरण करण नहीं ढील ॥ मुनीसर० ॥ ६५॥ हरिकेशी वल वंदियेजी । चित्र मुनीसर जाण । ब्रह्मदत्तपडि-बोहिवाजी । वोल्या मधुरी वाण॥ मुनीसर० ॥ ६६ ॥ कमला वनीयें वोहीयोजी । राजा श्री इखुकार । भृगु बंभण घरणी

जसाजी, तेहना वेवे कुमार ॥ मुनि० ॥ ६७ ॥ एछह अनुक्रम निकल्याजी। वेरागी समकाल, उग्र, विहारे विहरताजी । सिद्ध थया सुविशाल ॥ नुनी० ॥ ६८ ॥ नृप संजय मृगया गयोजी । गर्दभाल गुरुपास । वचन सुणी वेरागियोजी । संयत थयो उन्हास ॥ मुनी० ॥ ६९ ॥ राजऋद्धि जेणे परहरीजी । खत्रिय राजकुमार । संजयसु एकठा थयाजी । कीधो धर्म विचार ॥ मुनी० ॥ ७० ॥ भरत सगर मघवा भणुजी । नरवरसनतकुमार । शांति कुंथु अर चक्कवेजी । पऊम महाव्रत धार ॥ नुनी० ॥ ॥ ७१ ॥ चतुर चतुर गति चूरणोजी । चक्री श्री हरिषेण । दशम चक्रि जय जीतियोजी, अंतरंग रिपुसेण ॥मुनी० ७२॥

॥ ढाल ७ ॥ देश दशारण जाणिये । दशारणभद्र नरिंदूएं । वीडजिणेसर वंदतां, जेणे नीत्यो सोहमइंदूए ॥ ७३ ॥ गाइसुगुण गिरूआतणा । आणी मन आणंदूए । जसुजस तिहूयण जगमगे । सेवेसुरनर वृंदूए ॥ गाइ० ॥ ७४ ॥ देश कलिंग वखाणीए । राजा श्री करकंडूए । द्विमुख पंचालनो राजियो । तारण तरण तरंडुए । ॥गाइसु० ॥ ७५ । ॥मिथुला नगरीनो अधिपती । नमि नामे मद माणुए । नृपति नगाति गंधारवे । पाम्यो केवल नाणुए । ॥ गाइसु० । ७६ ॥ सेय-महाबल वंदीए । श्रमण मृगापुत्र जाणीए । कुमर अनाथी नाथ

थयो । सयल जगे जे प्राणीए ॥ गाइसु० ॥ ७७ ॥ उत्तम संयम गहगहे । समुद्रपाल रहनेमिए। केसीय गौतम बे मिल्या, मुगते महुता खेमिए ।। गाइसु० ॥ ७८ ॥ माहणकुल घरे दीपता । जयघोष विजयघोष नामेंए । बोल्या ऋषिवर एटला उत्तराध्ययन सुठामेएं ॥ गाइसु० ॥ ७९ ॥ सोहमवचने आदर्यो, संयम जंबुकुमारए । कोडि नवाणु परिहरी । नव परणी आठ नारिए ॥ गाइसु० ॥ ८० ॥ प्रभव शय्यंभव वंदिए । जशोभद्र श्रीभद्रबाहुए । विजय संभूति वखाणीए । थुलीभद्र वर साहुए ॥ गाइसु० ॥ ८१ ॥ आर्यमहागिरि जग-जयो । अज्जसुहथि सूरिए । सुठिय सुपडिबद्ध मुणिवरू । तसुनामें दुरित सवि दुरिए ॥ गाइसु० ॥ ८२ ॥ इंद्रदिन्न गुरु गाइयें । अज्जदिन सुविचारूए । सींहगिरि सींहतणी परे । पाल्युं संयम भारूए ॥ गाइसु० ॥ ८३ ॥ बालपणे जाइसरू वयरकुमार वदीतुए। दश पुरवधर गुणनिलो । विषय विकारने जीतुए ॥ गा० ८४ ॥ पन्नवणा जिणउधयु, धन ते आरिज सामुए, देवढिगणिवर पयजुगे । अहनिशि करुं प्रणामुए ॥ गा० ॥ ८५ ॥ वलिय अनेरा वंदियें। बाहुबलि आर्द्र कुमारूए प्रवचन वचने जे मिले । ते नमतां भवपारूए ॥ गाइसु गुण गिरुआतणा ॥ ८६ ॥

॥ कलस ॥ इम जैन वाणी, जोइजाणी हियें आणी भणया । भवतरण तारण दुःख वारण साधुगुरु मुख जेसुणया इमअछेमुनीवर जेयहो स्यें काल अनंतें जेहुआ । तेसत्त छंदे सूरि श्री पार्श्वचंद्रें मन आणंदे संथुआ ॥ ८७ ॥

॥ इति श्री साधुवंदना संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री आदिजन वीनति ॥

सकल आदिजीणंद जुहारीयें, विकट संकट कोडि विडारियें । करुं विनतडी ते विचारियें, त्रिजगनाथ हियें अवधारियें ॥ १ ॥ प्रभु अनादि निगोदें हुँ भम्यो, निफल काल अनंतो निर्गम्यो । मरण जन्मतणां दुःख जे सह्यां, ते किम स्वामी जाय में कह्यां ॥ २ ॥ एक उसासीए कर्म्में प्रेरीयो । सत्तर साढ भवंतर फेरियो । कहुँ वात किसी तेह पारनी, चढयो रासी पछे व्यवहारनी ॥ ३ ॥ वस्यो जातियें थावरकायनी, लहीय भेट नही जिनरायनी । तिहां काल असख अनंतनी, तनुतणी स्थिति बोली जीवनी ॥ ४ ॥ तिह असंख उसप्पिणी सप्पिणी, धर दगागणी पवण चिहुँ तणी वण अनंत उसप्पिणी जाणिये, इम असख अनंत वखाणिये ॥ ५ ॥ बि तिचउरिंद्रिय मांहे भमावीयो, नवनवी परकमिं

नचावियो । जल थलंवरचारी भुजोरगें, वस्यो भूरी रस्यो उन्मारगें ॥ ६ ॥ करिय पाप घणा नरके गयो, नरकपाल वसें दुःखियो थयो । वहुअ तज्जण ताडण भेदना, सहिय संसहि दुसहवेदना ॥ ७ ॥ अति कठोर कुभाषा सांभली, श्रवण इंद्रि थइ भय भंभली । पडये परवसें एम विमासीए, ति दिशी न-कोइ नहीं जीहां नासीयें ॥ ८ ॥ नदिय वैतरणी जले तारियो, करी महा खुरधारे विदारियो । सुख गिणि तरणी तडि जइ चढयो, विषम तीखेखोलेतो खल्यो ॥ ९ ॥ अति महा घन ताविये ताावियो, वन सुशीतल जाणी आवियो । पवन प्राणी पडंते पानडे, थइय खंडित अंग जडी खडे ॥ १० ॥ विषम संकड कुंभी पाचव्यो, वली पुराकृत भाखी त्राजव्यो । तृषि-तनें त्रपुतातोपावियो, निज बुभुक्षित मांस खवावियो ॥ ११ ॥ मन विमासी वासि छेदीओ, निशित सूलिए शूलिए भेदियो । करीकु हाडे तरु जिम तछियो, अजिन छेदिय विविध विकछिओ ॥ १२ ॥ विडिश जालिये पासे पाडियो, स्रणग चित्रे मृग जीम ताडियो । सुदृढयंत्रे तिल जिम पीलियो, कोइ न छोडे थाय शीलीओ ॥ १३ ॥ नरक दुःख घणा इण परें सही, बहु भवांतरे सुरगति पण लही । भवणने वाण जोइ वेमाणिया, एहज भेद जिनागमे जाणिया ॥ १४ ॥ तिहां किल्विस पर-

माहन्मिया, विणु तुम्हारी आण अहम्मिया । थइय कम्म घणो में संचिओ, अवसि आपे आपुण वंचियो ॥१५॥ अभि नियोगी वाहण सुरतणु, प्रभु लह्युं में इम परवशपणुं । सुर-भवे वलि देवीपणे थयो, परवहार विडंबी विडंबियो ॥ १६ ॥ जो किमे प्रभु पासे आवियो, तो कुतुहल भावे भावियो । परम तत्त्व सुधारस नहु गम्यो, सुणिय वाणी राग रसें रम्यो ॥ १७ ॥

वस्तु - इम चतुर्गती इम चतुर्गतीभम्यो संसार, कर्म्म वशे हुँ रडवडयो, नाह तुम्ह आण विहुणो, गिरि सरी टोल तणीपरे घसी घसी थयो कर्म्मखीणो, इणि कारणे वलि वलि लही, माणुसनो भवसार, पडत चढत गति संगते थयो अनंतीवार ॥ १८ ॥

॥ ढाल ॥ दुल्लह नरभव पामीरे, नहु नमीओ त्रिभूवन स्वामी । विणु समकित तो भव हारयोरे, पिड पाप पराभवे भार्यो ॥ १९ ॥ मन मोह मिथ्या त्वे मोह्योरे, शुद्ध समकित रयण विछोह्यो । तो कुगुरु कुदेवे लीणोरे, तसु सेवा करत न रीणो ॥ २० ॥ जे हाथे धरे हथियाररे, जसु संगे रमणी परिवार । जे रागे दोपे सांध्यारे, इस्या देवभणी आराध्या ॥ २१ ॥ तने गोपीचंदनना टीलारे, मुखे हरीहर नामे न

ढीला। गले पेहेरीय तुलसी मालारे, गया तीरथ जावे पाला।२२
नदी गंगा प्रयगा केदारेरे, वलि पुष्करने हरिद्वारे । शोभतिय
प्रमुख नाह्योरे, वलि वलिय वलि उमाह्यो ॥ २३ ॥ वहुपर्वि
हिंचोले हिंच्योरे, वड पींपल तुलसी सिंच्या। सर वापी कूप
खणाव्यारे, धेर चंभण वेद भणाव्या ॥ २४ ॥ में श्राद्ध
संवत्सर कीधारे, पर्वेपितरभणी पिंड दीधा। जगे योगी ब्रह्म
सन्यासीरे, गुरु जाणी नमी मठवासी ॥ २५ ॥ इम लौकिक
मारगे वहेंतेरे, परमातम तत्व अलहेते । नर अमरतणी गती
लाधीरे, पुण जिणवर आण विराधी ॥ २६ ॥ जिन तणिय
क्रियाने प्राणीयेरे, गयो नवम ग्रैवेक विमाणीये । जोवुं तो
य न समकित साधुंरे, कहो मुक्ति किसिपरे साधुं ॥ २७ ॥
वहु गर्भतणा दुःख सहियारे, जे नरक तणा कहिया। नवमास
अधिक तिहां वसियोरे, प्रभु नाम हिये नहुँ वसियो ॥ २८ ॥
अहुठ कोडि (साढात्रण क्रोड) सुइ लीधीरे, धमी अग्नि
वर्णि ते कीधी। रोमे रोमे नरने अंगेरे, कोइ चांपे कोप प्रसंगे
॥ २९ ॥ जेहवी ते वेदन थायरे, गर्भे आठगुणी कहेवाय।
कोड्ढा कोडी गुणी ते भाखीरे, जीव जन्म जीन साखी ।३०।
दुःख भोगवी नरभवे आव्योरे, माइ थाने वृद्धि लहाव्यो ।
क्रीडा रस रंगें रातोरे, भम्यो अरओ परओजातो ॥ ३१ ॥

तिहां कांइ विवेक न आणयोरे, मने हेय अहेय न जाणयो।
इम बालपणुं अतिक्रम्योरे। हवे योवन वय संक्रमियो ॥ ३२॥

वस्तु—लहिय नरगती लहिय नरगती पढम बहु दुःख गर्भवास में भोगव्या, असुचि ठामें मिलि कर्म्म ग्रहियो बार वरस भवस्थिति गुरुकाय थितिए चउवीश रहियो, लहिय जनम नवनवियपरें बालकसामें क्रोध, भोलपणें अनुक्रम दशा, योवन वयनी लीध ॥ ३३ ॥

चोपाइ—योवन धन वन गहन समान, वाप्यु अंधकार अज्ञान; गुरु रविकर नहुँ जीहां. मनमथ भीलपाल बे तिहां ॥ ३४ ॥ रमणी नयण बाण सपराण, ततक्षण हरे शीलगुण प्राण । क्रोध दावानल जिहां परजले, माणसेल मदव गती खले ॥ ३५ । माया विष तरु छाया जीसी, पडसे गहलिज तिहां बेससी । तृष्णा नदीय पहट भरपूर, ऊन्मूलीं तरु नांखि दूर ॥ ३६ ॥ मन तट वसे सत संतोष, तप ग्रीषम ते पामे शोप । विषय चोर रसवाटें वसे, संयम धन लेवा धसमसे ॥ ३७ । रंग कुरंग फिरे अति घणा, सुख दुःख सरस ते दिसे तृणा, इण वन वास कर्यो कोइ काल, हुण्या प्राण मुखे बोल्या आल ॥ ३८ ॥ कूड लेख परवचन द्रोह, कीधा ममता माया लोह । ऊसीसीने अंतर काणि, लह कत्र-

हककरो कीधी वाग ॥ ३९ ॥ इम प्रपंच में परधन लीध, पर रमणीशुं संगम कीध । वचने कुवचन बोल्या वणा, मने चिंतविया विषय रसतणा । ४० ॥ जे उपाय ते कहेता लाज, ते जाणे सहुए जिनराज । नव विह परिग्रह गह धन धन्न, चेत्र हाट घर रूप सुवन ॥ ४१ ॥ कुविय दुपय चउपय एतला पुण मल्या छे हिपुण नहीं भला । मरणतणे अवसरे सवि रहे, पाछल जीव दुःख एकलो सहे ॥ ४२ ॥ इसो भाव हियडे नहुँ वस्यो, धन कारण धायो धसमस्यो । पावठाण करसण में कर्या, कर्म्मदान पन्नर आचर्या ॥ ४३ ॥ अणगल जले जील्यो वहुवार । हिंच्योखेल्योनलहुँ पार । इम लागा वहु अनरथ दंड, इणिपरे किधा कर्म्मप्रचंड ॥ ४४ ॥ आव्यो उदे मुज शुभकर्म्म, जाण्युं कीजे कांइ धर्म्म । नाम मात्र जे जे गुरु मिल्यो, पासे गछ तिणि तिण सकल्यो ॥४५॥ साचा न कह्या देव गुरुधर्म्म, शुद्ध न जाण्यो जिनमत मर्म्म । अंध परंपर पडयो प्रवाहिं, वहत पडयो भवसायरमांहि ॥ ४६ ॥ परतिरथे जे छे आचार, तेहज कर्या धर्म व्यापार । केवल अंतर एक नामनो, वीजो तेहिज ठामठामनो ॥ ४७ ॥ प्रभु में चित्यो चित आपणे, पर शासन हिंसा धर्म भणे । जिन शासने पुण जे इम होय, जैन शैव अंतर नहु कोय

॥ ४८ ॥ करम योगे गीतारथ मिल्यो, टल्यो दुरित मन वांछित फल्यो । तासु वचनि शुभ मति मन वसी, प्रवचन कसवटी जोवुं कसी ॥ ४९ ॥ आरंभ ते न हवे धर्म, जिण- वर आण तणो ए मर्म्म । धर्म्म अने जूओ आरंभ, इम निर्म्मल मति थइय सुलंभ ॥ ५० ॥ हिव जिन शिव अंतर जाणियो, गाढो टाढो थयो प्राणियो । स्वामीनो पाम्यो उपदेश; जिहां नहीं हिंसानो लेश ॥ ५१ ॥ रिसह जिणेशर हवे विनवुं, तुम्ह प्रसादे हरख नवनवुं । पाम्यो प्रवहण ए अवधार, कृपा करी मुज पार उतार ॥ ५२ ॥ नहुं जाणुं भव थिति केटली, प्रभु तुम्हि जाणो छो जेटली । ज्यां लगें शिवपद न लहुँ देव, त्यां लगे भव भव तुम्हपय सेव ॥५३॥ इणि कारण प्रभुपाये लागीए, अवर किंपि में नहु मागीये । तुम्ह प्रसाद हूए परमाणंद; कर जोडी प्रणमे पार्श्वचंद्र सूरिंद ॥ ५४ ॥

वस्तु । रिसह जिणवर रिसह जिणवर देव अवधार निज सेवक विनती घणो काल भम्यो रीणो, सधण छांह फल भर भरिय तरु समाण; तुम्ह जिण आण लीणो । ताप सम्यो टाढिम थइ, तिम करी हिम ए संग, प्रभु प्रसादे जिम संपजे, भवे भवे अविहड रंग ॥ ५६ ॥ इति श्री आदिश्वर विनती ॥

॥ अथ श्री जिन प्रतिमा स्थापनाद्धि पंचासिका ॥ दुहा ॥

लहिय दुहेलो मणुय भव, भव भंजन जगनाह । भो भवियण जिनवर नमो, हियडे धरी उछाह ॥ १ ॥ जिणवर सरिस न अवर सुर, जाणु छे जग कोय । कंकर किम सुरमणि समो, हिये विमासी जोय ॥२॥ रे जीवडा अंजाण, भूल म मत देखी वहु । प्राण जेम जिन आण, चित चिंतवी छंडि सहु ॥ ३ । नाम ठवण द्रव्य भावना, निक्षेपा छे चार । करी विचार चित आणवा, श्रुत अनुयोग दुवार ॥४॥ चउथे निक्षेपे भण्या, विजयवंत अरिहंत । इम तो सहुए सदहे; भवभंजन भगवंत ॥ ५ । आवश्यक वीयज्जयण, साधु श्रावक अधिकार । नाम जिणंद आराधना, लेज्यो चतुर विचार ॥६॥ त्रीयज्जण मुखपोतिका, उपर करी शिरफास । गुरुना पगनी थापना, आवे मन उल्लास ॥ ७ ॥ भाव विना नाम ठवण, द्रव्य न माने जेह । अनुयोग आगमे कह्या, मिथ्यादृष्टि तेह ॥ ८ ॥ ठवणा नारी भावस्युं, चिंतवी दुर्गति जाय । भावत नारी भावविणुं, तेह कहिसुँ फल थाय ॥ ९ ॥ हरिणगमेसि आराधियो,

सुलसा पडिमा संग । भावे तेहने फलदियो बोल्यो अष्टम अंग ॥ १० ॥ प्रतिमा मुद्गर पाणीनी., अज्जुन मालागार । आराधि भावे फली. अंतगडअंग मजार ॥ ११ ॥ जीवाभिगम उवंगे सुणी. बीजे वलि; उवंग, श्रुतकेवली बोल्यो वचन. पंचम छठे अंग ॥ १२ ॥ जिन प्रतिमा जिनवर भएयो. धूपतणों अधिकार । ठवणा थानके भावथयो, साधु वचन चितधार ॥ १३ ॥ द्रव्य त सव तामलितणु, वलि चंचा सुरवृंद । जाणि विराध्यो निर्दही, पुरिय ते इशानेंद्र ॥ १४ ॥ पंचमंग इम मानिये, जिनवर वचन विश्वास। शवहिलाणि किम हेलियो, इशानेंद्र विमास ॥ १५ ॥ चउ सठ सुर ठाकुर मली, आवे जिन निर्वाण । द्रव्य जिणंद आराधियो, जंबुपन्नत्ति वखाण ॥ १६ ॥ कोइ कहेशे स्थिति सुरतणी, कल्याणिक भगवंत । उछव सहित सही करे, काल अनादि अनंत ॥ १७ ॥ सांभलि अंगे पंचमे, आराध्यो ससनेह । वरुण द्रव सावय सुरे, मन माणिस संदेह ॥ १८ ॥ अष्टम अंग विचारतां, समकित कारण जाण । द्रव्य साधु आराधना. गजसुकुमाल प्रमाण ॥ १९ ॥ अनुयोगे इम भाखियो. द्रव्यत श्रुत ए होय । जिन आगम पुस्तक लिख्या. ते वांचे सहु कोय ॥ २० ॥ वायण फल उत्तर ज्जयणा; द्रव्ये आवे भाव; द्रव्य थकी ते किम थयो

जेम कुमार थिराउ ॥ २१ ॥ तात पुरोहित मुनिप्रतें; बोल्यो तप व्याघात । गृहावासी ते कुमार छे, उत्तराध्ययन विख्यात ॥२२॥ सोहम गणधर पंचमो, कहे दशा सुप्रधान । देवलोक थकी चव्या; वीर श्रमण भगवान ॥ २३ ॥ अविरत सुरकिम तिथयर; जोइ विमासी जाण । गुरुआने दिसे थयो; द्रव्ये भाव प्रमाण ॥२४॥ अणुयोगे भगवइ सुण्यो, सिद्ध कहे परमाण । विण भाख्यां ते किम कहे; पुण इह द्रव्य प्रमाण ॥ २५ ॥ भावे तारे भाव जिण; नाम ठवण नही कांय हिये विमासी जोवतां; लोचन निर्मल थाय ॥ २६ ॥ जिणवर कांइ न तारिया, मंखलिपुत्र जमालि । कहो काज किणिपरे सरे, मननी श्रद्धा टालि ॥ २७ ॥ जिणवर देखी विहरता; जिह मन आवे द्वेष । कोडि दीप जीम अंधने, तेहनो किसु विशेष ॥ २८ ॥ नाम ठवण जिणवर भणे ;जसु मन राग न होय । मिथ्याती वा केवली, निश्चे ते जन जोय ॥ २९ ॥ आवश्यकने अध्ययने; पंचम दशमे अंग । सप्तम अंगे जाण वली; उववाईये उवंग ॥ ३० ॥ प्रतिमा श्री जिनवरतणी; वंदनीक इण ठाम । बोली श्रावक साधुने; बहु फल लीधे नाम ॥ ३१ ॥ जीवाभिगमे नदिसर, अधिकारे चेई जेह । पंच मंगे बोल्या यति; चारण वंदे तेह ॥ ३२ ॥ वलिय विशेषे जाणजो; थुइ मंगल-छे एक ।

जिन प्रतिमा आगल करे; श्रावक साधु अनेक ॥ ३३ ॥ घण जण जिण उदेसी; दीसे रहित दूर । कीधो राजा कोणिके; नित उगमते सूर ॥ ३४ ॥ अध्ययने उगणीशमे; थुइ मंगल फल जेह । जिन जिन प्रतिमा सारीखो; शक्रस्तव गिणि तेह ॥३५॥ कोइ वली माने नहीं, ते देखाडो भेद । अणजाणयो कहेतां सही, होय समकित विछेद ॥ ३६ ॥ सम्यक् दृष्टि देवता, आसातन टालंत । श्री जिनप्रतिमा दाढनी, आण एम पालंत ॥ ३७ ॥ पंचम अंगे दाखीओ, वली तिहां चमरिंद । देखी सुरपति चिंतवे, मुनि जिन प्रतिमा जिणंद ॥ ३८ ॥ त्रिहुँपद ठामे वेज पद, आसातन अधिकार । तेय कहो कारण किस्यु, चित्तसु चतुर विचार ॥ ३९ ॥ अरिहंत अरिहंत चेइया, बिडु आसातन एक । संबंधे मांहे मली, इणपरो आण विवेक, ॥ ४० ॥ जसु संबंधी विराधीयु, धणी विराध्युँ होय । पिंड विराधन गुरुतणी, दशा श्रुत वली जोय ॥ ४१ ॥ इम जाणी आदर करी, जिनप्रतिमा आराधी । शंसय टालि सूत्र वली, आराधी सुख साधि ॥ ४२ ॥ जसु भय भांगा ओथपे, प्रतिमा तेहिज धर्म । अभिनिवेश मानें सदा; मूढ न जाणे मर्म ॥ ४३ ॥ वणदव नाठी पोयणी; पेठी सलिस मजार । तिहां हिम दाधि कर्मवश; न्याय एह संभार ॥ ४४ ॥ विधि–

वादें ज़िणवर तणे; हिंसा नदी उतार । निद्रानिशि त्रिजे प्रहर; साधुतणे अधिकार ॥ ४५ ॥ अल्पवृष्टि यति गोचरी; मृषा वचन धर्मकाज । उपदेशे इम पन्नवे; कुगुरु वेपे जिनराज ॥ ५६ ॥ आगम अरथ अजाणता: उवट घाले लोक । गीतारथ डाह्यातणु; करे मान मन फोक ॥ ४८ ॥ वितराग हिंसा करे; विधि उपदेशे प्रमाद । मृषा बोलावे लाभ गणि; तो केहो विषवाद ॥ ४८ ॥ जैन शैव एक ज थया; सघलें साचो धर्म । सत्य मृषा अंतर किस्यो; वंध मोक्ष स्यो मर्म ॥ ४६ ॥ (श्री) पार्श्वचंद्रसूरि विनवे; मस्तक धरी जिन आण । एक चित्तें उत्तम सुणो; श्री जिन वचन प्रमाण ॥ ५० ॥ दिनकर पश्चिम उगमें; महीयल आवे सिद्ध । होय अलोकिक पद लोकनें; छास थकी जो दूध ॥ ५१ ॥ तो जिन वचने सद्दहुँ; हिंसा मृषा प्रमाद । मूढपणे जे को कहे; तेहस्यु किस्यो विवाद ॥ ५२ ॥ निश्चल सूत्र परंपरा; वरस सहस एकवीश । वीर थकी तिणें जे रहे; नमु ते गुरु निशि दिस ॥ ५३ ॥

॥ इति श्री जिन प्रतिमा स्थापनाद्वि पंचासिक समाप्त ॥

गुरु विरहम्मियठवणा; गुरुवएसोवदंसणथंच ॥
जिण विरहन्मियजिणाविंब; सेवणामंतणंसहलं ।१।

॥ अथ रूपकमाला प्रारंभः ॥

(राग सूहव)

आपें आप संभालियें, रे जीवडा विचार। आज्ञा जिननी पालियें, शिवसुखनी दातार। आतमा सार शिख सुणे, परिहरि नारी संग। प्राणिया सार शिख सुणे, मन धरि शीलसु'रंग। जीवडा सार शिख सुणे, ए आंकणी ॥ १ ॥ नारि रूपें मांडियो, जग भीतर ए पास। बुद्धिहिण तिहां पडि मरे, न पडे बुद्धि निवास ॥ आ० २ ॥ न अरि कोइ एहवो नारि सरस संसार। राति घालें दुर्गतें, विरती कारागार ॥ आ० ॥ ३ ॥ विण दोरी नर बंधणु', नाम विना ए रोग। योग विणासे युक्तिशु', कांच न सीजे भोग ॥ आ० ४ ॥ मनने वंछित पहुँचते, माने नरनी आण। उणे तिणि त्रिघटे सही, पाडे संशय प्राण ॥ आ० ५ ॥ सनसत्रासि जिम वारणा, आप कलंके नार। परदुख काजें मक्षिका, मरे पडी आहार ॥ आ० ६ ॥ जननी पिता कुल जातनी, लाज न गणे लगार। विरती महिला गुण दहे, छार करे उपकार ॥ आ० ७ ॥ पुत्र विणाश्यो चुलणीयें, सूरीकंता कंत। महाशतक घरणी कर्यो, सउकी वारनो अंत ॥ आ० ८ ॥ केकेइ सीता छली,

रावण चरण वेसासि । चालवी रमत पाठवी, एकलड़ी वन-वासि ॥ आ० ९ ॥ सुभट सुदंशण शेठमें, अभया दीधें कलंक । नारि वचनें शुली ठव्यो, नरपति विमति निशंक । आ० १० ॥ ततखिण सिंहासन कयुं, आवी सुरवर कोड । भक्तिअें गुण संथव करे, पाय नमे करजोड ॥ आ० ११ ॥ सूर्पणखा सीता हसी, दूख्या लखमण राम । खरदूखण आव्या चढी, कीधुं तिहांसंग्राम ॥ आ० १२ ॥ वंकचूल त्त्री गयो, नृप घर चोरि काज । राणि रीसाणी विनवे, भोगय भोग म भाज ॥ आ० १३ ॥ शीलवंत वलतुं भणे, इम किम कीजे माइ । विघटि विकट विडालज्युं, कपट करी चुंबाइ ॥ आ० १४ ॥ जागी धाया पाहरु, राजा संभली मूल, चरवारी आदर करी, पहिराव्युं वंकचूल ॥ आ० १५ ॥ स्वारथ हीणे जाणि करी, जणणी जागतें नाहि । वहुअें सासु दूहवी जोवो अग्निने दाहि ॥ आ० १६ ॥ एकण उणी पांचसें, सौक्यतणी जे माय । ते विणसावी राजवल, स्वारथें किश्युं न थाय ॥ आ० १७ ॥ नारि विरती इम करे, जाणो चतुर-सुजांण । पाप थकी बीहे नहीं, जब ते छंडे ठाण ॥ आ० १८ ॥ नारि वचनें जे वीसस्या, ते नर बहु परिधिठ । रमणी शंकर नाचव्यो, त्रिभूवन जनें ते दीठ ॥ आ० १९ ॥ देखी

दूषण नारिना, जे नर थया विरत । धन नृप परदेशी हुवो, अगडदत्त वडचित्त ॥ आ० २० ॥ खंडित धृत चिंदु मिसें, रे मंडकर्मा रोय । के के रमणी न खंडिया ? मुंज मालवपति जोय ॥ आ० २१॥ राग अनादि अखंडते, दूषण छंडे जेय । चेत्या भीती भाटकी, पडया नहीं गिणि तेय ॥ आ० २२॥ सहज संयेगें जागिया, वैरागिया उदार जंबु सुत सकडालनो, मेघ सुबाहु कुमार ॥ आ० २३ ॥ ए देखाडी वानगी, हुवा न लहुपार । धन धन धन रमणी तजी । पाल्युं व्रत असिधार ॥ आ० २४ ॥ सोवन गुलिका दोवइ, रुकमिणी प्रमुख जे नार । कारण कंदल बोलिया, दशमा अंग मजार ॥ आ० २५ ॥ प्रमदा मूल संसारनुं, जाणी प्रमोद म मंढि । प्रणमुं ते जे सुखी थया, एहनी संगति छंडि ॥ आ० २६ ॥ गणिकपुर रलियामणुं, आदिश्वर जिनराय । श्री पार्श्वचंद्रसूरि विनवे, प्रभु करि एह पसाय ॥ आ० २७ ॥ होज्यो नारि निराशमय, परमानंद उल्हास । भव भव मुज मन भ्रमरनें, तुम्ह पय कमल निवास ॥ आ० २८ ॥ संवत पन्नर छयासीएँ, कीधी रूप-कमाल । उत्तम ते कंठे धरे; जस मन शील रसाल ॥ आ० २९ ॥

॥ इति नारीसंग निषेधक रूपकमाल समाप्त ॥

॥ अथ श्री ब्रह्मचर्य दश समाधिस्थान प्रारंभः ॥

दोहा–श्री नेमिश्वर पय नमी; पामी सुगुरु पसाय । मन उल्लासें संथुणु, परम ब्रह्मव्रतराय ॥ १ ॥ ब्रह्मचर्य ना गुण घणा, रयण जेम जगसार । सुरगुरु सो जीभें भणे, तोपण न लहे पार ॥२॥ तरुणपणे जे तारुत्रा; ते विरला संसार । सूता नारि नदी जलें; ते केम पोहोचे पार ॥ ३ ॥ शिवगामी तेहज भवें, स्वामी मल्लि नेम । बंभचेर मन थिर करी; मुक्ति पोहता खेम ॥ ४ ॥ जीव विमासी जोय तु; जीवन खिण खिण जाय । अंजलिना जलनी परें; तिम कर जिम थिर थाय ॥५॥ गुरु आरामी जोइयो, जिन प्रवचन आराम । मन थाणे तरु रोपीयो; बंभचेर अभिराम ॥ ६ ॥ श्रद्धा सारणी जल विमल, वहें तिहां सुविवेक सुदृढ मूल समकित भणु; गुणगण पत्र अनेक ॥ ७ ॥ पंचमहाव्रत विडमसम; तत्वविगती तसु खंध । तेहनी शाखा भावना; मोरज शुभनो बंध ॥ ८ ॥ उत्तम सुर-सुख तसु कुसुम; मुक्ति फल अतिचंग । महावृक्ष ते राखवा; हियडे अविहड रंग ॥ ९ ॥

ढाल– उत्तराध्ययन बोल्या सोलमेजी, बंभसमाही ठाण । कीधा उत्तम तरुवर पाखलेजी; ए दश वाड समाण ॥ १० ॥ भवियण भावें निरतो पालीयेंजी; व्रतमांहे गरुओ

थंभ । दंभ कदाग्रह दूरे परिहरिजी, नरभव लहिय दुलंभ ।
॥ भवियण० ११ ॥ आंकणी । स्त्रीपशुपडक वसति जिण
वसेजी, तिहां न करेवो वास । तेहनी संगति भलिय न
जाणियेजी, व्रतनो करे विणास ॥ भवियण० १२ ॥ विकट
विडाली संगते जे रमेजी, कुक्कड मूषग मोर । विससीया ते
वरांसी आजी, पामे दुःख अघोर ॥ भवियण० १३ ॥ पिगले
रमणी अगनी संगतेंजी, मानव मन जतु कुंभ । न चले
गयवर सूंढें चालव्याजी, विरला ते जग थंभ । भवियण०
१४ ॥ विकल विवेकें पशुय ते बापडाजी, निलज करंता केलि,
खगचर देखी लखमणा महासतीजी, रुलिय घणुं मनमेलि
॥ भवियण० १५ ॥ अतिचित चंचल कायर पडंगाजी, वरते
त्रीजे वेद । तज तज संगति मति रति तेहनेजी, म पडीश
भव दुःख खेद ॥ भवियण० १६ ॥ इम जाणी आणी मति
मनेजी, राखो प्रथम ए वाडि । रखे भंजे भोला पेंसतीजी,
प्राणि ए प्रमदा धाडि ॥ भवियण० १७ ॥

ढाल–चोपाइ– हवे कहियें छे बीजुं ठाण, रूप जाति
कुल देश वखाण । रमणितणी कथा जे कहे, तेहनुं ब्रह्मव्रत
किम रहे ॥ १८ ॥ वेणी भुयंगम गतियें मराल, नयण हिरणाइ
लिंक विशाल । वदन चंद्रवश्यो कुंभ उरोज, करयुग चरणे

जीत सरोज ॥ १६ ॥ इणिपरें रमणी रूप वर्णवें, मुग्ध लोकनां मन भोलवे । सांभलि आणि विषय मन रंग, पास पडे जिम दीप पतंग ॥ २० ॥ अशुचि मूत्र मलनो कोथलो, कूड कलह कज्जल कुंपलो । बारह श्रोत्र निरतर वहे, चर्म दीवडी ओपम लहें ॥ २१ ॥ क्षणभंगुर उदारिक देह, सप्त धातुमय आमय गेह । चक्रि चोथो आणी हीयें, रूप अनित्यपणुं जोइयें ॥ २२ ॥ इथि कथा विकथा माहि गणी, त्रीजे अंगे जिनवर भणी । सप्तम अंगे अनरथ दंड, तिणें कहेतां होय पाप प्रचंड ॥ २३ ॥ अथवा नारि जिहां एकलो, तेहनी संगति न हुवे भली । धर्मकथा पुण तासु न भाख, बीजी वाडि इम निश्चल राख ॥ २४ ॥ त्रीजी वाडि हवे चित्त विचार, नारि सहित वेसवुं निवार । एक आसणें दीपे काम, चोथा व्रतनो भाजे ठाम ॥ २५ ॥ इम वेसतां होय अति आसंग, आसंगे फरसाए अंग । अंग फरस वश विषय विकार, जोवो श्री संभूत अणगार ॥ २६ ॥ इणि कारण नियाणो कर्यो, बारम चक्रवर्ति अवतर्यो । चित्रें ते प्रति बोध्यो घणुं, लेश न आव्यु विरतिहिं तणुं ॥ २७ ॥ इशो जाणि एक आसन वारि, जननी बहेन जे पण होय नारि । तेहज बेसी उठी जिहां, मुहूरत एक न कल्पें तिहां । स्त्रीनां इंद्रिय अंग उपंग, मनहर

निरखि माण मनरंग । चित्र लिखित जे होय पूतली, न जोइएं भाखे केवली ॥ २९ ॥ दशवैकालिक प्रवचन मांह, एह वचन जाणी आराह । छेदें चक्षु कुशील कहाय, लखभव रुलियो रूप्पीराय ॥ ३० ॥ चोथी वाडि जाणी ए पाल, हवे पंचमी हिये संभाल । परिचय भींत तणे आंतरे, निशि निवास नारी जिहां करे ॥ ३१ ॥ सुरत केलि रस विहग निनाद, कुंजे गावे मधुरे साद । रोवे दाधी दुःख दव जाल विलवे विरह करावी वाल ॥ ३२ ॥ वात करे मुख हडहड हसे, जेथी विषय राग उल्लसे । सीता हांसीए अनरथ जोय रावण वध जाणे सहु कोय ॥ ३३ ॥ ब्रह्मचारी ए नहुं संभले, चित्त चले मति धिरज टले । वसे नही थानक एहवे, छठो ठाणो सांभल हवे ॥ ३४ ॥

-ढाल–पामिय योवन, युवति संयोग, रूद्धि सामग्रिय सवि लहिए । पंच इंद्रिय वसे; भोगव्या भोग; पहेलाना चिंतविए नहीए । चिंतव्या दुर्गति, दाएक एह, शल्य विष विषहर एम नहीं ए । तेहथी अधिक ए; म कर संदेह, एहवी वात आगामे कहिये ॥ ३५ ॥ श्रेष्टि माकंदिय; पुत्र जीण रक्षीय; यक्ष शिक्षा सहु विसरीए । देवी मुख सन्मुख; तेणे जे निरख्युं, पुर्व संगति मति चित्त धरीए । तिरक करवालशुं,

छिद्रशत खंडित, जलधि जल दश दिशि वलि कंयु ए। जो ए जिन पालित, थयो जे पंडित; सेलगे वेगे तस उधरयो ए ॥ ३६ ॥ सातमी वाडिनो कहुँ स्वरूप, ब्रह्म आचार विचारीए ए। कवल उपाडतां जरे घृत विंदु; तेय आहार निवारिए ए। चक्रधर रसवति रसिकभुदेव । काम सरपसर विडंवियोए । इम गिणी टालीयें सरस रस सेव । रसनेंद्रिय वल जीपवोए ॥ ३७ ॥ पुरुषने कवल वत्रीश आहार; अठ ने वीश नारी- तणु ए। पडक कवल चोवीश ए मान; अधिक आहार दूषण घणु ए। ब्रह्मव्रतधारीने; उण गुण जाणीयें । जुवो कंडरीक गयो सातमीए। तुछ भोजन करी सूत्र हियडे धरी। राखिये वाड इम आठमीए ॥ ३८ ॥ नवमी परहरे अंग सिंगार; काम दीपन जिणवर भण्यु ए। कंकण मुँद्रडी कुंडल हार; स्नान विलेपन अवगण्यु ए। थइय सुमालिया अंग वाउ सिया; दूसिया दोषे ते साहुणीए। जाणी बहु दूषण भूषण टालीयें । पालिये आण जिणवरतणीए ॥ ३९ ॥ शब्द रस रूप वलि गंधने स्पर्श विषयए पांचे छंडिये ए। एक एक मोकले जाणि जण एकले। पंच ए वंचिय खंडियें ए; शब्दे मृग रसे जुष रूप पतंग। गंधे अलि स्पर्श गज गंजीये ए। वाडि नहूँ भंजिये दशमि मन रंग। दंसणे तासु

जग रंजियें ए ॥ ४० ॥

कलश-इम बंभ तरु गिणि वाड सम जिण । दशय थानक सद्दह्या । गुण तासु भाख्या सुदृढ राख्या, छिद्र पडता निग्रह्या । ते तहे निर्मल मुक्तिमय फल अचल थानके वासिया जयो ब्रह्मचारी सुकृत धारी, पार्श्व चंद्र सूरिंदे नमंसिया ।

॥ इति श्री ब्रह्मचर्य दश समाधि स्थान कुलक संपूर्ण ॥

॥ श्री गौतमस्वामनो लघु रास ॥

॥ श्री वसुभूइ पुत्तो, माया पुहकीय कुच्छि सम्भूओ । गणधार इंदभूइ गोयम गुत्तो सुहंदिसओ ॥ १ ॥ रयण विहाणें थयो प्रभात, गौतम समरूं जग विख्यात । ऋद्धि वृद्धि जसु महिमा घणी, पय सेवे धरणिनाधणी ॥ २ ॥ गौतम स्वामी लब्धि निधान; गौतम स्वामी नवे निधान, सुरगो तरु मणि गौतम नाम, जेवो नाम तेवो परिणाम ॥ ३ ॥ गुव्वर गाम जन्मनो ठाम; गौतम तणा करें गुण ग्राम । सहुअलोय वाला पय लगे, भट्ट चट्ट वहूला ओलगे ॥ ४ ॥ गौतम गिरुओ गुण भंडार, कला वहोत्तर पाम्यो पार, चउदह विद्या जिण अभ्यासी; जागत ज्योत जिसि मनवसि ॥ ५ ॥ वीरजिण चउदह सहस शीश, तेह मांहि पहिलो सुजगीश । तसु पय

वंदु नाम्रु शीश, आश फलें मननी निश दीस ॥६॥ गीतारथ पदवीना धणी, सूरीश्वर जसु महिमा घणी । गौतम मंत्र सदा समरंत, ततखिण विद्या सहु फुरंत ॥७॥ तनु प्रणमुं वचनें संथवुं, एक चित चित्ते चिंतवुं । श्री गौतम गणधरनो नाम, महिमा मोटि गुणमणि धाम ॥ ८ ॥ उठंतां बेठंता सही, पंथ चालतां हियडे ग्रहो । गौतम गौतम कहेंतां मुखे, सहुय कार्य ते सीजे सुखे ॥ ९ ॥ गौतम नामें आरत टले, गौतम नामे वंछित फलें । गौतम नामें नावे रोग, गौतम नामें पावे भोग ॥ १० ॥ गौतम नामें नासे व्याध; गौतम नामें परम समाध । गौतम नामें दुर्जन दूर, गौतम नामें हरख भरपूर ॥ ११ ॥ गौतम नामें हय गय चार, गौतम नामें सुलख्खण नार । गौतम नामें सुगुण सुपुत्र, गौतम नामें सहुये मित्र ॥ १२ ॥ गौतम नामें उच्छव होय, गौतम नामें न पराभव कोय । गौतम नामें मंगल तूर, गौतम नामें कुर कपूर ॥ १३ ॥ गौतम नामें जय संग्राम, गौतम नामें तुठे स्वाम । गौतम नामें विनय विवेक, सौतम नामें लाभ अनेक ॥ १४ ॥ गौतम नामें न छिपें पाप, गौतम नामें टलें संताप । गौतम नामें खपे सवि कर्म, गौतम नामें होय शिव शर्म्म ॥ १५ ॥ घणुं घणुं हवे कहियें किश्युं, थोडे तुमे जाणजो इश्युं । गौतम समरंतां

जागियें, जे लहिये ते ते मागियें ॥ १६ ॥

॥ काव्य ॥ इत्थं गौतम संस्तुतिः सुविहिता चंद्रेण पार्श्वादिना, भक्ति स्फीत मुदालयन गणभृत्पादांबुरुह् चंचुना, ये तस्या स्मरणं प्रभात समये कुर्वंति चंगात्मका, स्तेनित्यंमनसः समीहित फलं सद्योलभंते तरां ॥ १७ ॥

॥ इति गौतम लघुरास ॥

॥ अथ श्रीआराधना प्रारंभः ॥

तिथ्थनाथ जिनवर नमुं, त्रिभूवन तिलक समान, आसन उपकारी हुवा, महावीर भगवान ॥ १ ॥ चेत चतुर लई जीवडा, श्री जिन वचने जाग; मोहतणी मति परि हरी, सूधे मारग लाग, चेत चतुर लई जीवडा ॥ चेत० २ ॥ (ए आंकणी) गौतम गणधर तेहना, जगगुरु जग आधार; तसु प्रणाम त्रिविधें करुं, जिम पामुं भवपार ॥ चेत० ३ ॥ सह-गुरु पय प्रणामी करी, कहिस्युं जंकिंपि विचार; आतम सुखने कारणे; आराधना प्रकार ॥ चेत० ४ ॥ त्रीजे अंगे जिनवर भएयो, चीयज्झयणे त्तियठांणः त्रिहुं प्रकारें आराधना, चारित्र दंशण नाण ॥ चेत० ५ ॥ तिण विणु कीधे प्राणियो, भमियो वार अनंत; चउ गति मांहें कर्म वशें, नहीं लाधो दुख

अंत ॥ चेत० ६ ॥ भाग्य वशें हिवें गुरु मिल्या; तिणे देखाडयुँ मर्म; भव जल तरवा बेडली, देव गुरु अने धर्म्म ॥चेत० ७॥ देव एक मुझ जिणवर गुरु ते सुगुरु विचार, जिन प्रवचन साचो कहे; गणधरने अनुसार ॥ चेत० ८ ॥ पढम अंगे जिणवर कह्यो, तृतियभक्भयणें धर्म्म, त्रिण तत्व इम सद्दही, पाली टाले कर्म्म ॥ चेत० ६ ॥ जींव न कोई तुझ सगो, शत्रु न कोई संसार, राग दोष अलगा करी, पहुँचीजे भवपार ॥ चेत०. १० ॥ कर्म वशें संगति मलि, तरु पंखी अहिनाण; स्वारथ बांध्यो सेवियें, छोडी जाय निदान ॥ चेत० ११ ॥ अरिहंत सिद्ध सुसाधुनुं, केवली भाख्यो; धर्म्मं; च्यार शरण भव भव हज्यो; जेहथी लहुँ शिवशर्म ॥ चेत० १२ ॥ कर्मभूमि पनरह लगें, अरिहंत केवली साधु; तेहनी साथे खमावियें; सवि हुँ जीव अपराध ॥ चेत० १३ ॥ छए काय विस्तर भणी, पन्नवणा भगवंतः अंत काले कीम सांभरे; तिणे संखेपे खमंत ॥ चेत० १४ ॥ पुढवी सूक्षम वादर; पज्जत्तापज्जत्त; इणिपरे सघला जाणवा, खामुं ते एक चित्त ॥ चेत० १५ ॥ लोहा-दिक शस्त्रे करी; अरथें अनरथें जेह; धरणि विराधन जे हुई; मनश्युँ हर्ष धरेह ॥ चेत० १६ ॥ पाहाण माटी फिटकडी; हिंगुल लूण हरियाल ईत्यादिक त्रिविधे करी, खामुं तेय

त्रिकाल। १७ ॥ पाणी भोयण पीवणों, धोवण तनु ने न्हाण भेल संभेला जे कर्या, निंदु ते सविठाण ॥ चेत० १८ ॥ दिवे चूल्हे संधुषणो, सिगडी सुखने हेत, ईत्यादिक काजे गणी, आलोवु ते चित्त ॥ चेत० १९ ॥ परवंदन पूजा भणि, ताल घंट चमरादि, धमि चई भोयणी फुंकवे, निंदु वायु अप्रमादि ॥ चेत० २० ॥ विहुँ भेदे वणसई भणी; साधारण प्रत्येक; हणो हणावी अनुमती; नाव्यो चित्त विवेक ॥ चेत० २१ ॥ खांडी पीसी वावरी छेदी जीव्हा स्वाद; खार भेद ते सुकवो; नाण्यो मन विषवाद ॥ चेत० २२ ॥ आतम सरीखो वरणावी, तिथ्थनाह पढमंग, सांभलि तासु विराधना, आलोवो मनरंग ॥चेत० २३॥ बेइंद्री प्रमुखावली; आरंभिए त्रसकाय पंच प्रमादे दूहवी, खामुं ते जिनराय ॥ चेत० २४ ॥ प्राण हणि मुखें भाखियो, अलीय लीओ अदत्त, मैथुन सेव्यो मन वशें; निज पर तियरशु रत्त ॥ चेत० २५ ॥ परिग्रह बहु एकठो कर्यो, विवरोवि छये काय, क्रोध मान माया घणी, लोभ कियो मन भाय ॥ चेत० २६ ॥ राग दोष कलह कर्या अभख्खाण पररसः, परचाडी अरति रति, पर अपवाद विरस्स ॥ चेत० २७ ॥ माया करी कूडो लव्यो; मिथ्यादरशणसल्ल पाप अढार जे आचर्या, आलोवुं निसल्ल ॥ चेत० २८ ॥

कुगुरु नम्यो गुरु भोलव्ये, कुदेव थाप्यो करि देव, कुधर्म कर्यो धर्म तोलिये, दशविध मिथ्या सेव ।।चेत० २६।।ढाल।। अधर्मे धर्म सन्या करी, अभाग्य वशें ते आदरी, परिहरि श्रुत बुद्धिने वेगलीए, इणपरे धर्म अधर्म वली, मार्गे उन्मार्गे मनि रली, उन्मार्गे मार्गे थइ मति भंभलीए ।। ३० ।। अजीवे जीवते जाणिए, जीव अजीव वखाणीए, प्राणिय इम किम जुदो पामीएए, असाधु साधु मति वंदिय, साधु असाधुइ निंदिय, छिंदीय संशय श्रुति सुणि नामीएए।। ३१ ।। नवि मूक्या संसारथी, केवल ज्ञान रती नथी, दु खथी छुटा इम मुख माखिएए सकल करमनो क्षय करी, पुहता जे शिव पद पुरी, भ्रम धरी चउगति तिहने राखीएए ।। ३२ ।। ठाणंगें इम सद्द्यो, दश विध मिथ्या गुरु कह्यो, हिवे लह्यो समकित तिणे ते परिहरुंए, पाप अढारह सेवि्य, त्रिविध त्रिविध ते निषेधिय, छेदीय आठ करम भवजल तरुंए ३३ ।। श्रावक भावे भावणा, कहिये त्यजीश्युं धन सयण, शुद्धलयण संजम ग्रहि हुँ सेविश्युंए पंच महाव्रत उचरी, निरति करुणा मन धरी, अणुंसरी गुरु पय मूलें विहरस्युंए ।। ३४ ।। संलेपन पहिलुं करी, असनादिक छेह परिहरी उस्सरी संलेहणना दोषथीए, इणिपरे मनोरथ करे, अवसर आव्ये आदरे, गुरुमुखें चित्त

धर्म समाधिथीए ॥ ३५ ॥ इणपरे हुइ आराधना, अहनिशि जे वली साधना, ते धना पंडित मरणें जे मरेए, बालमरण बहुपरे करी, जीवडले चिंहू गति फिरो, मन धरी ममता तिणे किम भवतरेए ॥ ३६ ॥ पुत्र कलत्र धन मन रम्यो, आलें मानव भव गम्यो, नहुँ दम्यो तप संजम ए प्राणियोए, सुगुरु वचन श्रवणे सुणी, मूढपणे ते अवगणी, विणु धणी दुर्गती जाए ताणियोए ॥ ३७ ॥ ते दुख संभली उभगो, जिनवर वचने चित्त लगो, नहुँ लगो आरत ध्यामें मन रतीए, रौद्र ध्यान नहुँ ध्याइओं, धम्मं युक्त आराधीओं, साधीए शिवरमणी इम संततीए ॥ ३८ ॥ अणशण करी पंडित मरे, सल्ल हीयाथी ऊधरे ते तरे भवजल शुभभावे थयाए, कम्मबीज बाली करी, भव अंकूर निरा करी, मन ठरी सुख विलसे सिद्धि गयाए ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ विहरमाण जयदीपता, श्रीपार्श्व चंद्रसूरिराय कोधी निशि आराधना, समरसिंव मन भाय ॥ ४० ॥ साधु श्रवण जे मन धरे, श्रावक श्राविका एह, अनुक्रमें ते शिवगति लहे; ईण वचने न संदेह ॥ ४१ ॥

॥ इति श्री आराधना समास ॥

॥ अथ श्राद्ध मनोरथमाला प्रारंभः ॥

श्रीरजिणेसर पय प्रणमेसुं, नाम मंत्र गुरुनो समरेसुं, त्रिणि मनोरथ श्रावक तणा, कहिस्युं हीयडे धरि धारणा ॥ १ ॥ अध्ययन त्रीजे श्रीठाणांग, ते बोल्या जिणवरें ए प्रसंग, पुरा पुन्यतणे ए उदय, पुन्यवंतने आवे हृदय ॥ २ ॥ वली किवारें जईने फलें, तो फिरी सोवन सौरभि मिले, तिण कारण संभली गुरुमुखें । तसु परमारथ लहीये सुखें ॥ ३ ॥ बीयट्ठयणे बोल्या बे ठाण, न ओलखे जा तेय सुजाण, तानहु धर्म सुणेवालहें, केवलि भापित जिन इम कहे ॥४॥ एवमादि छे बोल इग्यार, केवलि कह्यो बोधि गुण सार, पव्बज्जा तप संजम बंभ, संवर समकित तणो अवठंभ ॥ ५ ॥ मई सूय ओहिनाण मणनाण, केवल केवलि भापित ठाण, इणि परे बोल्या बोल इग्यार, पामे नहीं भमें संसार ॥६॥ केहा बोल्या ते बे ठाण, बहुला दूषण तणा निदाण, एक परिग्रह बीजो आरंभ, हीयडे धारो टाली दंभ ॥ ७ ॥ एह कह्या किणि परे ओलखे, किम लहीए गुरु भाषित पखे, अनरथ कारण दुरगति मूल छे पडिकूल म गण अणुकूल ॥ ८ ॥ एह वशे जीव बहु भव भमे, इम जाणे ते शिवपुरि रमे, इण कारण टालो आरंभ

वली वली नरभव नथी सुलंभ ॥ ९ ॥ एहनो कारण परिग्रह जाण, ए बे बे अवगुणनी खाण, ए बे बे जिणें छंडया सहि मंड्यो धर्म रंग मति लहि ॥ १० ॥ ढाल ॥ दिवढी ॥ पामी सुगुरु पसायरे शेत्रुंजा धणी, ए देशी । सांभली इम सुविचार, भवियण भावेहि, पूरो संजम आदरे ए । करी परिग्रह परिहार, करम खपावीय, लहि केवल शिवसिरि वरेए, केई न शके पाल, सर्वतसंवर, व्रत धारे समकित धणीए, आवश्यक बिहु काल, ते हुए श्रावक, मन भावना भावे घणीए ॥ ११ ॥ जसु तन गुण एकवीश, सहजें दीपए, छीपें मिथ्या मति नहिए, प्रवचन धरे जगीश, ए परमारथ, अवर असार सहु सहीए, खोभवि न शके कोई, सुर गण निग्रंथ, प्रवचन थी दृढता इसीए, कामदेव सम होय, तेहना गुण नीय, वर्णवणा करीए किसं ए ॥१२॥ ढाल राग मेवाडो ॥ श्रमणोपासक पासक सारना, त्रण मनोरथ एह, करतां करे ते बहुलि निर्जरा, पामे भवदुह छेह, श्रमणो, (ध्रुपद) ॥ १३ ॥ धण कण करसण मंदिर मालिया, रूप सोवन भंडार, कूविय दुपय पशु जाति छे घणा, इम ए नवय प्रकार ॥ १४ ॥ श्रम० ॥ प्रथम मनोरथ एह, करतो करे ते बहुलि निर्जरा, पामे भव दुह छेह, श्रम० ॥ कइये प्रभुजी ते दिन आवस्ये, आणि समता ठाणि, जईये परिग्रह संग्रह छंडिश्युं

ममता कारण जाणि॥ अ० १५ परिग्रह मूं छे आरंभ छे, सहि भजना आरंभे थाय, परिग्रह छंडे आगमें इम भण्यूं, तिमें भव मूल कहाय, ॥ अ० १६ ॥ जालि मयालि महुणा ते धन भण्युं, परिग्रह आरंभ टालो. जेणें कर्युं संयम आदर्युं, ते प्रणमुं त्रिहुकालि ॥ १७ ॥ श्रमणो० बीजो मनोरथ एह; करतां पामे, श्रमणो; कहिये हुं मुनपद उपनो मही; दया निध तजिय आगार. धारयुं आणि मननि भावना, सम्य धर्मों अणगार ॥ अ० १८ ॥ पंच महाव्रत निरता पालिस्युं, करिस्युं उग्र विहार, गुरुकुल वासि पनरो अतिशय, पूजि पंच आचार ॥ अ० १९ ॥ सहिस्युं परिग्रह बीश बे आगला (२२); उवसग्गांनिहुं प्रकारि, करिस्युं मनाके काउस्सग धरतो, पूरव मुनि संभारि ॥ अ० २० ॥ सप्तनिये सपति निरखि गास्स्युं, वंच नागि नवगाडि, कर्म सगला दल कहिये चूरीस्युं, पूरिस्युं मननि रुहाटी ॥ अ० २१ ॥ गिरि समेते शत्रुंजयगिरि चढीः विपुलगिरि वैभार, धन धन अणसण गुण मने करी, जे पहुना भव पार ॥ २२ ॥ (श्रमणो त्रीजो मनोरथ एह, करत पामे) हुं पण करिये करिय संलेखणा; द्रव्यत भावत दोई; श्रद्धानी रें निरमल थाईस्युं, पाप पंक मल धोई ॥ अ० २३ ॥ पामी गगण वीजोई गिणी; त्रीजो भत्त पचखाण; आदरि आदरि ए त्रिहुं

माहिलो; पालिशूं जिननी आण ॥ श्र० २४ ॥ ते दिन कइये मुजने आवशे आराधि शुभ जाणि सहित समाधिऐं काल अवंछतुं; वसिश्युं परमपद ठाणि ॥ श्र० २५ ॥ इणि परे आगमें जिणवर भाखिया; श्रावकनें अधिकार;भवियण आगलें (श्री) पार्श्वचंद्र (सूरें) कह्या; तेह तणे अनुसार ॥ श्र० २६ ॥ दोहा त्रण मनोरथ इम करे; जे श्रावक सुविचार; जिम श्रावक तिम श्राविका; दुत्तर तरें संसार ॥ २७ ॥ इति श्री श्रवकना त्रण मनोरथ समाप्तः ॥

॥ श्रमण मनोरथ-माला प्रारंभ ॥

सुहगुरुपय प्रणमुं निसदीस; करजोडीने नामिय सीस; जासु पसाये निरमल नाण; लहिये मुक्तितणो अहिनाण ॥ १ ॥ ते गुरु भाखे प्रवचन शुद्ध; जाणे के भेल्यु साकर दूध, श्रवण पुटें पीतां सुख होय, एजामलि बीजो नहुँ कोय ॥ २ ॥ मांहण खत्री वैश्यज शूद्र, चार वर्ण ए भद्र अभद्र । करे सदा बहु विध आरंभ, नमूणें नरभव नथी सुलंभ ॥ २ ॥ परिग्रह विणु आरंभ न थाय, आरंभे छकाय हणाय, जीव हणंतां वयर विवृद्धि, इणिपरे कामभोगनी सिद्धि ॥ ४ ॥ तेह थकी सुखनी शीआस ? छूटे नहीं दुःखमय पास, काले प्राणि पामे मरण,

कामभोग घन थाय न शरण ॥ ५ ॥ सजन मिलि वाहिर लइ जाय, अगनी तनु छारहडो थाय, भोगवे जीव करम एकलो कीधो पाप न हुवे भलो ॥ ६ ॥ भोगकाजे म्हेली आथ, ते नहुँ चाले कांइ साथ, वेंहची सजन तासु धन खाय, दुःख विभागी कोय न थाय ॥ ७ ॥ माइ पिता वंधव वहुनारीं पुत्र सजन जे छे संसारी, दुर्गति पडतां न हुवे त्राण, कांइ न फुरे प्राणि विनाण ॥ ८ ॥ इणि परे ए संसार असार, दुखसागर जसु उपमा छार, इम जाणि ममता परिहरे, ते मानव भवसायर तरे १ ॥ ९ ॥ ते संभली मन धरे वैराग, छांडी सहु सज्जन धन राग, पंचमहाव्रत एक आदरे, शुद्ध पाली केवलसिरी वरे ॥ १० ॥ केई श्रुत साचुं सद्दहे, वहु संवेगज हियडेवहे, करे मनोरथ समरसिधणे, ते रागें उत्तम गुण तणे ॥ ११ ॥ ढाल-देशी आदिस्वरविनतीनी । कहियें संयम लेशुं, सुहगुरु संगमे, संग सयण धन परिहरीए । विधिश्रें विहार करिस्युं, निर्मल भाविय, गामागर नयरें फिरीए । पंच महव्वय भार, गिरीजिम दुद्धर, कहियें निरंतर धारिस्युं ए, वह मुस चोरीकार, मेहूण परिगह, राईभोयण वारस्युं ए ॥ १२ ॥ वहु गुण तणो निवास, दोष विणासण, शम सरवर जल झीलिस्युं ए । कहियें गुरुकुलवास, आदिल मुणिवर, सेव्यो हुं पण सेविस्युं ए ।

सारिण वारण सार, दीधीय चोयण, पडिचोयण सहिश्युँ घणाए ते दिवस हूश्ये किवार, शीखे चालीश्यु नित गुरु गीतारथ तणीए ॥ १३ ॥ रयणायर गुरुजाण, गुरुओ गंभीर, निरमल गुणरयणों भर्योए । धन धन गुरुनी वाणी, डोल्यो मुनिवर, मेघकुमरजिण ऊधर्योए । चेलणा श्रेणिक राय, साहुणि मुणि-गण, पेखी नियाणां जे कर्योए, टाल्या ते गुरुराये, कहिये वंदिश्यु । इस्सा सुगुरु भवजल तर्याए ॥ १४ ॥ अचपल अतुरित चाल, पग पग निरखतो, जुग प्रमाणधर शोधतोए । चालीशु इरिय विहारी, कहिये उत्तम, मानव इम प्रतिबोध-तोए ! ॥ मृदु वाणी निरवद्य, मधुर अकर्कस, प्राणघात जिहथी नहीए । प्रीति उपावे सद्य, त्रिभूवन जीवन हित कारण जिणवर कहीए ॥ १५ ॥ मिश्र मृषा परिहार, सर्व्वत संमत, आगम जामलि तोलिंश्यु ए । सत्य अने व्यवहार, सुमति सुनिरंतिय, कहिये भाषा बोलीशु ए ! । कुसुमें जिम मधुकार, भमतां घर घर, करीश्यु सूधी गोचरीए । लेश्यु उंछ आहार, कहिये दूषण, बीसविगुणवे (४२) परिहरीए ॥ १६ ॥ मंडली पंचेदोष, टाली साहम्मीय, संविभाग करी भुंजीश्यु ए । छंडी राग वली दोष, कहिये शम मन, मोह महाभड जीपीशुए ! । जीव जतन मूकेशु, द्रष्टीऐं निरखीय,

पुंजी उपधिपडि गाहीशुंए । समय ते सफल गणेशुं; जइये संयम, सायरभुजवल गाहस्युंए ॥ १७ ॥ पासवर्ण उचार, खेलसिंघाणय, जल्ल उपधितनु तेहवोए । चउपयार आहार, वलीय, अनेरडो, परिठवण उचित जेहवोए । दशगुणथंडिल जोइ, सुप्पडिलेहीय, सुपमज्जीय वली वली विहीए । तिम तिम जयणा होय; प्रवचन भाषित, कहियें परिठविस्युं सहीए ॥ १८ ॥ ढाल– आरति रौद्र निवारिय, समता रस जल ठारिय, सारिय गुपति सहित मन राखिस्युंए, कहिये भाषा संवरी, मौनालंबन आदरी, सुंदरि वचनगुपति चित्त आणिस्युंए । ॥ १९ । सहतो दुसह उवसग्ग, करतो निरतो काउसग्ग, उस्सग मार्गे गिरि जिमथिर हुँस्युंए । फलगजिमडोलेनहीं, काय हणि तो मुजसहो, निरवहो कहियें ते दिन आवस्येए । ॥ २० । छंडि विषय विष दूषण, वंछिसुनहियविभूषण, लहिषण वस्त्र मलिन कहियें पहिरस्युंए । ते पुण फाटा जीरण, कोइ न करे उदीरण, हिरणी निर्भय थइ इम विहरस्युंए । २१ ॥ प्रथम सामायक उच्चरी, छह काय रक्षा करी, आकरी किरीया कहियें पालिस्युंए । छहयमास थिति तिहतणी, उकोसियें प्रवचन भणी, मुखभणी छ जीवणी संभालिस्युंए ॥ २२ ॥ आवश्यक दशवेयाली, आठ पन्नर दिन तपपाली; मंडली सात चित्रें आराधिस्युंए ।

पामिय सुहगुरु संजोग; तेहनो तशुमुख अणुओग, संभोग साम्भिसुं साधिस्युं ए ॥ २३ । गुरु शाखे उवठावण, तप करी लेइय वायण, पावण श्रुतभणि कहिये थाइस्युं ए ! कहियें कालवाथाईय, वेरतिपाभाईय, राईय करी सज्झाय पठाविस्युं ए ! ॥ २४ । पढम सज्झाय विधेंकरी, वीजे ध्यान समाचरी, जागरी त्रीजे जामे जागीस्युं ए, चोथे भणण गुणण वली दिवस क्रिया करि मनरलीकेवली मारग कइयें लागस्युं ए ॥२५॥ अढार सहस शिलंगें, रथरूपें अति चगें, रंगीए कहियें धुरिधर धारिस्युं ए । दशविध साधुसमाचारी, निज धुइ परदूषणवारी, मणहारी निरति कहियें पालिस्युं ए ! ॥ २६ ॥ सहिस्युं परिसह वावीश, नव कल्पीश्रें मन सजगीश, घन दीस उग्र विहारें विहरस्युं ए । परपरिवाय विरतो, शत्रु मित्रसम चित्तो, तत्तो गृहियें संघ कहियें छंडीस्युं ए ! ।२७॥ आरामें उजाणिहिं सुन्नागार सुसाणिहिं, ठाणिहिं कहियें वसिस्युं अहनिशिए ! रमिस्युं धर्म आरामीश्रें, समकित तरु अभिरामीए, नामीए दम शिव फलि संवरसेए ॥ २८ । पढिय पुव्व पडिमावार, कहियें वहिस्युं सविचार, आचार आदर करीने आदरीए । गज सुकूमाल तणीपरें, प्राणज कोइ नर हरे, तिह ठरे मन प्रवृति अति माहरीए ॥ २९ ॥ दोहा, विकथा सहुए वारी करी

एक चित्ती सज्झाय; कहियें करीश्यु वणीगहणी, वेसी निरमल ठाय ॥ ३० । थिविरकल्पी हुं विहरतो, जिनकल्पी इम जाण, करीश्यु वन मृगचारिका, निपडिकम्ममति आणि ॥ ३१ ॥ ते दिन कहियें आवशे, एका की गिहथ्थ, गुरुप्रशादी जइयें थशे, साधीशुं निय परमथ्थ । ३२ ॥ कच्छपना परे गोपवी, इंद्रिय पचप्रपंच; अप्रतिबद्धो वायु जिम, छंडी छलबल वच ॥ ३३ । निरालंब आकाश जिम, जलहि जिम गंभीर, सौम्य शेप शशि तरणियपरे, मंदरगिरि जिम धीर ॥ ३४ ॥ दिनकर जिम तपी दीपतो, विहंग जेमभारंड; अप्रमत्त कहियें होश्युं, पामी धम अखंड ॥ ३५ ॥ दंशणनाण चरित्त तव, वीरियना आचार, निरतें निरता आचरिश्युं, कहियें निरताचार ॥ ३३ ॥ धन्य सुबाहु मुणिंदवर, धन्य धन्य अणगार, धन अइमंत्त उवा रीषी, अरजूनमालागार ॥ ३७ ॥ एह सरिस हुं संग्रहिशुं, जइयें संजम सार, धन्यदीह ते लेखविशुं, मन वंच्छित सुख-कार ॥ ३८ । त्रिविध भाव गुंथी कुसुम, एह मणोरह माल, कंठे ठवि उत्तम जणें; सोहे गुण सुविशाल ॥ ३९ ॥ परमारथ परिमल बहुल, पसरे दह दिशि जोय, भमर भविक इण रसें रसिक, पामे वंछित सोय ॥ ४० ॥ पार्श्वचद्र सूरि बिनवे, संभलिज्यो सहुकोय, आण सहित किरीयामीली, शिव सुख

दायक होय ॥ ४१ ॥ इति श्री द्वितीय मनोरथ माला समाप्तः

॥ श्री वीतरागायनमः ॥

(श्री सिद्धांतना अर्थ प्रते जाणवानी इच्छा राखनारा पुरुषोए, ११ बोल प्रथम जाणवा जोईए, अर्थात् ॥ १ ॥ धर्मपक्ष ॥ २ ॥ अधर्मपक्ष ॥ ३ ॥ मिश्र पक्ष ॥ ४ ॥ ज्ञेय ॥ ५ ॥ हेय ॥ ६ ॥ आदेय ॥ ७ ॥ विधिवाद ॥ ८ ॥ चरितानुवाद ॥ ९ ॥ यथास्थितवाद ॥ १० ॥ निश्चय अने ॥ ११ ॥ व्यवहार ॥ ए अगीआर बोलने भिन्न भिन्न परमार्थ ओलखवा माटे ।

सिद्धांतना अग्यार बोल तत्वदर्शक सद्याय प्रारंभः

॥ श्री शांतिनाथजीना छंदनि चाल ॥

तिर्थंकर चउवीशहुँ, वंदु सुगुरु सुसाधु प्रवचन जे सूधो कहे; खटजीव निरावाध ॥१॥ श्री गुरु दिनकर उगीयो । नाठो तम अन्नाण, करिविवेक जागो जना, हियडे करो विन्नाण ॥ २ ॥ श्री गुरु ॥ गुरु विण माग न पामीए, सूधो इंण

संसार, पर तारे आपण तरे, पहुचावे भवपार; ॥ ३ ॥ श्री गुरु ॥ जिम वेडी आश्रावणी, वोले पर ने आप; तिम गुरु ग्रंथ सहित करे, निज परने संताप ॥ श्री गुरु ॥ ४ ॥ ज्ञान-क्रिया विहु संजुतो, असंदोन द्वीप समान, तेहने आश्रय जे रह्या; पामे ते सुखस्थान ॥ श्रीगुरु ॥५॥ गुरु प्रसन्न जेहने हुआ जाग्यो तेहनो भाग्य, कर्म्म निवड थयां वेगलां, मोह तणो नवी लाग ॥ श्री गुरु ॥ ६ ॥ खीरनीर पटंतरो, राजहंस जिम लोई; करे एम विगतें करो, धर्म्मंते विरलो कोई ॥ श्री गुरु ॥ ॥ ७ ॥ सूत्र मांहे सघले अछे, धर्म्म अधर्म्म विचार, पण ते जाणे चतुर जे. तेहना विविध प्रकार ॥ श्री गुरु ॥ ८ ॥ धर्म्म अधर्म्म मिश्रह, ज्ञेय हेय आदेय; विधिचरीतानु यथास्थिते जाणे ए नव भेय ॥ श्री गुरु ॥ ९ ॥ अनुयोगे सात नय कह्या ते सवी बीहु अवतार, ते पण जाण्या जोइये, निश्चे ने व्यवहार ॥ श्री गुरु । १० ॥ बीअ अगे बीजे गुण, वियज्ञयणे जिनदेव, त्रिणिपद विस्तरी भण्या, कहिश्यु ते संखेव, ॥श्री गुरु ॥ ११ ॥ ग्रह करसण वली आपण, तेहनो सवि व्यापार, पंच विषयनो पोषवो, पुत्रादिक परिवार ॥ श्री गुरु ॥ १२ ॥ शेष परीग्रह सवि मिली, अर्थ काम आरंभ; पाप अढारनो सेववो, कूड कपट छल दंभ ॥ श्री गुरु ॥ १३ ॥ मिथ्याती

जे मिश्रशुँ, करे क्रिया अविचार, ज्ञान हीन ते वापडा, त्रिणिसय त्रेशठ प्रकार ॥ श्री गुरु ॥ १४ ॥ अधर्म्म पक्ष मांहे सहु; भाखे इम अरिहंत, धर्मपक्ष हवे मन धरो, साधु सुगुरु गुणवंत ॥श्री गुरु ॥ १५ ॥ पंच महाव्रत आदरी, पाले पंचाचार, सुमति गुपति ब्रह्म संजुआ, छांडयां पाप अढार, ॥श्री गुरु ॥ १६ ॥ जयणा चाले उद्ध रहे, वेसे सुए आउत्त, जयणे भासे भुंजए, धर्म्म पक्ष संजुत्त, । गुरु ॥ १७ ॥ मिश्र पक्ष श्रावक कह्या, जाणे तत्व विचार, देशविरति निरतिधरे; टाले तसु अतिचार ॥ श्रीगुरु ॥ १८ । जीव घाते आदे जिहां, अंते जासु मिछित्त, एक थकी विरत्या अछे, एक थकी अविरत्त । श्रीगुरु ॥ १९ ॥ साधु अपेक्षा अणुव्रती तेहना पंचप्रकार; सात शीखाव्रत तेह मिल्या, इम सवि मेल्यां वारा श्री गुरु ॥ २० ॥ पोषहशाला प्रमुख जे, धर्म्म तणा अवठंभ, करे करावे अनुमते, मनमां नाणे दंभ ॥ श्री गुरु ॥ ॥ २१ । जिन गुरू वंदेवाभणी, चतुरंग दल मेलेवि; दिक्षा उछव आदिदे; साहमि भगति करेवि ॥ २२ ॥ एहना भेद अछे घणा, अधर्म्म मिश्रने धर्म, निश्चय व्यवहारे करी; समकित चारित मर्म्म ॥ श्रीगुरू ॥ २३ ॥ अर्थ काम आरंभ जे, व्यवहारे ते अधर्म्म, समकितश्युं दाझे रहे, निश्चे तिणे ए

धर्म्म ॥ नी गुरू ॥ २४ । धर्म काज आरंभ जे, उभय प्रकारे मीश, छंडेवा मन नवि करे, करिवा चित जगीस ॥ श्रीगुरू ॥ २५ ॥ पोसह सामाइक करे, व्यवहारे ते धर्म्म; निश्चे मिश्र ते जाणीए, लागे ममता कर्म्म ॥ श्री गुरू । २६ ॥ ज्ञेय वस्तु हिवे मन धरो, खट द्रव्य खटजीव-काय; द्वीप जलधि गिरिकंदरा; चउगइ सासयभाय ॥ श्री गुरू ॥ २७ ॥ देवलोक सिद्धि घनोदही; घन अथ तन तिहवात, लोक अ-लोकादिक वहु, ज्ञेय वस्तु विख्यात ॥ श्री गुरू २८ ॥ हेय ते कहीये छांडीवो, दुखकर विषय कषाय, पंच प्रमाद तेर काठीया, कर्मारंभ छद्काय ॥ नी गुरू २९ ॥ विकहा चउ सवल। क्रिया मद अड पाप अढार, ए देखाडो वानगी टाली लहे भवपार ॥ श्री गुरू ॥ ३० ॥ आदेय सुख संपति करू, दंसण नाण चरित्त, तप संयम समिती गुपती, ब्रह्मचर्य नव गुति ॥ श्री गुरू ॥ ३१ सामाचारी दशविधे, शम दम दश विध धर्म्म, उपादेय इत्यादि जे, पाले टाले कर्म्म ॥ नी गुरू॥ ॥ ३२ ॥ विधि ते जेवी घटे नहीं, आवश्यक विहुं काल, चउविह संघ समाचरे, दिवस निशा अंतराल ॥ ३३ ॥ श्री वीरे जे विधि आदरी, भाखी ते पढमंग; ते विधि साधु समा-चरे, ईत्यादिक मन रंग ॥ श्री गुरू ॥ ३४ ॥ चरित ते नाम

लेई कहे, तेहना त्रण प्रकार, अधर्म्म मीस वलि धर्म्म ते, हेयुपादे अवतार ॥ श्रीगुरू ॥ ३५ ॥ चेडाकोणिक नरपती, झुंभ्मा विणठा लोक, दुख विपाक दश जे कह्यां; पापे पड्या बहु शोक ॥ श्री गुरु ॥ ३६ गोशाले रूषी बालिया: नागसिरी रूपीघात; सोमिल चरित अधर्म ए; करि पाम्या अतिपात ॥ श्री गुरू ॥३७ ॥ हेयचरित ए जाणिये, हवे मिश्र अधिकार श्रावक समकितद्रष्टीए, धर्म्म काजे व्यापार ॥ श्री गुरू ॥३८॥ रूषभदत रथ जोतरी, उदायन कोणिकराय, चतुरंग दल मेली करी; जइ वंद्या गुरूपाय ॥ श्री गुरू ॥ ३९ ॥ साहमी भोजन पुखली; महोछव चरण जमाली; कुणिक दीधी वधामणी, परदेशी दानशाली ॥ श्री गुरू ॥ ४० ॥ प्रतिमा पूजी द्रूपदी विजयादिक वलीदेव; सूरियाभें नाटक कर्यो: बत्रीश विध मंडेव ॥ श्री गुरू ॥४१ ॥ चित्तिचार हय वर दम्या; फरहोदक धर्म्मकाज; मंत्रिसुबुद्धीसुरही कर्यो; बोध्यो जीतशत्रुराय ॥ श्री गुरू ॥ ४२ ॥ मूकि जिन छद्मस्थपणे: शीतल तेजूलेश, खंदक सनमुख उठीओ, गौतम गयो तिणेदेश ॥ श्री गुरू ॥ ४३ ॥ नागशिरी धर्म्मघोषए, हीली शीश समक्त, सीहोरोयो गुरूदुखे कालेंजिनप्रत्यक्ष ॥ श्री गुरू ॥ ४४ चरितमिश्र इत्यादीजे, हियडाश्युं अवधार, निंद प्रशंसा नहुँ करे, साधु सुगुरु

व्रतधारा ॥ श्री गुरु ॥ ४५ ॥ निंदे तसु धर्म्म हेलना; थापे तसु आरंभ, दूखणलागे चिहुपरे, वलतो धर्मदुर्लंभ ॥ श्रीगुरु ॥ ॥ ४६ ॥ आणंदादिक श्रावके; बारव्रत उचार; कीधो पाल्यो निर्मलो, प्रतिमावहिइग्यार ॥ श्री गुरु ॥ ४७ ॥ अंतेअणशण आदरी, पाम्यासर्गनिवास; एकभवंतरे पामशे; शिवपुर सुख संवास ॥ श्री गुरु ॥ ४८ ॥ मेघकुमार चारित्र लियो गजसु कमाल सुबाहु, ढंढण धन्न तप कीयो; अर्जुन आदि सुसाहु ॥ श्री गुरु ॥ ४९ ॥ गजसुकमाल अहियासिउ, सोमिलकृत अतिदुःख, ततखिण कर्म्म खयकरी, लीधो शिवपुर सुख ॥ श्री गुरु ॥ ५० ॥ धर्म्मरुची कडुतुंबडो, आहार्यो ततकाल, जीव दयाने कारणे, लाधो सुखविशाल ॥ श्रीगुरु ॥ ५१ ॥ चरित धर्म्म ए संभल्यों; ए सहूनेआदेय, इत्यादिकजे आदरे, ते पामे शिवश्रेय ॥ श्रीगुरु ॥ ५२ ॥ पढमउवंगेंजिणीभणयो, जहठिय वादिए जाणि, जे जग हुँतो जेहवो; केवलदर्शननाणि ॥ श्री गुरु ॥ ५३ ॥ ठाणंगएकादिथी, लोकाकिदशठाण, चोथे अंगे इणिपरे, कोडाकोडिप्रमाण, ॥ श्रीगुरु ॥ ५४ ॥ पन्नवणादिक आगमे, प्राएजहठियहोय, ज्ञेयहेय आदेयए, हियेविचारीजोय ॥ श्रीगुरु ॥ ५५ । भगवइअंगेजेम कह्यो, निश्चय ने व्यवहार संखेपे सुणी येहथी, सघले करो विचार ॥ श्रीगुरु ॥ ५६ ॥

मंजीठा राति कही, नीली शुकनी पंख, पीली हद कालो गुली धवलो खीर शशि शंख ॥ श्री गुरू ॥ ५७ ॥ मीठी साकर भेखज, कडुओ लिंब सुतिख, इत्यादिकरस जाणिवा, फरसिण-छारीलुख ॥ श्रीगुरू ॥ ५८ ॥ व्यवहारे निश्चे हवे, पंच वरण रस पंच गंध । अडफरसा तिहां, गइकइक नहीखल चः ॥ श्रीगुरू ॥ ५६ ॥ बोल अग्यारश्रवणेसुणी, मनसु करो विचार, जे जिहां मिले तो ते तिहां, भाखो श्रुत अनुसार ॥ श्री गुरू ॥ ६० ॥ कलश ॥ इग्यारपद ए सूत्रसाखि, सुगुरू मुख अवधारीयें, आदेय पदमन वचकाये, आदरी हिय वारीये ॥ ज्ञेयवस्तु स्वरूप जाणी, धर्म्मशुं मनराखीए, सूरिंद्र श्रीपासचंद्र-शिष्यें, समरसिंघ इम भाखिए ॥ ६१ ॥ इतिश्री उपदेश सार-रत्नकोश अग्यार बोलसज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री ओगणत्रीसी भावना ॥

(दुहा)

अविचल पद मन थिर करी, जिहांछे सुख्ख अपार,
प्रतिबोधिशुं मन आपणो, जिम पामीशुं भवपार १
मनतें अस्थिर पणें, कीधा करमह कोडे,
रागतणें रंगे करी, जीवह आणी खोड २

पंचेंद्री परवसपणें, जे में कीधा पापः ते मुखें कहियें केटला, हुओ संसारह व्याप ॥ ३ ॥ ज्ञानदृष्टि जीव जोइ तुः मोह-तणी मति मुक, वली वलीं पामिश नहीं, नरभव आलिम चूक ॥ ४ ॥ जे दीसें प्रह उगतें, ते संध्या नवि होय, धण धनह परिवारनी, ममता म करो कोय ॥ ५ मोहण भोयण आभरण, जे पोसियें अपार, एके जातें जीवडे; ते दहि कीजे छार ॥ ६ ॥ मंदिर मोहे धन घरणी, सीम रहे परिवार, काया अंगनी परजलें; जीव जाये निरधार ॥ ७ ॥ जावजीव धन मेलीयो, ऐ तुझ आव्यों भाग; सकट एक काठी भयों खोखरी हांडे आग ॥ ८ ॥ मोणसनें पामे मरण, सोचें सगा अपार; आपणपें जांशु सही, इम नविगणो गमार ॥ ९ ॥ इंद्रादिकने चक्रि गण' राय राणा अवलोक; गज रथ तुंगें परिवर्यों, ते पहुँता परलोक ॥ १० ॥ वस्त्रहीनु तु जनमीओ, जोइस तेणें रूप; पापें पिंडज पोसिओ, पडयो संसारह कुप ॥ ११ ॥ माय ताय बंधव बंहिन भज्जा सुत भंडार, मोहरू करतां मनावी, गया सवे निरधार ५ १२ ॥ गाम गयो आवे वली, हरखें मिलें सहु कोई, इणें पंथे, पंथी हुवा, तेदने न मिले कोई ॥ १३ ॥ परभव जातां जीवनें, आडो कोई न थाय, प्रमदा चौसठ सहसनो, पति परलोकें जाय ॥ १४ ॥ इंद्रादिक

सेवे सदा, जेहनें त्रिगडो वास, तेहु जिन थिर नवि रह्या, अवर जीव कूण आश ॥ १५ ॥ लाख बत्रीस विमानना, पति जेहनें सेवंत, काज करे मनसु सदा, ते हुँ इंद्र चवंत ॥१६॥

माय ताय बंधव कवण, कुण वैरी कुण मीत, अे ताहरो सहुअें सगो, सांभलतु एक चित ॥ १७ ॥ सूइ अग्रें भूंय चांपीये, चौदहराज प्रमाण, तें सघली फरसी सही, सरिसी चारे खाण ॥ १८ ॥ तें निगोदभव पूरीआ, सात नरक कीयो वास बंधन धार्यो कंर्मने, कीधो कूड अभ्यास ॥ १९ ॥ सायर सलिलथकु अधिक तें बीधो माय थान, बहु पर्वत प्राहें घणा तें आरोग्या धान ॥ २० ॥ समुद्र नदी प्राहें घणोः जीव तें पाणी पीध, भूरि भवंतर पूर तें, तोही तृपति न लीध ॥ २१ ॥ इम ममतां सहुअे सगो, शत्रु न को संसार, समताशु मन संवरे, मैत्री भाव विचार ॥ २२ ॥ कुसअग्रें जलबिंदु सम जलबुद बुद जिम होई, इन्द्र धनुष गज कन्नपरें. जीविय चपल इम जोइ, ॥ २३ ॥ सुहणा समवड जांणियें, अे सघलो संयोग, धर्म म छंडिस मन थकी, तेंहनो लही वियोग ॥ २४ ॥ आप सवारथ आवियो, अे सहुअे तुं जाण, मोहतणे मद मोहीयो मकरीस परतणी हाण ॥२५॥ दश द्रष्टांतें दोहिलो, तें श्रावककुं तुं कुल लद्ध, शीलव्रत साचो वहे, पाले समकित सुद्ध ॥२६॥

जरा न आवे जां लगें, पचेंद्री समरथ्थ,
व्याधि न आवे देहने; तां साधे परमथ्थ. २७
गएया आऊखा दीहडा, जे ग्या ते नव लं'त,
अेम जाणी आदर सहित, धर्म करे दृढ चित्त. २८
नरभव चिंतामणि समो, आलें तुं मम हार,
जिनशासन मन थिर करी, जीव जतन संभार. २९
भोग भला ते नर लहे; हरषें जे द्यें दांन,
समकितविणु शिवपद नहीं, जेह अनंत सुख्खठाम. ३०
अे ओगणत्रीसी भावना, श्री पार्श्व चंद्रसूरि सुविचार;
(तेहनुं सुद्ध विचार)
जे मनमांहें समरसे; ते तरस्ये संसार. ३१ इतिः

॥ अथ श्री संक्षेप आराधना ॥

(दुहा)

परम पुरुष पय प्रणमीअें; परमाणंद प्रकाश;
भवजल तारण तरणिसम, पूरे वंछित आश. १
पहेलुं मुझ जे धर्मगुरु; परम पुरुष ते जाण,
जेणे परमारथ दाखव्युं; प्रवचन वचन प्रमाण. २

तिथ्थंकर वली सीद्ध भणी; आयरिय उवझाय;
साधु नाण दंसण चरण, साधक सुविहित राय. ३
काल अनादि अनंत लगें; परम पुरुष अे पंच,
तेहनां पय भवभव सरण, मन न करु खलखंच. ४

चोपाइ.

उढ अहो तिरियलोय मझार, सासयपडीमा श्रुत अनुसार,
चिहुँ नामे जे जीनवर भणि, तेहुँ वंदु भक्तियें घणी. ५
रिषभ अने चंद्राननदेव, वारिसेण प्रभु किजे सेव;
वर्धमान जीणवर वंदीयें, हियडे अहनिसी आणंदीयें. ६
बीजो जे अनुयोगदुवार; तेहतणा छे चार प्रकार,
नाम ठवण द्रव्य ने भाव, चिहुँ उपर निरतो एक भाव. ७
आवे भावतो सौ प्रमाण, नावे तो स्यु करुं वखाण,
चिहुँ भेदे वंदु अरीहंत, अकल अजय अनादि अनंत. ८
शत्रुजय तीरथ गिरनार, अष्टापद वलि गीरी वैभार,
शिखरसमेत वीपुलगीरींद, तसु समरण मुझ मन आणंद. ९
इहां हुवा जे सीद्ध अनंत, संयम पाली बहु गुणवंत,
तेहनुँ अहनिसी समरुं नाम, कर जोडीने करुं प्रणाम. १०
नगर गाम आगम बहु ठाम, असासति पडीमा अभिराम,
ते सवि वंदु मननी सुद्ध, आणी श्री अरिहंतनी बुद्ध. ११

तेह नीशंक साचुं जीन कह्यो, ए परम अक्षर में सद्दह्यो,
भावसुध अेहज दोहेलुं, अेह थकी सहुअे सोहिलुं. १२
जीव अनादी भम्यो भव भूर, दंसण नाण चरण करी दूर,
कीधां पाप ठाण जे वहु, ते हुँ खामुं स्वामी सहु, १३
हिंसा कुड अदत्त अबंभ, मेल्युं परिग्रह बहु आरंभ,
क्रोध मान माया ने लोभ, राग दोप ने दिधी थोभ. १४
कर्या कलह बहु दीधां आल, पीसुनपणुं रती अरति वीशाल,
रसवसें बोल्या परपरीवाद, माया मृषा मोह उनमाद. १५
मिथ्यासल्य अढारह पाप, भव भव एह्ज थयो संताप,
जनम मरण करी चउदहराज, पुर्यां किंपी न सीधा काज. १६
जीवयोनी चउरासीलक्ष, ते सहुऐ केवली प्रत्यक्ष,
इण भव हण्या अनेरें भवे, सुगुरु साखे ते खामुं सवे. १७
जे कांइ कहीऐ अधिकरण, आपे जनम अनंता मरण,
जन्म जन्म जे कीधा वहु, वोसीरामी हवडां ते सहु. १८
दंसण नाण चरण जग सार, अवर न कांइ गुण भंडार,
वीराधना तेहनी निंदीयें, आराध्या ते अनुमोदीये. १९
आलोयण नींदण गरहणा, खामण अणसण भवभावणा,
एहज मुजनें आराधना, परमारथ सीवसुख साधना. २०
च्यार सरण दुःक्रत गरहणा, सुक्रत कर्यांनी अनुमोयणा,

रहित तेहनो खल नाम, परजी टाले गुणनो ठाम। चाचर चोवटे पडी मजीठ, पग ठेलंति लोके दीठ ॥ १७ ॥ राग वसे जिण बहु दुःख सह्यां; अवसाणे एवां फल लह्यां। बाकस करीने नाखी दूर; जन जोवे उगमते सूर ॥ १८ ॥ जिण छे लोक इसा स्वारथी, कोई केहनो व्हालो नथी। नेह राग इम गणि टालियें, सुगुरु वचन मन संभालिये ॥ १९ ॥ यादव हुआ छप्पन कुल कोड, द्वारवत्ति नगरी धन कोड। राजा कृष्ण नहीं कंइ खोड; सेव करे जसु सुरनर कोड ॥ २० ॥ भाइ बलभद्र छे तेहने, हलने मुसल शस्त्र जेहने। तेहने पण आवी आपदा; म करो गर्व लही संपदा ॥ २१ ॥ द्वारवति नगरीने दाह, बे बांधव आव्या वनमांह। बलभद्र गयो जल लेवा काज, बाणे हण्यो यादवकुल राज ॥ २२ ॥ नेहें न जाण्यो हरिनो काल; खंध उपाडी केइ काल। घणो मनाव्यो रुठयो गणी, विनवे वलि वलि हरि गुण भणी ॥ २३ ॥ स्वामी षट् खंड पृथ्वी-तणो, सगर नाम जेस जग जस घणो। साठसहस्त्र बेटा जेहने जुगवे काल हुवे तेहने ॥ २४ ॥ कठिन हियो जो सुर न करंत, हियडो सतधा फाट विजंत। पुत्र विरहे सिझंभवसूर चौद पूरवधर गुणमणि भूर ॥ २५ ॥ तासु नेत्र पण आंसु ढल्यां, उत्तम नर सुत मोहे कल्यां। अवर लोकने केहेचो किसो,

उत्तम पुरुषे कीधो जिसो ॥ २६ ॥ ते हवे आदर करी सांभलो मननो टाली कलि कल मलो । सगरराय वलदेव प्रमुख; नेह थकी जाणी वहु दुःख ॥ २७ ॥ ए संसार असुख भंडार, इहां अवर नहिं कांइ सार । एक धरम विण तारक कोय, जाणयो नहिं आदरिये सोय ॥ २८ ॥ इस्यो जाणी चारित्र आदरी; शुद्ध पाली शिवरमणी वरी । वरसे इम वलि करशे जेह; निश्चे सुखिया थाशे तेह ॥ २९ ॥ इम सांभल श्रावक शिवराज; मोहन लहिये शिवनो राज । केहनो धन केहनो परिवार, ए सवि लह्यां अनंती वार ॥ ३० ॥ हवे साची सदहणा लही, ए सरिस जग बीजी नहीं । परखी लीधो छे एह घणो, तेहनो बारंवार शुं भणो ॥ ३१ ॥ धरी संवेग उदासी धरो, अपूर्व करणी कोइ संग्रहो । आणंदनी पेरे परमाणंद, पामो जिम पभणे पार्श्वचंद्र ॥ ३२ ॥

॥ अथ श्रीजीवविजयजीकृत पृथ्वीचंद्र अने गुणसागरनी सज्झाय

॥ दोहा ॥ शासननायक सुखकरु; वंदी वीर जिणंद । पृथ्वीचंद्र मुनि गायशुं, गुणसागर सुखकंद ॥ १ ॥ उत्तमना गुण गावतां, गुण आवे निज अंग । वात घणी वैराग्यनी,

सांभलजो मनरंग ॥ २ ॥ शंख कलावती भवथकी, भव एक-वीश संबंध । उत्तरोत्तर सुख भोगवी, एकविशमे भवें सिद्ध ॥ ३ ॥ पण एकवीशमा भवतणो, अल्प कहुँ अधिकार। सांभल जो सन्मुख थई, आतमने हितकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ कंथ तमाकू परिहरो ॥ ए देशी । नयरी अयोध्या अति भली, राज करे हरिसिंह ॥ मेरे लाल ॥ प्रिया पद्मावती तेहने, सुख विलसे गुणगेह ॥ मे० ॥ १ ॥ चतुर सनेही सांभलो ॥ ए आंकणी । सर्वारथथी सुर चवी, तस कूखे अवतार ॥ मे० ॥ रूप कला गुण आगलो; पृथ्वीचंद्रकुमार ॥ मे० ॥ च० ॥ २ ॥ समपरिणामी मुनि समो, नीरागी निर्धार ॥मे०॥ पिता परणावे आग्रहे, कन्या आठ उदार ॥मे०॥ च० ॥ ३ ॥ गीत विलाप नी सम गणे; नाटक काय किलेश । मे० ॥ आभूषण तनुभार छे; भोगने रोस गणेश ॥ मे० ॥ च० ॥ ४ ॥ हुँ निजतातने आग्रहें; संकट पडियो जेम ॥ मे० ॥ पण प्रतिबोधूं ए प्रिया; माता पिता पण तेम ॥ मे० ॥ च० ॥ ५ ॥ जो सवि संयम संग्रहे, तो थाये उपकार ॥ मे० ॥ एम शुभ ध्यनें गुणनिलो ॥ पहोतो भवन मझार ॥ मे० ॥ च० ॥ ६ ॥ नारी आठने एम कहे; सांभलो गुणनी खाण ॥ मे० ॥

भोगवतां सुख भोग छे, विपाक कडुवा जाण ॥मे०॥च०॥७॥ किंपाकफल अति मधुर छे; खाधे छंडे प्राण ॥ मे० ॥ तिम विषयसुख जाणजो, एवी जननी वाण ॥ मे० ॥ च० ॥ ८ ॥ अग्निनी जो तृप्ति इंधनें, नदीयें जलधि पूराय ॥ मे० ॥ तो विषयसुख भोगथी, जीव ए तृप्तो थाय ॥ मे० ॥ च० ॥ ९ ॥ भव भव भमतां जीवडे, जेह आरोग्यां धान्य ॥ मे० ॥ ते सवि एकठां जो करे, तो सवि गिरिवरमात्र ॥ मे० ॥ च० ॥ १० ॥ विषयसुख सुरलोक में, भोगवियां इण जीव ॥ मे० ॥ तो पण तृप्तज नवि थयो; काल असंख्य अतीव ॥मे० ॥ च० ॥ ११॥ चतुरा समजो सुंदरी; मूंजो मत विषयने काज ॥ मे०॥ संसार अटवी उतरी, लहियें शिवपुरराज ॥ मे० ॥ च० ॥ १२ ॥ कुमरनी वाणी सांभली; बूझी चतुर सुजाण ॥ मे० ॥ लघुकर्मी कहे साहेबा; उपाय कहो गुणखाण ॥ मे० ॥ च० ॥ १३ ॥ कुमर कहे संयम ग्रहो, अद्भुत एह उपाय ॥ मे० ॥ नारी कहे अम विसर्जो; संयमें वार न थाय ॥ मे० ॥ च० ॥ १४ ॥ कुमर कहे पडखो तुमें; हमणां नहिं गुरुजोग ॥ मे० ॥ सद्गुरु जोगें साधशुं, संयम छांडी भोग ॥ मे० ॥ च० ॥ १५ ॥ मात पिता मन चिंतवे, नारीनें वश नवि थाय ॥ मे० ॥ उलटी नारी वश करी, कुमरनुं गायुं गाय ॥ मे० ॥ च० ॥ १६ ॥ जो हवे राजा

कीजियें, तो भलशे राजनें काज ॥ मे० ॥ नरपति एम मन चिंतवी, थापे कुमरने राज्य ॥ मे० ॥ च० ॥ १७ ॥ पिता उपरोधें आदरे, चिंते मोहना घाट ॥ मे० ॥ पाले राज्य वैरागियो, जोतो गुरुनी वाट ॥ मे० ॥ च० ॥ १८ ॥ राज्यसभायें अन्यदा, पृथ्वीचंद्र सोहंत ॥ मे० ॥ इण अवसर व्यवहारियो; सुधन नाम आवंत ॥ मे० ॥ च० ॥ १९ ॥ राजा पूछे तेहनें कोण कोण जोया देश ॥ मे० ॥ आश्चर्य दीठुं जे तुमें, भांखो तेह विशेष । मे०॥च०॥२०॥ शेठ कहे सुण्य साहिबा, एक विनोदनी वात ॥मे०॥ सांभलतां सुख उपजे, भांखुं ते अवदात ॥ मे० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कौतुक जोतां वहु गयो, काल अनादि अनंत ॥ पण ते कोतुक जग वडुं, सुणतां आतम शांत ॥१॥ कौतुक सुणतां जे हुवे, आतमनो उपकार ॥ वक्ता श्रोता मन गहगहे, कौतुक तेह उदार ॥ २ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ गिरि वैताढयनी उपरे ॥ ए देशी ॥ आव्या गजपुर नयरथी, तिहां व से व्यवहारी रे लो ॥ अहो, तिहां वसे व्यवहारी रे लो ॥ रत्नसंचय तस नाम छे, सुमंगला तस नारी

रे लो ॥ अहो; सुमंगला तस नारी रे लो ॥ १ ॥ गुणसागर तस नंदनो, विद्यागुणनो दरियो रे लो ॥ अ० ॥ वि० ॥ गोखे बेठो अन्यदा, जुवे ते सुख भरियो रे लो ॥ अ० ॥ ॥ जु० ॥ २ ॥ राजपंथे मुनि मलपतो, दीठोनें संभरीयो रे लो ॥अ०॥दी०॥ ते देखी शुभ चिंतवे, पूरव चरण सांभ-रियो रे लो ॥अ०॥पू०॥३॥ मात पिताने एम कहे, सुखीयो मुझ कीजे रे लो ॥अ०॥सु०॥ संयम लेशुं हुं सही, आज्ञा मुझ दीजें रे लो ॥अ० ॥आ० ॥४॥ मात पिता कहें नानडा संयमें उमायो रे लो ॥अ०॥सं०॥ तो पण परणो पदमिणी, अम मन हरखावो रे लो ॥ अ०॥ अ०॥ ५॥ संयम लेजो ते पछी, अंतराय न कर शुं रे लो ॥ अ० ॥ अं० ॥ विनयी वात अंगीकरी; पछे संयम वरशुं रे लो ॥ अ० ॥ प० ॥ ६ ॥ आठ कन्याना बापने; इम भांखे व्यवहारी रे लो ॥ अ० ॥ इ० ॥ अम सुत परणवा मात्रथी, थाशे संयमधारी रे लो ॥अ०॥आ०॥ ॥ ७ ॥ इभ्य सुणी मन चमकिया; वर बीजो करशुं रे लो ॥अ०॥व०॥ कन्या कहे निज तातने, आ भव अवर न वरशुं रे लो ॥अ०॥आ०॥८॥ जे करशे ए गुणनिधि; अमो तेह आदरशुं रे लो ॥अ०॥अ०॥ राग वैरागी दोयमें, तस आणा शिर धरशुं रे लो ॥अ०॥त०॥६॥ कन्या आठनां वचनथी;

हरख्या ते व्यवहारी रे लो ॥ अ० ॥ ह० ॥ विवाह महोत्सव मांडीयां; धवलमंगल बहु नारी रे लो ॥अ०॥ध०॥१०॥ गुणसागर गिरुओ हवे, वरघोडे वर सोहे रे लो ॥ अ० ॥ व० ॥ चोरी मांहे आवीया, कन्याना मन मोहे रे लो ॥अ० ॥ क०॥ ॥११॥ हाथ मेलावो हर्षशुं; साजन जन सहु मलिया रे लो ॥अ०॥सां०॥ हवे कुमर शुभ चित्तमें; धर्मध्यान सांभरियां रे लो ॥अ०॥ध०॥१२॥ संयम लइ सुगुरुकने; श्रुत भणशुं सुखकारी रे लो ॥ अ० ॥ श्रु० । समतारसमां झीलशुं, काम कषायने वरी रे लो ॥ अ० ॥ का० ॥ १३ । गुरुविनय नित्य सेवशुं, तप तपशुं मनो हारी रे लो ॥ अ० ॥ त० ॥ दोष बहेंतालीश टालशुं, माया लोभ निवारी रे लो ॥ अ० ॥ ॥ मा० ॥ १४ ॥ जीवितमरणें समपणुं, सम तृण मणि गणशुं रे लो ॥ अ० ॥ स० ॥ संयम योगें थिर थइ; मोहरिपुनें हणशुं रे लो ॥अ०॥मो०॥१५॥ गुणसागर गुणश्रेणीयें, थया केवल नाणी रे लो ॥अ०॥थ०॥ नारी पण मन चिंतवें; वरीयें अमें गुण खाणी रे लो ॥अ०॥व०॥१६॥ अमो पण संयम साधशुं, नाथ नगीना साथें रे लो ॥अ० ॥ ना०॥ एम थइ आठे केवली, कर पियुडा हाथे रे लो ॥ अ० ॥ ते० ॥ ॥१७॥ अंबर गाजे दुंदुभि, जय जय रव करता रे लो ॥अ०

॥ज०॥ साधुवेश ते सुरवरा, सेवाने अनुसरंता रे लो ॥अ०॥ से०॥१८॥ गुणसागर मुनिराजनां, मात पिता ते देखी रे लो ॥अ०॥मा०॥ शुभसंवेगें केवली, घाती चार उवेखी रे लो ॥अ०॥ व०॥१९॥ नरपति आवे वांदवा, मन आश्चर्य आणी रे लो ॥अ०॥म०॥ शंख कलावती भवथकी, निजचरित्र वखाणी रे लो ॥अ०॥नि०॥२०॥ भव एकवीश ते सभांली; बूझ्या केई प्राणी लो ॥ अ० ॥ बू० ॥ सुधन कहे सुणो साहेबा; अत्र आव्यो उमाह रे लो ॥ अ० ॥ अ० ॥ २१ ॥ पण ते कौतुक देखवा; मनडो मुझ हरखायो रे लो ॥अ० म०॥ केवलज्ञानी मुझ कहे, शुं कौतुक उल्लासे रे लो ॥अ०॥शुं०॥ २२ ॥ एहथी अधिकू देखशो; अयोध्या नाम ग्रामे रे लो ॥ अ० ॥ अ०॥ ते निसुणी मुनिपद नमी, आव्यो इण ठामें रे लो ॥अ०॥आ०॥२३॥ कौतुक तुम प्रसादथी, जोशुं सुख कामी रे लो ॥अ०॥जो०॥ एम कहीने सुधन तिहां, उभो शिर नामी रे लो ॥ अ० ॥ ऊ० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पृथ्वीचंद्र ते सांभली, वाध्यो मन वैराग ॥ धन धन ते गुणसागरु, पाम्यो भवजल ताग ॥ १ ॥ हुं निज तातने दाक्षिणें, पडियो राज्यमझार पण हवे नीसरशु कदा, थाशु

कव अणगार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ रसियानी देशी ॥ धन धन जे मुनिवर ध्याने रमे; करता आतम शुद्ध ॥ मुनिश्वर ॥ राजा चिंते सद्गुरु सेवना, करशुं निर्मल बुद्ध ॥मु०॥धन०॥१॥ कवहुँ शम दम सुमति सेवशुं, धरशुं आतमध्यान ॥मु०॥ इम चिंतवतां अपूरव गुण चढे, श्रेणीयें शुक्लध्यान ॥ मु० ॥ध० ॥२॥ ध्यानवलें सवि आवरण क्षय करी, पाम्या केवलज्ञान ॥मु०॥ हर्ष धरि सोहम पति आवीया, वेश दीये वहुमान॥मु०॥ध०॥३॥ सांभली मात पिता मन संभ्रमे, आव्यां पुत्रनी पास ॥ मु० ॥ ए शुं ए शुं एणि परे वोलतां, हरिसिंह हर्ष उल्लास ॥मु०॥ध०॥४॥ दयितो आठ सुणी मन हर्षथी, उलट अंग न माय ॥मु०॥ संवेग रंग तरंगमें झीलती, आठे केवली थाय ॥ मु० ॥ ध० ॥५॥ सारथ सुधन पण मन चिंतवे, कौतुक अद्भुत दीठ ॥मु०॥ नरपति पूछे मुनिचरणे नमी, स्नेहनुं कारण जिठ ॥ मु० ॥ ध० ॥६॥ केवली कहे पूरव भव सांभलो, नयरी चंपा जय राय ॥मु०॥ सुंदरी प्रियमती नामें तेहने, कुसुमायुध सुत थाय ॥मु०॥ध० ॥७॥ दंपती संयम पाली शुभमना; विजयविमाने ते जाय ॥मु०॥ अनुत्तर सुख विलसी सुर ते चव्यां, थयां तुमें राणी

ने राय ॥मु०॥ध०॥८॥ कुसुमायुध पण संयम सुर चवी, थयो तुम सुततणो नेह ॥मु०॥ मात पिता पण पृथ्वीचंद्रनां; सुणी थयां केवली तेह ॥मु०॥ध०॥९॥ सार्थ पूछे पृथ्वीचंद्रने गुण-सागर तुम केम ॥ मु० ॥ मुनि कहे पूरव भव अम नंदनों, कुसुमकेतु तस नाम ॥मु०॥ध०॥१०॥ एहिज दयिता दोयने ते भवें, संयम पाली ते सार ॥मु०॥ समधर्में सवि अनुत्तर ऊपन्यां; आ भव पण थइ नार ॥मु०॥ ध० ॥ ११ ॥ सांभली सुधन श्रावकव्रत लहे; बीजां पण बहु बोध ॥ मु० ॥ पृथिवी विचरे पृथ्वीचंद्रजी, सादि अनंत थया सिद्ध ॥मु०॥ध०॥१२॥ नित नित उठी हुं तस वंदन करुं, जेणें जग जीत्यो रे मोह ॥मु०॥ चढते रंगे हो सम सुख सागरु, करतो श्रेणि अरोह ॥मु०॥ध०॥१३॥ जग उपकारी हो जगहेतु वत्सलू ; दीठे परम कल्याण ॥मु०॥ विरह म पडशो हो एहवा मुनितणोः जाव लहुं निर्वाण ॥मु०॥ध०॥१४॥ मुनिवर ध्याने हो जन उत्तम पद वरे, रूपकला गुणज्ञान ॥मु०॥ कीर्त्तिकमला हो विमला विस्तरे; जीवविजय धरे ध्यान ॥ मु० ॥ ध० ॥ १५ ॥

॥ इति पृथ्वीचंद्र अने गुणसागरनी सझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री मानसिंहकृत कलावतीनुं चोढालियुं प्रारंभ

॥ ढाल पहेली ॥

॥ बन्यो रे कुंवरजीनो सेहरो ॥ ए देशी ॥ मालवदेश मनोहरु, तिहां नयरी उज्झेणी नाम हो । नरिंद । शंख राजा तिहां शोभतो, सहु शुभ गुण केरुं धाम हो ॥ नरिंद ॥ १ ॥ शीयलतणा गुण सांभलो, शियलें लहियें बहुमान हो ॥नरिंद॥ शीयलें सतीय कलावती, जेम पामी सुख प्रधान ॥ नरिंद ॥ ॥ शी० ॥ २ ॥ त्रणसो साठ मांहे वडी, लीलावती पट्टराणी कहेवाय हो ॥ नरिंद ॥ नेपाल देशनो नरपति, नामें जितशत्रु राय हो ॥नरिंद॥ शी० ॥ ३ ॥ जयसेन विजयसेन सुत भला; कलावती पुत्री उदार हो ॥ न० ॥ मालवपति शंखरायने, परणावी प्रेम अपार हो ॥ न० ॥ शी० ॥ ४ ॥ पंच विषय सुख विलसतां, कलावती राय संघात हो ॥ न० । गर्भ रह्यो पुण्ययोगथी; हरख्यो नृप साते धात हो ॥ न० ॥ शी० ॥ ५ ॥ अघरणी उत्सव मांडियो; गीत गावे बहु मली नार हो ॥न०॥ पेटी आवी पीयर थकी, कलावतीने तेणिवार हो ॥न०॥शी०॥ ॥६॥ शंकाती सहु शोक्यथी, लेइ गोपवी गोठण हेठ हो ॥न०॥

एकांते ऊखेलतां, दोय वेहेरखा दीठा दृष्ट हो । न० । शी० ।७। नंग जडयां मांहे निर्मलां, अंधारे करे उजवास हो । न० । नामांकित वेहु भ्रातना, पेहेरीने पामी उल्लास हो । न० । शि० । । ८ । खाट हिंडोले हिंचतां, वहेरखा झबुके जेम वीज हो । न० । दासी लीलावती तणी; देखीं धरे दिलमां खीज हो । न० । शि० । ९ । कहो वाइ ए केणें दियां, आभूषण दोय अमूल्य हो । न० । मुजने जे घणुं वालहो, तेणें दीधां ए वहुमूल हो । न० । शि० । १० । दासी लीलवती भणी, भांख्यो ते सघलो भेद हो । न० । सांभली क्रोधातुर थइ, उपन्यो चित्तमां वहु खेद हो । न० । शि० । ११ । राणी प्रत्यें महीपति कहे, केणे दुहव्यां तुमने आज हो । न० । वहुमूला तमे वहेरखा; केम कीधा कलावती काज हो । न० । शि० । । १२ । में न घडव्या वहेरखा, तस खवर नहिं मुज कांय हो । न० । पूछी निरती करो तुमें, सुणी लीलावती तिहां जाय हो । न० । शि० । १३ । राय छानो उभो रह्यो, तव पूछे लीलावती तेह हो । न० । साचुं कहो वाइ कलावती, केणें दीधा वहेरखा एह हो । न० । शि० । १४ । हुं घणुं जेहने वालही, तेणे मोकल्या मुझनें एह हो । न० । रात दिवस मुझ सांभरे, पण भाइ न कह्यो तेह हो । न० । शि० । १५ । राजा क्रोधा-

तुर थयो, सुणी कलावतीनां वचन हो । न० । प्रीति पूरवला पुरुपशुं; मूक्या ए तेणें प्रच्छन्न हो । न० । शि० । १६ । कोल दियो लीलावती भणी; दोय वहेर खासेंती बांह हो ।न०। छेदावी तुझने दीयुं; सुणी पामी परम उत्साह हो । न६ । । शी० । १७ । इति ।

। ढाल बीजी ॥

सुणा सुण रे गौतम समय म करीश प्रमाद ।ए देशी। राय हुम म एहवो करयो जी, चंडालने तेणि वार । कलावती कर कापीने जी, आणी द्यो एणी वार । १ । सुण सुण रे प्राणी; कर्म तणां फल एह । ए आंकणी । जन्मांतर जीवें किया जी, आवे उदय सही तेह । सुण सुण रे प्राणी । कर्म० । २ । सांभली अंत्यज थरहर्यो जी, चंडालीने कहे तेह । राय हुकम रुडो नहीं जी, मूकीए नगरी एह ।सुण०।कर्म०। । ३ । पापणी कहे तुं शुं बीये जी; एछे माहरुं काम । शिर नामी उभी रही जी, रायें खड्ग दीयो ताम । सु० । कर्म० । । ४ । रथ जोडी रंडा कहे जी; बेसो बाइ इणमांह । पीयर तुमने मोकले जी, राय धरी बहु चाह । सु० । कर्म० । ५ । गलियल माफा केहवा जी, श्याम वृषभ वलि केम । पुत्र रहे नहिं रायने जी, कीधो कारण एम । सुण० । कर्म० । ६ ।

रथ वेसारी रानमां जी; चालो उजड वाट । सूके वन रथ छोडियो जी, राणी पामी उच्चाट । सुण० । कर्म० । ७ । पीयर मारग ए नहिं जी, चांडाली कहे ताम । राये मुझने मोकली जी, कर कापणने काम । सुण० । कर्म० । ८ । जमणो पोतें छेदीयो जी, डावो चंडालियें लीध । वहेरखा सहित वेहु ग्रहे जी, आणी रायने दीध । सु० । कर्म । ९ । नारीभ्रात नाम निरखतां जी, मूर्च्छाणो तत काल । शीतल वाये सज कर्यो जी, रोवे तव महिपाल । सु० । कर्म० । १० । किसी कुमति मुझ उपनी जी, कीधो सबल अन्याय । ए जीव्युं कुण कामनुं जी राजरमणी न सुहाय । सु० । कर्म० । ११ । चयरचावी चंदनेंजी, बलवाने तिहां जाय । लोक मली वारे घणुं जी, वचन न माने राय । सु० । कर्म० । १२ । इति ।

। ढाल त्रीजी ।

। वामाजीनो कुंअर लाडिलो । ए देश । कलावतीने जे थयो, ते सुणजो प्रतिकार । भवि । प्राणी । करछेदन वेदनथकी सुत जनम्यो तेणि वार । भवि० । १ । शीयलनो महिमा जाणीयें, शीयले संपत्ति थाय । भ० । ए आंकणी । विघ्न विषम दूरें टले, सुर नर प्रणमे पाय । भ० । शी० । २ । पुत्र प्रत्यें कहे पद्मिणी, शुं करुं ताहरी सार । भ० । माहरी कुखें

अवतर्यो, तुं निर्भाग्य कुमार । भ० । शी० । ३ । अशुचिपणुं केम टालशुं; पालशुं ए केम बाल । भ० । शौच करे गेवे वली, वन महोर्यो ततकाल । भ० । शी० । ४ । शियलें मूकी नदी वही, पाणी आव्युं नजीक । भ० । जाणे के जल लेइ जायशे; वच्चें बेठी निर्भीक । भ० । शी० । ५ । आंटो देइ चिहुं दिशें, नदी वही दोय धार । भ० । बोले बांह नीची करी, जलमांहे तेणि वार । भ० । शी० । ६ । नवपल्लव नवली थइ; वहेरखासेंती बांह । भ० । बीजी पण तिमहिज थइ, पामी परम उत्साह । भ० । शी० । ७ । अचरिज देखी आवियो; तापस एक तेणि वार । भ० । जन क्नो मित्र जाणी करी, बोलावे सुविचार । भ० । शी० । ८ । रे पुत्री तापस कहे, एकली अटवी मझार । भ० । केम आवी मुझने कहे, तव भांख्यो सघलो विचार । भ० । शी० । ९ । कोप्यो तापस एम कहें; राजाने करुं उत्पात । भ० । कलावती तव विनवे; कोप म करो मुज तात । भ० । शी० । १० । तापसें तिहां विद्यावलें, अघल रच्यो आवास । भ० । कलावती सुतशुं तिहां; अहोनिश रहे उल्लास । भ० । शी० । ११ । काठियारा तेणे अवसरे, देखी एह विचार । भ० । दोडया देवा वधामणी, राजाने तेणि वार । भ० । शी० । १२ । मंत्री अरज करे तिसे,

सुणो राजन सुकुमाल । भ० । अवधि दियो एक मासनी, खबर करुं ततकाल । भ० । शी० । १३ । एम कही शोध करण चले, एहवे आव्या कठियार । भ० । राणीनो वेगत कही सवे, हरख्यो चित्त मझार । भ० । शी० । १४ । सुकुवन सवि मोरियुं; शूकी नदी वहे पूर । भ० । राणीयें सुत तिहां जनमियो, कर ऊग्या ससनूर । भ० । शी० । १५ । राजाने जइ विनव्यो, पाम्यो हर्ष विशाल । भ० । राणीने तेडवा मोकल्यो, मंत्रीने ततकाल । भ० । शी० । १६ । राय राणी मन रंगशुं, आव्यां नगर मझार । भ० । उत्सवरंग वधामणां हुवो ते जय जयकार । भ० । शी० । १७ ।

॥ ढाल चोथी ॥

।।आदर जीव क्षमा गुण आदर ।।ए देशी।। एक दिन राय राणी मन रंगे; वनमां खेलण जावे जी । तव तिहां साधु धर्मधुरंधर, तेहनां दर्शन पावे जी । १ । भवियण धर्म करो मन शुद्धें, धर्में संपत्ति थाय जी । ए आंकणी । धर्में मनोवंछित सवि हुवे, धर्में पाप पलाय जी । भ० । २ । पाय प्रणमी साधुने पूछे; भगवंत मुझने भाखो जी । राणी कर छेद्या किण कारण; तेहनो उत्तर दाखो जी । भ० । ३ । साधु ज्ञानी एणी परें बोले; महा विदेहमां रहेतां जी । महींद्रपुरी नयरी नृप विक्रम,

लीलावती विलसंतां जी । भ० । ४ । पुत्री प्रसवी रूप अनुपम; सुलोचना गुणखाणी जी । विद्यावंत विदेशी सूडो, वदतो अमृत वाणी जी । भ० । ५ । सुलोचना सोवन पिंजरमां, सूडो घाली राखे जी । गाहा गूढा नवली गावे; मनोहर मेवा चाखे जी । भ० । ६ । मनमां कीर विमासे एहवुं, पिंजर बंधन रहेवुं जी । आश पराइ करवी अहो निश, परवश सुख न लेहवुं जी । भ० । ७ । एक दिन पिंजर बार उघडियुं, पोपट तव निकलीयो जी । वनमां तरु शाखायें बेठो, मन वंछित सवि फलियो जी । भ० । ८ । सुलोचना सूडाने विरहें; तत-क्षण मूर्च्छित थावे जी । राजा पाश नखावी सूडो, बंधावीने लावे जी । भ० । ९ । रीसाणी सूडाशुं कुमरी; पांखो बेहु तस छेदे जी । सूडो पण तनुमोह तजीने; भूख तृषा बहु वेदे जी । भ० ।१०। शुभ परिणामें सूडो चवीने; सुर लोके सुर थावेजी । कुंवरी तस विरहें तनु त्यजीने; देवांगना पद पावे जी । भ० । ११ । सुरलोके सुर सुख विलसीने, इहांकणे राजा हुओ जी देवी पण ते त्यांथी चवीने, हुइ कलावती जूओ जी । भ० । १२ । पूरव वैर इहां तुझ प्रगट्यो; तिण कारण कर छेद्याजी जन्मांतर कीधां जे जीवे, नवि छूटे विण वेद्यांजी । भ० । १३ ।

राजा राणी सुखीने ततक्षण, जाति समरण ज्ञानें जी। पूरव भव संपूरण देखे, तहत्ति करीने माने जी। भ०। १४। करम तणी गति विरुइ जाणी, वैराग्ये मन भीनो जी। राजा राणी निर्मल भावे, संयम मारग लीनो जी। भ०। १५। तप वल ध्यान शुक्ल आराधी भवबंधन सवि छोडर्या जी। राजा राणी केवल पामी, शिवरमणी सुख जोडर्या जी। भ०। १६।

॥ कलश ॥ एम दुरित खंडण शीयल मंडण आराधी शिवपद लह्यो। संवत अढार पांत्रीश श्रावण, शुक्ल पंचमी दिन कह्यो। लोकागच्छपि श्री करमसी तसः शिष्य रंगे उच्चरे। भुजनगर भावे रही चोमासुँ, मानसिंह जय जय वरे।१। इति।

पंडित श्री देवीचन्द्रजी कृत—

प्रभंजना महासतीनी सज्झाय।

॥ ढाल पहेली ॥

(नाटकीयानी नदनी, ए देशी)

गिरि वैताढचने उपरे; चक्रांका नयरीरे लो।
अहो चक्रांका नयरीरे लो।
चक्रायुध राजा तिहां, जीत्या सवी वयरीरे लो।
अहो जीत्या सवि वयरीरे लो। १।

मदनलता तस सुँदरी; गुण शील अचंभारे लो ॥ अहो० ॥
पुत्री तास प्रभंजना, रूपे रति रंभारे लो ॥ अहो० ॥ २ ॥
विद्याधर भूचर सुता; बहु मिलि एक पंतेरे लो ॥ अहो० ॥
राधावेध मंडावियो, वर वरवा खंतेरे लो ॥ अहो० ॥ ३ ॥
कन्या एक हजारथी, प्रभंजना चासीरे लो ॥ अहो० ॥
आर्य खंडमां आवतां; वनखंड विचालीरे लो ॥ अहो० ॥ ४ ॥
निग्रंथी सुप्रतिष्टिता; बहु गुरुणी संगेरे लो ॥ अहो० ॥
साधु विहारे विचरंता; वंदे मन रंगेरे लो ॥ अहो० ॥ ५ ॥
आर्या पूछे एवडो, उमाहो स्यो छे रे लो ॥ अहो० ॥
विनये कन्या विनवे, वर वरवा इच्छेरे लो ॥ अहो वर० ॥
ए श्यो हित जाणो तुमे, एहथी नवि सिद्धिरे लो ॥ अहो० ॥
विषय हलाहल विष जिहां; शी अमृत बुद्धिरे लो ॥ अहो० ॥
भोग संग कारमा कह्या, जिनराज सदाई रे लो ॥ अहो० ॥
राग द्वेष संगे वधे, भव भ्रमण सदाई रे लो ॥ अहो० ॥ ८ ॥
राजसुता कहे साच ए, जे भाखो वाणी रे लो ॥ अहो० ॥
पण ए भूल अनादिनी, किम जाए छंडाणीरे लो ॥ अहो० ॥ ९ ॥
जेह तजे तेह धन्य छे; सेवक जिनजीना रे लो ॥ अहो० ॥
अमे जड पुद्गल रस रम्या; मोहे लयलीनारे लो ॥ अहो० ॥ १० ॥
अध्यातम रस पानथी, भीना मुनिरायारे लो ॥ अहो० ॥

ते पर परिणति रति तजी, निजतत्व समायारे लो ॥ अहो०॥११॥
अमने पण करवो घटे, कारण संयोगेरे लो ॥ अहो० ॥
पण चेतनता परिणमे, जड पुद्गल भोगेरे लो ॥अहो०। १२॥
अवर कन्या पण उच्चरे, चिंतित हवे कीजेरे लो ॥अहो०॥
पछी परमपद साधवा; उद्यम साधीजे रे लो ॥ अहो०॥१३॥
प्रभंजना कहे हें सखी, ए कायर प्राणीरे लो ॥ अहो० ॥
धर्म प्रथम करवो सदा, देवचन्द्रनी वाणीरे लो ॥ अहो० ॥ १४॥

॥ ढाल बीजी ॥

कहे साहुणी सुण कन्यका रे धन्या; ए संसार क्लेश ।
एहने जे हित करि गणे रे धन्या, ते मिथ्या आवेश रे ।
सुज्ञानी कन्या, सांभल हित उपदेश ।
जग हितकारी जिनेश छे रे, कन्या ॥ कीजे तसु आदेश रे ॥
सुज्ञानी कन्या, सांभल हित उपदेश ॥ १ ॥
खरडी ने जे धोयवुं रे कन्या, तेह न शिष्टाचार ।
रत्नत्रयी साधन करो रे कन्या, मोहाधीनता वाररे ।
सुज्ञानी कन्या, सांभल हित उपदेश ॥ २ ॥
जेह पुरुष वरवा तणी रे कन्या, इच्छे छे ते जीव ।
स्ये संबंधपणे भणो रे कन्या, धारी काल सदैव रे ।
सुज्ञानी कन्या; सांभल हित उपदेश ॥ ३ ॥

तव प्रभंजना चिंतवेरे अप्पा, तु छे अनादि अनंत ।
ते पण मुज सत्ता समोरे अप्पा, सहज अकृत महंतरे ।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ ४ ॥
भव भमतां सवि जीवथी रे अप्पा, पाम्यो सर्व संबंध ।
मात पिता भ्राता सुता हे अप्पा, पुत्र वधू प्रतिबंध रे ।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उमदेश ॥ ५ ॥
श्यो संबंध कहुँ इहाँ रे अप्पा, शत्रु मित्र पण थाय ।
मित्र शत्रुता वली लहे रे अप्पा; एम संसार स्वभावरे ।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ ६ ॥
सत्ता सम सवि जीव छे रे अप्पा, जोतां वस्तु स्वभाव ।
ए माहरो ए पारको रे अप्पा; सवि आरोपित भाव रे ।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ ७ ॥
गुरुणी आगल एहवुं रे अप्पा, जूठुं किम कहेवाय ।
स्वपर विवेचन कीजतांरे अप्पा, माहरो कोइ न थाय रें ।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ ८ ॥
भोगपणु पण भूलथी रे अप्पा, माने पुद्गल खंध ।
हुँ भोगी निज भावनो रे अप्पा; परथी नहीं प्रतिबंध रें ।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ ९ ॥
सम्यक ज्ञाने वहेंचतां रे अप्पा, हुँ अमूर्त्त चिद्रूप ।

१. आत्मा.

कर्त्ता भोक्ता तत्त्वनो रे अप्पा, अक्षय अक्रिय अनूप रे।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ १० ॥
जुदो सर्व विभावथी रे अप्पा, निश्चय निज अनुभूत।
पूर्णानंदि परिणमे रे अप्पा, नहिं पर परिणति रीत रे।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ ११ ॥
सिद्ध समो ए संग्रहे रे अप्पा, पर रंगे पलटाय।
संगांगी भावे करी रे अप्पा, अशुद्ध विभाव अपाय रे।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ १२ ॥
शुद्ध निश्चय नये करी रे अप्पा, आतम भाव अनंत।
तेह अशुद्ध नये करी रे अप्पा, दुष्ट विभाव महंत रे।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ १३ ॥
द्रव्यकर्म कर्त्ता थयो रे अप्पा, नय अशुद्ध व्यवहार।
तेह निवारो स्वपदे रे अप्पा, रमतां शुद्ध व्यवहार रे।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ १४ ॥
व्यवहारे समरे थके रे अप्पा, समरे निश्चय तिवार।
प्रवृति समारे विकल्पने रे अप्पा, तेह स्थिर परिणति साररे।
सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ १५ ॥
पुद्गल ने परजीवथी रे अप्पा, कीधो भेद विज्ञान।
बाधकता दूरे टली रे अप्पा, हवे कुण रोके ध्यान रे।

सुज्ञानी अप्पा, सांभल हित उपदेश ॥ १६ ॥
आलंबन भावन वशे रे अप्पा, धरम ध्यान प्रगटाय ।
देवचंद्र पद साधवा रे अप्पा, एहज शुद्ध उपाय रे ।
सुज्ञानी अप्पा; सांभल हित उपदेश ॥ १७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

(राग धन्याश्री)

आयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो ।
शुद्ध निमित्त आलंबन भजतां; आत्मालंबन पायो रे ।
आयो आयो रे; अनुभव आतमचो आयो ॥ १ ॥
आतमखेत्रे गुण पर्याय विधि, तिहां उपयोग रमायो ।
पर परिणति पर रीते जाणी, तास विकल्प गमायो रे ।
आयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो ॥२॥
पृथक्त्व वितर्क शुक्ल आरोही, गुण गुणी एक समायो ।
परजय द्रव्य वितर्क एकता, दुर्धर मोह खपायो रे ।
आयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो ॥ ३ ॥
अनंतानुबंधी सुभटने काढी, दर्शन मोह गमायो ।
तिरिगति हेतु प्रकृति क्षय करी, थयो आतम रस रायो रे ।
आयो आयो रे; अनुभव आतमचो आयो ॥ ४ ॥
द्वितीय तृतीय चोकडी खपावी, वेद युगल क्षय थायो ।

हास्यादिक सत्ताथी ध्वंसी, उदय वेद मिटायो रे ।
अयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो ॥ ५ ॥
थई अवेदी ने अविकारी, हण्यो संजलनो कषायो ।
मार्यो मोह चरण क्षायक करी; पूरण समता समायो रे ।
आयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो ॥ ६ ॥
घनघाती त्रिक योधा लडिया, ध्यान एकत्वने ध्यायो ।
ज्ञानावरणादिक भट पडिया, जीत निशाण घुरायो रे ।
आयो आयो से, अनुभव आतमचो आयो ॥७॥
केवल ज्ञान दर्शन गुण प्रगटया, महाराज पद पायो ।
शेष अघाति कर्म क्षीण दल, उदय अबंध दिखायो रे ।
आयो अयो रे; अनुभव आतमचो अयो ॥ ८ ॥
सयोगी केवली थया प्रभंजना लोकालोक जणायो ।
तीन कालनी त्रिविध वर्तना, एक समे ओलखायो रे ।
आयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो ॥ ९ ॥
सर्व साधवीयें वंदना कीधी, गुणी विनय उपजायो ।
देव देवी तव स्तवे गुण स्तुति, जग जय पडह वजायो रे ।
आयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो । १०॥
सहस कन्यकानें दीक्षा दीधी, आश्रव सर्व तजायो ।
जग उपकारी देश विहारी; शुद्ध धर्म दीपायो रे ।

आयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो ॥११॥
कारण योगे कारज साधे' तेह चतुर गाइजे ।
आतम साधन निर्मल साधे, परमानंद पाइजे रे ।
आयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो ॥१२॥
ए अधिकार कह्यो गुणरागे, वैरागे मन भावी ।
वसुदेवहिंड तणे अनुसारे, मुनि गुण भावना भावी रे ।
आयो आयो रे; अनुभव आतमचो आयो ॥१३॥
मुनि गुण थुणतां भाव विशुद्धे, भव विच्छेदन थावे ।
पूर्णानंद इहांथी उलसे; साधन शक्ति जमावे रे ।
आयो अयो रे, अनुभव आतमचो आयो ॥१४॥
मुनिगुण गावो भावो भावना, ध्यावो सहज समाधि ।
रत्नत्रयी एकत्वे खेलो, मेटी उपाधि अनादि रे ।
आयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो ॥१५॥
राजसागर पाठक उपगारी, ज्ञान धर्म दातारी ।
दीपचंद्र पाठक खरतरवर, देवचंद्र सुखकारी रे ।
आयो आयो रे; अनुभव आतमचो आयो ॥१६॥
नयर लींबडी मांहे रहीने, वाचंयम स्तुति गाइ ।
आतम रसिक श्रोता जन मनने, साधन रुचि उपजाइ रे ।
आयो आयो रे; अनुभव आतमचो आयो ॥१८॥

इम उत्तम गुण माला गावो; पावो हर्ष वधाइ ।
जैन धर्म मारगरुचि करता, मंगल लील सदाइ रे ।
आयो आयो रे, अनुभव आतमचो आयो ॥१८॥
पंडित श्रीदेवचन्द्रजी कृत
॥ प्रभंजना महासतीनी सज्झाय समाप्त ॥

अथ नित्यलाभजी कृत चंदनबालानी सझाय प्रारंभः

॥ ढाल पहेली ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी । ए देसी । श्री सरस्वतीना रे पाय प्रणमी करी, थुणशुं चंदनबाला जी । जेणें वीरनो रे अभिग्रह पूरियो, लाधी मंगल माला जी । १ । दान उलट धरी भवियण दीजियें, जेम लहियें जग मानो जी । स्वर्गतणां सुख सहेजें पामीयें; नासे दुर्गति स्थानो जी । दान । । २ । नयरी कोसंबी रे राज्य करे तिहां, नामें संतानिक जाणुं जी । मृगावती राणी रे सहियर तेहनी, नंदी ना में वखाणुं जी । दान । ३ । शेठ धनावो रे जिण नगरी वसे, धनवंतमां शिरदारो जी । मूलानामें रे गृहिणी जाणियें; रूपें रति अवतारो

जी । दान० । ४ । एणें अवसर श्रीवीरजिनेश्वरु, करता उग्र विहारो जी । पोषवद पडवे रे अभिग्रह मन धरी, आव्या तिण पुर सारो जी । दान० । ५ । राजसुता होये मस्तक चौर करीः कीधा त्रण्य उपवासो जी । पगमां बेडी रे रोती दुःख भरी, रहेती परघरवासो जी । दान० । ६ । खरे रे बपोरें बेठी उंबरे एकपग बाहिर एक मांहे जी । सुपडाने खूणे रे अडद ना बाकला, मुझने आपे उत्साहे जी । दान० । ७ । एहवुं धारी रे मन मांहे प्रभु, फरता आहारने काजे जी । एक दिन आव्या रे नंदीने घरे, ईर्या समिति विराजे जी । दान० । ८ । तव सा देखी रे मन हर्षित थइ; मोदक लेइ सारो जी । वहोरावे पण प्रभुजी नवि लीये; फरि गया तेणी वारो जी । दान० । ९ । नंदी जइने रे सहियरने कहे, वीर जिनेसर आव्या जी । भिक्षा काजे रे पण लेता नथी, मनमां अभिग्रह लाव्या जी । दान० । १० । तेहनां वयण सुणी निज नयरमां, घणा रे उपाय करावे जी । एक नारी तिहां मोदक लेइ करी; एक जणी गीतज गावे जी । दान० । ११ । एक नारी शृंगार सोहामणा, एक जणी बालक लेइ जी । एक जणी मूके रे वेणीज मोकली, नाटक एक करेइ जी । दान० । १२ । एणिपरें रामा रे रमणी रंग भरी; आणी हर्ष अपारो जी । वहोरावे बहु भाव भक्तें

करी; तोय न लीये आहारो जी । दान० । १३ । धन्य धन्य प्रभुजी वीर जिनेसरु; तुम गुणनो, नहिं पारो जी । डुक्कर परिसह चितमां आदर्यो; एह अभिग्रह सारो जी । दान० । १४ । एणीपरें फिरतां रे पांच मास थया; उपर दिन पचवीसो जीं । अभिग्रह सरिखो रे जोग मले नहीं, विचरे श्री जगदीशो जी । दान० । १५ ।

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नमो नमो मनक महामुनि ॥ ए देशी ॥ तेणे अवसर तिहां जाणियें, राय संतानिक आव्यो रे । चंपानगरी उपरे; सेना चतुरंगी दल लाव्यो रे ॥ तेणें अवसर तिहां जाणियें ॥ । ए आंकणी । १ । दधिवाहन नवलो थयो, सेना सघली नाठी रे । धारणी धूआ वसुमती, बांदपडआ थइ माठी रे । ते० । २ । मारगमां जातां थकां; सुभटने पूछे राणी रे । शुं करशो अमने तमें, करशुं गृहिणी गुणखाणी रे । ते० । ३ । तेह वचन श्रवणें सुणी; सतीय शिरोमणि ताम रे । ततक्षण प्राण तज्यां सही, जो जो कर्मनां काम रे । ते० । ४ । वसुमती कुमरी लेइ करी, आव्यो निजघर मांही रे । कोप करी घरणी तिहां, देखी कुमरी उत्साही रे । ते० । ५ । प्रात समय गयो वेचवा, कुमरीने निरधारो । वेश्या पूछे मूल्य जेहनुं, ते कहे

शतपंच दिनारो रे । ते० । ६ । एहवे तिहांकरणे आवियो, शेठ धनावो नाम रे । कहे कुमरी लेशुं अमें; खासा आपशुं दाम रे । ते० । ७ । शेठ वेश्या झगडे तिहां, मांहो मांहे विवादो रे । चक्केसरी सान्निध्य करी, वेश्या उतारयो नादो रे । ते० । ८ । वेश्याथी मूकावीने, शेठ तेडी घरे आवे रे । मनमां अति हर्षित थको; पुत्री कहीने बोलावे रे । ते० । ९ । कुमरी रूपें रूअडी, शेठ तणुं मन मोहे रे । अभिनव जाणे सरस्वती, कला चोशठ सोहे रे । ते० । १० । काम काज घरनां करे; बोले अमृत वाणी रे । चंदनवाला तेहनुं, नाम दीधुं गुण जाणी रे । ते० । ११ । चंदनवाला इक दिने, शेठ तणा पग धोवे रे । वेणी उपाडी शेठजी; मूला बेठी जोवे रे । ते० । १२ । ते देखीने चिंतवे; मूला मन संदेह रे । शेठजी रूपें मोहिया, करशे गृहिणी एह रे । ते० । १३ । मनमां क्रोध करी घणो, नावीने तेडावी रे । मस्तक भद्र करावीयुं; पग मां बेडी जडावी रे । ते० । १४ । ओरडामांहि घालीनें, तालुं देइने जावे रे । मूला मन हर्षित थइ, बीजे दिन शेठ आवे रे । ते० । १५ । शेठ पूछे कुमरी किहां; घरणीने तिण काले रे । ते कहे हुँ जाणुं नहीं; एम ते उत्तर आले रे । ते० । १६ । एम करतां दिन त्रण थया, तोहि न जाणे बात रे । पाडोशण एक डोकरी

सघली कही तेणें वात रे । ते० । १७ । काढी बार उघाडीने उंबरा वच्चे बेसारी रे । आप्या अडदना बाकुला, सुपडामांहि तिण वारी रे । ते० । १८ । शेठ लूहार तेडण गयो, कुंवरी भावना भावे रे । इण अवसर वहोराविये, जो कोइ साधुजी आवे रे । ते० । १९ । इति ।

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ बेडले भार घणो छे राज; वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥ इण अवसर श्रीवीर जिनेसर, जंगम सुरतरु आया रे । अतिभावे ते चंदनबाला, वांदे जिन सुखदाया ॥ १ ॥ आघा आम पधारो पूज्य; अम घर वहोरण वेला ॥ ए आंकणी ॥ आज अकालें आंबो महोर्यो; मेह अमी रस वूठा रे । कर्मतणा भय सर्वे नाठा, अमने जिनवर तूठा । आघा आम पधारो वीरो मुझने पावन कीजें ॥ २ ॥ एम कहीने अडदना बाकुला, जिनजीने वहोरावे रे । योग्य जाणीने प्रभुजी वहोरे, अभिग्रह पूरण थावे ॥ आघा० ॥ ३ ॥ बेडी टलीने झांझर हूआं, मस्तक वेणी रूडी रे; । देव करे तिहां वृष्टि सुवननी; साडी बारह कोडी ॥ आघा० ॥ ४ ॥ वात नगरमां सघले व्यापी, धन लेवा नृप आवे रे । मूलाने पण खबर थइ छे, ते पण तिहां करो जावे ॥ आघा० ॥ ५ ॥ शासनदेवी सान्निध्य करवा

बोले अमृत वाणी रे । चंदनबालानुं छे ए धन; सांभल गुणमणिखाणी ॥ आघा० ॥ ६ ॥ चंदनबाला संयम लेशे, तव ए धन खरचाशे रे । राजाने एणि परें समजावे, मनमां धरी उल्लासे ॥ आघा० ॥ ७ ॥ शेठ धनावो कुमरी तेडी, धन लेई घर आवे रे । सुखें समाधें तिहां कणे रहेतां, मनमां हर्ष न मावे ॥ आघा० ॥ ८ ॥ हवे तिण कालें वीर जिणंदजी; हुआ केवल नाणी रे । चंदनबाला वात सुणीने; हियडामां हरखाणी ॥ आघा० ॥ ९ ॥ वीरकने जइ दीक्षा लीधी, तत-क्षण कर्म खपाव्यां रे । चंदनबाला गुणहविशाला, शिवमंदिर सीधाव्यां ॥ आघा० ॥ १० ॥ एहवुं जाणी रूडा प्राणी; करजो शियल जतन्न रे । शियलथकी शिवसंपद लहीयें; शियले रूपरतन्न ॥ आघा० ॥ ११ ॥ नयन वसु संयमनें भेदें, संवत (१७२८) सुरत मझारे रे । वदि आषाढ तणी छठ दिवसें गुण गाया रविवारें ॥ आघा० ॥ १२ ॥ श्री विद्यासागर सूरि शिरोमणि, अचलगच्छ सोहाया रे । महियल महिमा अधिक विराजे; दिन दिन तेज सवाया ॥ आघा० ॥ १३ ॥ वाचक सहज सुंदरनो सेवक, हर्ष धरी चित्त आणी रे । शील भली परें पालो भवियण, कहे नित्यलाभ ए वाणी ॥ आघा० ॥ ॥ १४ ॥ इइि ॥

॥ अथ श्री बारभावनानी बार सद्याय प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पास जिनेसर पय नमी, सद्गुरुने आधार ॥ भवियण जनने हित भणी, भणशुं भावना बार । १ । प्रथम अनित्य अशरण पणुं, एह संसार विचार । एकलपणुं अन्यत्व तिम, अशुचि आश्रव संभार । २ । संवर निर्भर भावना, लोक सरूप सुबोधि दुल्लह भावन जिन धरम, एणीपरें कर जीउ सोधि । ३ । रसकूपी रस वेधिओ, लोहथकी होये हेम । जीउ इण भावन शुद्ध हुये, परम रूप लहे तेम । ४ । भावविना दाना दिकां, जाणे अलूणुं धान । भाव रसांग मल्या थकी, त्रुटे करम निदान । ५ ।

॥ ढाल पहेली ॥

॥ भावनानी देशी ॥ पहेली भावना एणी परें भावीयेंजी । अनित्य पणुं संसार । डाभ अणी ऊपर जल बिंदुओ जी, इंद्र धनुष अनुहार । १ । सहेज संवेगी सुंदर आतमा जी, धर जिन धर्मसुं रंग । चंचल चपलानी परें चिंतवे जी; कृत्रिम सविहु संग । स० । २ । इंद्रजाल सुहणें शुभ अशुभशुं जीः

कूडो तोष ने रोष । तिम भ्रम भून्यो अथिर पदारथें जी, श्यो कीजें मन शोष । स० । ३ । ठार ञेह पामरना नेहज्युं जी, ए यौवन रंग रोल । धन संपद पण दीसे कारमी जी, जेहवा जलधिकल्लोल । स० ४। मुंज सरिखे मागी भीखडी जी, राम रह्या वनवास । इण संसारें ए सुख संपदा जी; संध्या राग विलास ।। स० ।। ५ सुंदर ए तनु शोभा कारमी जो; विणसंतां नहीं वार । देवतणे वचनें प्रति बूजीयो जी, चक्री सनत कुमार ।। स० ।। ६ ।। सूरज राहू ग्रहणें समझीओ जी, श्री कीर्तिधर राय। करकंडू प्रतिबूझ्यो देखीने जी, वृषभजराकुल काय ।स०।७। किहां लगें धूआ धवल हरा रहे जी, जल परपोटा जोय । आउखुं अथिर तिम मनुष्यनुं जी, गर्व म करसो कोय । जे च्रणमां खेरू होय ।। स० ।। ८ ।। अतुलि बल सुखर जिनवर जिस्या जी, चक्रि हरिबल जोडी । न रह्यो एणे जगें कोइ थिर थइ जी, सुरनर भूपति कोडी ।। स० ।। ९ ।।

॥ दोहा ॥

॥ पल पल छीजे आउखुं, अंजलि जल ज्युं एह । चलते साथें संबलो, लेइ सके तो लेह ।। १ ।। ले अचिंत्य गलशुं ग्रही; समय सींचाणो आवि । शरण नहीं जिनवयण विण, तेणे हवे अशरण भावि ।। २ ।।

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग रामगिरी, राम भणे हरि ऊठियें ॥ ए देशी ॥

बीजी अशरण भावना, भावो हृदय मझार रे । धरम विना परभव जतां; पामें न लहीश पार रे । जाइश नरक दुवार रे, तिहां तुज कवण आधार रे ॥ १ ॥ लाल सुरंगा रे प्राणीआ मूकने मोह जंजाल रे, मिथ्या मति सवि टाल रे, माया आल पंपाल रे ॥ ला० ॥ २ ॥ मात पिता सुत कामिनी; भाइ भयणि सहाय रे । में में करतां रे अज परें, कर्मे ग्रह्यो जीव जाय रे । आडो कोइ नवी थाय रे, दुःख नलाये वहेंचाय रे ॥ ला० ॥ ३ ॥ नंदनी सोवन डूंगरी, आखर नावी कोकाज रे । चक्री सुभूप ते जलधिमां, हारयुं खट खंड राज रे । बूडयो चरम जहाज रे, देव गया सवि भाज रे, लोभें गइ तस लाज रे ॥ ला० ॥ ४ ॥ द्वीपायन दही द्वारिका, बलवंत गोविंद राम रे । राखी न शक्या रे राजवी, मात पिता सुत धाम रे । तिहां राख्यां जिननाम रे; शरण कीओ नेमिस्वाम रे । व्रत लेइ अभिराम रे, पोहोता शिवपुर ठाम रे ॥ ला० ॥ ५ ॥ नित्य मित्र सम देहडी, सयणां पर्व सहाय रे । जिनवर धर्म उगारसे, जिम ते वंदनिक भाय रे । राखे मंत्रि उपाय रे, संतोष्यो वली राय रे; टाल्या तेहना अपाय रे । ला० । ६ ।

जनम जरा मरणादिका, वयरी लागा छे केड रे। अरिहंत शरणुं ते आदरी, भव भ्रमण दुःख फेड रे, शिवसुंदरी घर तेडे रे नेह नवल रस रेड रे, सींची सुकृत सुरपेड रे।ला०।७।

॥ दोहा ॥

। थावच्चा सुत थरहरयो, जोर देखी जम धाड । संयम शरणुं संग्रह्युं, घण कण कंचण छांड । १ । इणं शरणें सुखिया थया, श्री अनाथी अणगार । शरण लह्या विण जीवडा, इणी परें रुले संसार । इति द्वितिय भावना

। ढाल त्रीजी ।

। राग मारुणी । त्रीजी भावना इणीपरें भावीयें रे। १। एह स्वरूप संसार । कर्मवशें जीव नाचे नवनव रंगशुं रे, ऐ ऐ विविध प्रकार रे ।१। चेतन चेतीयें रे; लही मानव अवतार । चे० । भव नाटकथी जो हुओ उभगो रे; तो छांडो विषय विकार रे । चे० । २ । कबही भूजल जलणानिल तरुमां भम्यो रे, कबही नरक निगोद । विति चउरिंद्रियमांहे केइ दिन वस्यो रे, कबहींक देव विनोद । चे० । ३ । कीडी पतंग हरि मातंग पणुं भजे रे; कबही सर्प्प सीयाल । ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य कहावतो रे; होवे शूद्र चंडाल । चे० । ४ । लख चोराशी चउटे रमतो रंगशुं रे, करी करी नव नव वेश। रूप कुरूप धनी

निर्द्रव्य सोभागिओ रे; दुर्भागी दुरवेश ॥ चे० ॥ ५ ॥ द्रव्य क्षेत्र सूक्ष्मने बादर भेदशुं रे, काल भाव पण तेम । अनंत अनंता पुद्‌गल परावर्त्तन करयां रे, कह्यो पन्नवणा एम ॥चे० ॥ ६ ॥ भाइ वहिन नारी तातपणुं भजे रे, मातपिता होये पूत्र। तेहज नारी वेरीने वलि वालहो रे, एह संसारह सूत्र. ॥ चे० ॥ ७ ॥ भवनभानु जिन भांख्यां चरित्र सुणी घणा रे; समज्या चतुर सुजाण । कर्म विवरवश मूकी मोह विटंवना रे, मल्या सुगति जिन भाण ॥ चे० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥इम भव भव जे दुख सह्यां; ते जाणे जगनाथ । भयभंजण भावठ हरण, न मल्यो अविहड साथ ॥ १ ॥ तिण कारण जीव एकलो छोडी राग गलपास । सवि संसारीजीवशुं; धरी चित्त भाव उदास ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राग गोडी ॥ पूत न कीजे हो साधु विसासडो ॥ चोथी भावना भवियण मन धरो, चेतन तुं एकाकी रे। आव्यो तिम जाइश परभव वली, इहां मूकी सवि बाकी रे । मम करो ममता रे समता आदरो । १ । आणो चित्त विवेको रे । स्वारथियां सज्जन सहुए मल्यां; सुख दुख सहेशे एको रे । मम० । २ ।

वित्त वहेंचण आवी सहुये मले, विपति समय जाय नाशी रे। दव बलतो देखी दश दिशें पुगे, जिम पंखी तरुवासी रे ।मम०। ।३। खट खंड नवनिधि चौद रयण धणी; चोसठ सहस्स सुनारी रे। छेहडे छोडी ते चाल्या एकला, हारया जेम जूआरी रे। मम० । ४ । त्रिभुवन कंटक विरुद धरावतो, करतो गर्व गुमानो रे । आगा विण नागा तेसहु चल्या; रावण सरिखा राजानो रे । मम० । ५ । माल रहे घर स्त्री विश्रामिता, प्रेत-वना लगें लोको रे । चय लगें काया रे आखर एकलो, प्राणी चले परलोको रे । मम० ।६। नित्य कलहो वहु मेलें देखीओ विहुँ पण खटपट थाय रे । वलयानी परें विहरिस एकलो, इम बूज्यो नमीरायो रे । मम० । ७। इति चतुर्थ भावना ।

। दोहा ।

। भवसायर वहु दुख जलें, जामण मरण तरंग । ममता तंतु तिणें ग्रह्यो; चेतन चतुर मातंग । १ । चाहे जो छोडण भणी, तो भज भगवंत महंत । दूर करे पर बंधने, जिम जलथी झलकंत । २ ।

। ढाल पांचमी ।

। राग केदारो गोडी । कपूर हुवे अति उजलो रे । ए देशी । पांचमी भावना भावीयें रे, जिउ अन्यत्व विचार। आपसवारथी

ए सहु रे, मलिओ तुज परिवार । १ । संवेगी सुंदर, बूज मा मूंझ गमार । तहारुं को नहीं इण संसार, तुं केहनो नहि निरधार । सं० । १ । पंथसिरे पंथी मल्या रे, कीजें किणशुं प्रेम । राति वसे प्रह उठ चले रे; नेह निवाहे केम । सं० ।३। जिम-मेलो तीरथ मले रे, जन वणजनी चाह । के त्रोटो के फायदो रे, लेइ लेइ निजघर जाय । सं० । ४ । जिहां कारज जेहनां सरे रे, तिहां लगें दाखे नेह । सूरीकंतानी परे रे; छटकी देखाडे छेह । सं० । ५ । चुलणी अगज मारवा रे, कूडुं करी जतुगेह । भरत बाहुबलि झूजींया रे, जो जो निजना नेह । सं० । ६ । श्रेणिक पुत्रें वांधीओ रे, लीधुं वेहेंची राज्य । दुःख दीधुं बहु तातने रे, देखो सुतनां काज । सं० । । ७ । इणभावना शिवपद लहे रे, श्री मरुदेवी माय । वीर-शिष्य केवल लह्युं रे, श्री गौतम गणराय । सं० । ८ । इति पंचम भावना ।

। दोहा ।

। मोह वसुं मन मंत्रवी; इंद्रिय मल्या कलाल । प्रमाद मदिरा पाइ के, बांध्यो जीव भूपाल । १ । कर्म जंजीर जडी करी, सुकृत माल सवि लींध । अशुभ विरस दुरगंधमय; तनगो तहरें दीध । २ ।

॥ ढाल छठी ॥

॥ राग सिंधु सामेरी ॥ छठी भावना मन धरो, जीव अशुची भरी ए काया रे; शी माया रे; मांडे काचा पिंडशुं ए। १। नगर खाल परें नितु वहे; कफ मल मूत्र भंडारो रे, तिम द्वारो रे, नर नव द्वादश नारिनां ए। २। देखी दुरगंध दूरथी, तुं मुह मचकोडे माणे रे, नवि जाणे रे; तिण पुद्गल निज तनु भर्युं ए। ३। मांस रुधिर मेदारसें, अस्थि मज्जानर वाजे रे, शुं रीजे रे, रूप देखी देखी आपणुं ए। ४। कृमिवालादिक कोथली, मोहरायनी चेटी रे, ए पेटी रे, चर्म जडी घणा रोगनी ए। ५। गर्भावास नव मासमां; कृमिपरें मलमांव सियो रे, तुं रसियो रे, उंधे माथें इम रह्यो ए। ६। कनक कुमरी भोजन भरी; तिहां देखी दुरगंध बूज्या रे; अति जूज्या रे, मल्लि मित्र निज कर्मशुं ए। ७। इति छठी भावना।

॥ दोहा ॥

॥ तन छिल्लर इंद्री मच्छा; विषय कलण जंबाल॥ पाप कलुष पाणी भर्युं, आश्रव वहे गडनाल। १। निर्मल पंख सहेज सुगति; नाण विनाण रसाल। शुं बगनी परें पंकजल; चूंथे चतुर मराल॥ २॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ राग धोरणी ॥ आश्रवभावना सातमी रे, समजो सुगुरु

समीप । क्रोधादिक कांइ करो रे; पामी श्रीजिन दीपो रे । १ ।
सुण सुण प्राणीया, परिहर आश्रव पंचो रे । दशमे अंगें कह्या
जेहना दुष्ट प्रपंचो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ होंशें जे हिंसा करे रे,
ते लहे कडुक विपाक । परिहोसें गोत्रासनी रे, जो जो अंग-
विपाको रे ॥ सु० ॥३॥ मिथ्या वयणों वसु नड्यो रे; मंडिक
परधन लेई । इण अब्रह्मं रोलव्या रे, इंद्रादिक सुर केई रे
॥ सु० ॥ ४ ॥ महा आरभ परिग्रहें रें; ब्रह्मदत्त नरय पहुत्त ।
सेव्यां शत्रुपणुं भजे रे, पांचे दुरगति दूतो रे ॥सु० ॥ ५ ॥
छिद्र सहित नावा जलें रे; बूडे नीर भराय । तिम हिंसादिक
आश्रवें रे; पापें पिड भरायो रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ अविरति लागे
एकेंद्रिया रे, पाप स्थान अढार । लागे पांचेही क्रीया रे,
पंचम अंग विचारो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ कटुक क्रिया थानक
फलां रे, वोल्या बीजे रे अंग । कहेतां हीयडुं कमकमे रे,
विरुओ तास प्रसंगो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ मृग पतंग अलि माछलो
रे; करी एक विषय प्रपंच । दुखिया ते किम सुख लहे रे, जस
परवस एह पंचो रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ हास्य निंद विकथा वसें रे;
नरक निगोदे रे जात । पूरवधर श्रुत हारीनें रे, अवरांनी शी
वातो रे ॥ सु० ॥ १० ॥ इति सप्तम भावना ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुभ मानस मानस करी, ध्यान अमृत रस रेलि ॥ नव-दल श्रीनवकार पय, करी कमलासन केलि । १ । पातक पंक पखालीनें; करी संवरनी पाली । परम हंस पदवी भजो, छोडी सकल जंजाल । २ ।

। ढाल आठमी ।

। उलूनी देशी । आठमी संवर भावनाजी, धरी चितसु एक तार । समिति गुप्ति सूधी धरोजी, आपो आप विचार । सलूणा, शांति सुधारस चाख । ए आंकणी । विरस विषय फल फूलडेजी, अटतो मन अलि राख । स० । १ । लाभ अलाभें सुख दुखेंजी, जीवित मरण समान । शत्रु मित्र सम भावतो जी; मान अने अपमान । स० । २ । कहीयें परिग्रह छांडशु जी, लेशु संयम भार । श्रावक चिंते हुँ कदा जी; करीश संथारो सार । स० । ३ । साधु आशंसा इम करे जी, सूत्र भणीश गुरु पास । एकल मल्ल प्रतिमा वही जी, करीश संलेपण खास । स० । ४ । सर्व जीवहित चिंतवे जी, वयर मकर जगमित्त । सत्य वयण मुख भांखियें जी, परिहर परतु वित्त । स० । ५ । काम कटक भेदण भणी जी, धर तु शीलसनाह । नवविध परिग्रह मूकतां जी, लहियें सुख अथाह

। स० । ६ । देव मणुअ उपसर्गशु जी, निश्चल होइ सधीर। बावीश परिसह जीतायें जी, जिम जींत्या श्रीवीर । स० । ७।
। इति अष्टम भावना ।

। दोहा ।

। दृढ प्रहारि दृढ ध्यान धरी, गुणनिधि गज सुकुमाल । मेतारज मद न भमो, सुकोशल सुकुमाल । १ । इम अनेक मुनिवर तरया, उपशम संवर भाव। कठिन कर्म सवि निर्जरियां, तिण निर्झर प्रस्ताव । २ ।

। ढाल नवमी ।

। राग गोडी, मन भमरा रे । ए देशी । नवमी निर्जर भावना ; चित चेतो रे । आदरो व्रत पच्चरकाण । चतुर चित चेतो रे । पाप आलोचो गुरु कने । चि० । धरियें विनय सुजाण । च० । १ । वेयावच्च बहुविध करो चि० । दुर्बल बाल गिलान । च० । आचारज वाचक तणो । चि० । शिष्य साधर्मिक जाण । च० । २ । तपसी कुल गण संवनो चि०। थिविर प्रवर्त्तक वृद्ध । च० । चैत्य भक्ति बहुनिर्जरा । चि० । दशमे अंग प्रसिद्ध । च० । ३ । उभय टंक आवश्यक करो । चि० । सुंदर करि सद्याय । च० । पोसह सामायिक करो । चि० । नित्य भत्यें नियमन माय । च० । ४ । कर्मभूडन

कनकावली । चि० । सिंहनिक्रीडित दोय । च० । श्रीगुण रयण संवत्सरू । चि० । साधु पडिमा दश दोय । च० । ५ । श्रुत आराधन साचवो । चि० । योग वहन उपधान । च० । शुक्लध्यान सूधुं धरो । चि० । श्री आंबिल वर्द्धमान । च० । । ६ । चौद सहस्स अणगारमां । चि० । धन धन्नो अणगार । च० । स्वयमुख वीर प्रशंसीओ । चि० । खंधक मेघकुमार । च० । ७ । इति नवम भावना ।

॥ दोहा ॥

॥ मन दारु तननालि करि, ध्यानानल सलगावि । कर्म-कटक भेदण भणी, गोला ज्ञान चलावि ॥ १ ॥ मोहराय मारीकरी, उंचो चढी अक्लोय । त्रिभुवन मंडप मांडणी; जिम परमानंद होय ॥ २ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग गोडी, जंबूद्वीप मझार ॥ ए देशी ॥ दशमी लोक स्वरूप रे, भावना भावोयें; निसुणि गुरु उपदेशथी ए ॥ १ ॥ उर्ध्वपुरुष आकार रे, पग पहूला धरी, कर दोउ कटि राखियें ए ॥ २ ॥ इण आकारे लोकरे, पुद्गल पूरीओ; जिम काज-लनी कुपली ए ॥ ३ ॥ धर्माधर्माकाश रे, देश प्रदेश ए, जीव अनंतें पूरीओ ए ॥ ४ ॥ सात राज देशोन रे, उर्द्ध

तिरिय मली, अधोलोक सात साधिकूं ए।५।चौदराज त्रसनाडी रे त्रसजीवालय, एक रजू दीर्धविस्तरू ए।६। उर्ध्वसुगलय सार रे; निरय भुवन नीचें, नामें नर तिरि दो सुरा ए।७। द्वीप समुद्र असंख्य रे, प्रभु मुख सांभली; राय ऋषि शिव समजीओ ए ।८। लांवी पोहोली पणयाल रे, लखजोयण लही, सिद्धशिला शिर ऊजली ए।९। उंचा धनुसय तीन रे, तेत्रीश साधिकें, सिद्ध योजननें छेहडे ए।१०। अजर अमर निकलंक रे, नाण दंसण मय; ते जोवा मन गह गहे ए।११। इति दशम भावना।

॥ दोहा ॥

॥ वार अनंती फरसीओ, छाली वाटक न्याय। नाण विना नवि संभरे, लोक भ्रमण भडवाय।१। रत्नत्रय त्रिहुं भुवनमें, दुल्लह जाणी दयाल। बोधि रयण काजें चतुर; आगम खाणि संभाल।१।

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ राग खंभाती ॥ दश दृष्टांते दोहिलो रे, लाधो मणुअ जमारो रे। दुल्लहो उंबर फूलज्युं रे; आरज घर अवतारो रे। मोरा जीवन रे; बोधि भावना इग्यारमी रे, भावो हृदय मजारो रे, भावो हृदय मजारो रे॥ मो०॥ १॥ ए आंकणी॥ उत्तम

कुल तिहां दोहिलो रे; सद्गुरु धर्म संयोगो रे। पांचें इंद्रिय परवडां रे, दुल्लहो देह निरोगो रे ॥ मो० ॥ २ ॥ सांभलवुं सिद्धांतनुं रे, दोहिलुं तस चित्त धरवुं रे। सूधी सद्दहणा धरी रे, दुक्कर अंगें करवुं रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सामग्री सघली लही रे, मूढ सुधा ममहारो रे। चिंतामणि देवें दीओ रे; हारचो जेम गमारो रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ लोह कीलकने कारणे रे, कुण यान जलधिमां फोडे रे। गुण कारण कोण नवलखो रे, हार हीयानो त्रोडे रे ॥ मों० ॥ ५ ॥ बोधि रयण उवेखीनें रे, कोण विषयार्थें दोडे रे। कांकर मणि समोवड करे रे, गज वेचे खर होडे रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ गीत सुणी नटणी कने रे, क्षुल्लकें चित्त विचारयुँ रें। कुमारादिक पण समजीया रे, बोधि रयण संभारयुं रे ॥ मो० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परिहर हरिहर देव सवि; सेव सदा अरिहंत ॥ दोष रहित गुरु गणधरा; सुविहित साधु महंत ॥ १ ॥ कुमति कदाग्रह मूकतुँ श्रुत चारित्र विचार। भवजल तारण पोतसम; धर्म हियामां धार ॥ २ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ डुंगरीयानी देशी ॥ धन धन धर्म जगहित करु, भाख्यो

भलो जिनदेव रे ॥ इह परभव सुख दायको, जीवडा जनम लगि सेव रे ॥ १ ॥ भावना सरस सुर वेलडी, रोपी तुं हृदय आराम रे । सुकृत तरु लहिय बहु पसरती, सफल फलशे अभिराम रे ॥ भा० ॥ २ ॥ क्षेत्रशुद्धि करिय करुणा रसें, काढि मिथ्यादिक शाल रे । गुपति त्रिहुँ गोपी रूडी परें, नीक तुं सुमतिनी वाल रे ॥ भा० ॥ ३ ॥ सींचजे सुगुरु वचनामृतें, कुमति कंथेर तजी संग रे । क्रोध मानादिक सूकरा, वानरो वारि अनंग रे ॥ भा० ॥ ४ ॥ सेवता एहने केवली, पन्नर सय तीन अणगार रे । गौतम शिष्य शिवपुर गया, भावतां देव गुरु सार रे ॥ भा० ॥ ५ ॥ शुक परिव्राजक सीधलो, अर्जुनमाली शिव वास रे । राय परदेशी जे पापिओ; कापिओ तास दुखपास रे ॥भा०॥६॥ दुसम समय दुप्पसह लगें, अविचल शासन एह रे । भावशुं भवियण जे भजे; तेह शुभमति गुण गेहरे ॥ भा० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

तपगछपति विजय देवगुरू, विजयसिंह मुनिराय । शुद्ध धर्म दायक सदा, प्रणमो एहना पाय ॥ १ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ राग धनाश्री ॥ तुमें भावो रे; भवि इणी परें भावना

भावो । तन मन वयण धर्म लय लावो, जिम सुख संपद पावो रे ॥ भ० ॥ १ ॥ ललना लोचन चित न डोलावो; धन कारण कांइ धावो । प्रभुशुं तारो तार मिलावो, जो होय शिवपुर जावो रे । कांइ गर्भावास न आवो रे ॥ भ० ॥ २ ॥ जबूनी पेरें जीव जगावो, विषय थकी विरमावो । ए हित शीख अमारी मानी, जग जस पडह वजावो रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ श्री जशसोम विबुध वैरागी, जग जस चिहु खंड चावो । तास शिष्य कहे भावना भणतां; घर घर होये वधावो रे ॥भ०॥४॥

॥ दोहा ॥

भोजन नभ गुण वरस शुचि; सित तेरस कुजवार । भगत हेतु भावन भणी, जेसलमेर मझार ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति श्री जशसोम शिष्यजयसोम कृत द्वादश भावना संपूर्ण ॥

पंडित श्री देवचंद्रजी कृत—

॥ साधुनी पंच भावना ॥

(दोहा)

स्वस्ति सीमंधर परम, धर्म धाम सुखठाम ।
स्यादवाद परिणाम धर, प्रणमुं चेतन राम ॥ १ ॥

महावीर जिनवर नमी; भद्रबाहू सूरीश ।
वंदी श्रीजिनभद्र गणी; श्रीक्षेमेंद्र मुनीश ॥ २ ॥
सद्गुरु शासनदेव नमी, बृहत्कल्प अनुसार ।
शुद्ध भावना साधुनी, भाखिश पंच प्रकार ॥ ३ ॥
इंद्रिय योग कषायने, जीपे मुनि निःशंक ।
इण जीते कुध्यान जय, जाए चित्त तरंग ॥ ४ ॥
प्रथम भावना श्रुत तणी, बीजी तप तिय सत्व ।
तुरिय एकत्व भावना, पंचम भाव सुतत्व ॥ ५ ॥
श्रुत भावना मन थिर करे, टाले भवनो खेद ।
तप भावना काया दमे, वामे वेद उमेद ॥ ६ ॥
सत्वभाव निर्भय दशा; निज लघुता इक भाव ।
तत्व भावना आत्मगुण, सिद्धि साधना दाव ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

(लोक स्वरूप विचारो आतम हित भणी रे, ए देशी)

श्रुत अभ्यास करो मुनिवर सदा रे, अतिचारे सहु टालि ।
हीण अधिक अक्षर मत उच्चरो रे; शब्द अर्थ संभालि ॥
श्रुत अभ्यास करो मुनिवर सदा रे ॥ १ ॥
सूक्ष्म अर्थ अगोचर दृष्टिथी रे, रूपी रूप विहीण ।
जेह अतीत अनागत वर्तता रे; जाणे ज्ञानी लीन ॥श्रु०॥२॥

नित्य अनित्य एक अनेकता रे, सदसद्भाव स्वरूप।
छए भाव एक द्रव्य परिणम्या रे, एक समयमां अनूप॥श्रु०॥३॥
उत्सर्ग अपवाद पदे करी रे, जाणे सहु श्रुत चाल।
वचन विरोध निवारे युक्तिथी रे; थापे दूषण टाल॥श्रु०॥४॥
द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक धरे रे, नय गम भंग अनेक।
नय सामान्य विशेषे वहु ग्रहे रे, लोकालोक विवेक॥श्रु०॥५॥
नंदीसूत्रे उपगारी कह्यो रे, वली असुच्चा ठाम।
द्रव्यश्रुतने वांद्यो गणधरे रे, भगवइ अंगे नाम श्रु०;॥६॥
श्रुत अभ्यासे जिनपद पामिये रे, छठ्ठे अंगे साख।
श्रुतनाणी केवलनाणी समो रे; पन्नवणिज्जे भाख श्रु०,॥७॥
श्रुतधारी आराधक सर्वनो रे, जाणे अर्थ स्वभाव।
निज आतम परमातम सम ग्रहे रे, ध्यावे ते नय दाव; श्रु०॥८॥
संयम दरशन ते ज्ञान वधे रे, ध्याने शिव साधंत।
भव स्वरूप चउगतिनो ते लखे रे, तेणे संसार तजंत श्रु०॥९॥
इंद्रिय सुख चंचल जाणी तजे रे; नव नव अर्थ तरंग।
जिम जिम पामे तिम मन उल्लसे रे; वसे न चित्त अनंग;श्रु०॥१०॥
काल असंख्याताना भव लखे रे, उपदेशक पण तेह।
परभव साथी आलंबन खरो रे, चरण विना शिव गेह; श्रु०॥११॥
पंचम काले श्रुतवल पण घट्यो रे, तो पण एह आधार।

देवचंद्र जिनमतनो तत्व ए रे, श्रुतशुं धरजो प्यार, श्रु० ॥१२॥

॥ ढाल वीजी ॥

(अनुमति दीधी माये रोवती, ए देशी)

रयणावली कनकावली, मुक्तावली गुणरयण ।
वज्जमध्य ने जवमध्य ए, तप करीने हो जीपो रिपु मयण ॥ १ ॥
भवियण तप गुण आदरो, तप तेजेरे, छीजे सहु कर्म ।
विपय विकार सहु टले; मन गंजे रे भंजे भव भर्म,
भवियण तप गुण आदरो० ॥ २ ॥
जोगे जय इंद्रिय जय तदा; तप जाणो हो कर्मसूडण सार ।
उवहाणे योग दुहा करी, शिव साधे रे सूधा अणगार;
भवियण तप गुण आदरो० ॥ ३ ॥
जिम जिम प्रतिज्ञा दृढ थको; वैरागीओ तपसी मुनिराय,
तिम तिम अशुभ दल छीजवे; रवि तेजेरे जिम शीत विलाय,
भवियण तप गुण आदरो० ॥ ४ ॥
जे भिक्षु पडिमा आदरे; आसन अकंप सुधीर ।
अंतिलीन समता भावमां, तृण पेरे हो जाणंत शरीर;
भवियण तप गुण आदरो० ॥ ५ ॥
जिण साधु तप तलवारथी; सूडचो छे हो अरि मोह गयंद ।
तिण साधुनो हुँ दास छूं, नित्य वंदुं रे तस पय अरविंद;

भवियण तप गुण आदरो० ॥ ६ ॥

आचार सूयगडांगमां, तिम कह्यो भगवई अंग।
उत्तराध्ययन गुणतीसमें, तप संगे हो सहु कर्मनो भंग;
भवियण तप गुण आदरो० ॥ ७ ॥

ते दुविध दुक्कर तप तपे, भव पास आश विरक्त।
धन्य साधु मुनि ढंढण समा, ऋषि खंधक हो तिसग कुरुदत्त,
भवियण तप गुण आदरो० ॥ ८ ॥

निज आतम कंचन भणी, तप अग्नि करी शोधंत।
नवनवि लब्धि बल छते, उपसर्ग हो ते सहंत महंत,
भवियण तप गुण आदरो० ॥ ९ ॥

धन्य तेह जे धन गृह तजी, तन स्नेहनो करी छेह।
निःसंग वनवासे वसे; तपधारी हो ते अभिग्रह गेह,
भवियण तप गुण आदरो० ॥ १० ॥

धन्य तेह गच्छ गुफा तजी, जिनकल्प भाव अफंद।
परिहार विशुद्ध तप तपे, ते वंदे हो देवचंद्र मुनींद,
भवियण तप गुण आदरो० ॥११॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

(हवे राणी पदमावती जीवराशि खमावे ए देशी)

रे जीव साहस आदरो, मत थाओ दीन।

सुख दुःख संपद आपदा; पूरव कर्म आधीन; रे जीव० ॥१॥
क्रोधादिक वशे रण रमे, सह्यां दुःख अनेक।
ते जो समतामां सहे; तो तुज खरो विवेक, रे जीव० ॥ २॥
सर्व अनित्य अशाश्वतो, जेह दीसे एह।
धन तन सयण सगां सहु, तिणस्युं स्यो नेह; रे जीव० ॥३॥
जिम बालक वेलु तणा, घर करीय रमंत।
तेह छते अथवा ढहे, निज निज गृह जंत, रे जीव० ॥ ४ ॥
पंथी जेम सराहमां, नदी नावनी रीति।
तिम ए परियण तो मिल्यो, तिणथी शी प्रीति; रे जीव० ॥५॥
ज्यां स्वारथ त्यां सहु सगां, विण स्वारथ दूर।
पर काजे पापे भले, तुं केम होय शूर; रे जीव० ॥ ६ ॥
तज बाहिर मेलावडो; मिलियो वहु वार।
जे पूरव मिलियो नहिं, तिणस्युं धर प्यार; रे जीव० ॥ ७ ॥
चक्री हरि बल प्रतिहरि, तस विभव अमान।
ते पण काले संहर्या, तुज धन स्यो मान; रे जीव० ॥ ८ ॥
हा हा हुंतो तुं फिरे, परियण नी चित।
मरके पडयां कहे ताहरी, कोण करसे चिंत, रे जीव० ॥ ९ ॥
रोगादिक दुःख ऊपने; मन अरति मधरेव।
पूरव निजकृत कर्मनो; ए अनुभव हेव, रे जीव० ॥१०॥

करकंडु नमि नहगइ रे, दुम्मुह प्रमुख ऋषिराय ।
मृगापुत्र हरिकेशीना रे, वंदु हुं नित पाय रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥१६॥
साधु चिलातीसुत भलो रे, वली अनाथी तेम ।
एक मुनिगुण अनुमोदतां रे, देवचंद्र सुख खेम रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥१७॥

॥ ढाल पांचमी ॥

(इणी परे चचल आउखु, जीव जागो रे, ए देशी)

चेतन ए तन कारिमो, तुमे ध्यावो रे ।
शुद्ध निरंजन देव, भविक तुमे ध्यावो रे ॥
शुद्ध स्वरूप अनूप, भविक तुमे ध्यावो रे ॥१॥
नरभव श्रावक कुल लह्यो तुमे०, लाध्यो समकित सार भवि० ।
जिन आगम रुचिशुं सुणी तुमे० । आलस निंद निवार ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ २ ॥
समयांतर सह भावनो तुमे० । दर्शन ज्ञान अनंत भवि० ।
आतम भावे थिर सदा तुमे० । अक्षय चरण महंत ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ ३ ॥
तीन लोक त्रिहुं कालनी तुमे० । परिणति तीन प्रकार भवि ।
एक समे जाणे तिणे तुमे० । नाण अनंत अपार ॥

भविक तुमे ध्यावो रे ॥ ४ ॥

सकल दोषहर शाश्वतो तुमे० । वीरज परम अदीन भवि० ।
सूक्षम तनु बंधन विना तुमे० । अवगाहना स्वाधीन ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ ५ ॥

पुद्गल सकल विवेकथी तुमे० । शुद्ध अमूर्ति रूप भवि० ।
इंद्रिय सुख निस्पृह थइ तुमे० । अकथ अबाह स्वरूप ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ ६ ॥

द्रव्य तणा परिणामथी तुमे० । अगुरु लघुत्व अनित्य भवि० ।
सत्य स्वभावमयी सदा तुमे० । छोडी भाव असत्य ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ ७ ॥

निजगुण रमतो राम ए तुमे० । सकल अकल गुणखाण भवि० ।
परमातम पर ज्योति ए तुमे० । अलख अलेप वखाण ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ ८ ॥

पंच पूज्यथी पूज्य ए तुमे० । सर्व ध्येयथी ध्येय भवि० ।
ध्याता ध्यानरुपे ए तुमे० । निश्चे एक अभेद ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ ९ ॥

अनुभव करतां एहनो तुमे० । थाय परम प्रमोद भवि० ।
एक स्वरूप अभ्यासशु तुमे० । शिवसुख छे तस गोद ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ १० ॥

तुं एकाकी अनादिनो रे, किणथी तुज संबंध रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥ ३ ॥

शत्रु मित्रता सर्वथी रे, पामी वार अनंत ।
कोण सज्जन दुश्मन किस्यो रे, काले सहुनो अंत रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥ ४ ॥

बांधे करम जीव एकलो रे, भोगवे पण ते एक ।
किण ऊपर किण वातनी रे, राग द्वेषनी टेक रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥ ५ ॥

जो निज एकपणु ग्रहे रे, छोडी सकल परभाव ।
शुद्धातम ज्ञानादिशु रे, एक स्वरूपे भाव रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥ ६ ॥

आव्यो छे तुं एकलो रे, जाइश पण तुं एक ।
तो ए सर्व कुटुंबथी रे, प्रीति किसि अविवेक रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥ ७ ॥

वनमांहे गज सिंहादिथी रे, विहरतां न टले जेह ।
जिण आसन रवि आथमे रे, तिण आसन निशि छेह रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥ ८ ॥

आहार ग्रहे तप पारणे रे, करमां लेप विहीन ।
एक वार पाणी पीवतां रे, वनचारी चित्त अदीन रे ॥

प्राणी एकल भावना भाव ॥ ९ ॥

एह दोष पर ग्रहणथी रे, पर संगे गुण हाण।
परधन ग्राही चोर ते रे, एकपणो सुख खाण रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥१०॥

पर संयोगथी बंध छे रे, पर वियोगथी मोक्ष।
तेणे तजी पर मेलावडो रे, एकपणो निज पोष रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥ ११ ॥

जन्म न पाम्यो साथ को रे; साथ न मरशे कोय।
दुःख वहेंचवा को नहीं रे, क्षणभंगुर सहु लोय रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥१२॥

परिजन मरतो देखीने रे, शोक करे जन मूढ।
अवसरे वारो आपणो रे, सहु जननी ए रूढ रे, ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥१३॥

सुरपति चक्री हरि बली रे, एकला परभव जाय।
तन धन परिजन सहु मिलि रे; कोई सखाई न थाय रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥१४॥

एक आतमा माहरो रे, ज्ञानादिक गुणवंत।
बाह्य योग सहु अवर छे रे, पाम्यो वार अनंत रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव ॥१५॥

एह शरीर अशाश्वतो, खिणमें सीजंत ।
प्रीति किसि ते ऊपरे, जे स्वारथवंत; रे जीव० ॥ ११ ॥
ज्यां लगे तुज इण देहथी, छे पूरव संग ।
त्यां लगे कोटि उपायथी, नवि थाय भंग; रे जीव० ॥ १२ ॥
आगल पाछल चिहुं दिने, जे विणसी जाय ।
रोगादिकथी नवि रहे, कीधे कोटि उपाय; रे जीव० ॥ १३ ॥
अंते पण एने तज्यां, थाये शिव सुख ।
ते जो छूटे आपथी, तो तुजने स्यो दुःख, रे जीव० ॥ १४ ॥
ए तन विणसे ताहरे; नवि कांइ हाण ।
जो ज्ञानादिक गुण तणो, तुज आवे ज्ञाण, रे जीव० ॥ १५ ॥
तुं अजरामर आतमा, अविचल गुण खाण ।
क्षणभंगुर आ देहथी, तुज किहां पीछाण, रे जीव० ॥ १६ ॥
छेदन भेदन ताडना, वध बंधन दाह ।
पुद्गलने पुद्गल करे, तुं तो अमर अगाह, रे जीव० ॥ १७ ॥
पूर्व कर्म उदये सही, जे वेदना थाय ।
ध्यावे आतम तिण समे, ते ध्यानी राय, रे जीव० ॥ १८ ॥
ज्ञान ध्याननी वातडी, करणी आसान ।
अंत समे आपद पड्यां, विरला करे ध्यान; रे जीव० ॥ १९ ॥
अरति करी दुख भोगवे, परवस जेम कीर ।

तो तुज जाणपणा तणो, गुण केवो धीर, रे जीव० ॥ २० ॥
शुद्ध निरंजन निरमलो, निज आतम भाव।
ते विणसे कहे दुःख किश्यो, जे मिलियो दाव, रे जीव ॥२१॥
देह गेह भांडा तणो; ए आपणो नाहि।
तुज गृह आतम ज्ञान ए, तिस मांह समाहि, रे जीव० ॥२२॥
मेतारज सुकोसलो; वली गजसुकुमाल ।
सनतकुमार चक्री परे, तन ममता टाल; रे जीव० ॥ २३ ॥
कष्ट पड्यां समता रमे, निज आतम ध्याय।
देवचंद्र तिण मुनितणा, नित वंदु पाय; रे जीव० ॥ २४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

(प्राणी धरीये संवेग विचार, ए देशी)

ज्ञान ध्यान चारित्रने रे; जो दृढ करवा चाहे ।
तो एकाकी विहरता रे, जनकल्पादि साहे; रे ॥
प्राणी एकल भावना भाव, शिवमारग साधन दाव रे,
प्राणी एकल भावना भाव ॥ १ ॥
साधु भणी गृहवासनी रे; छूटी ममता तेह ।
तो पण गच्छवासी पणो रे गण गुरु पर छे नेह रे ॥
प्राणी एकल भावना भव ॥ २ ॥
वन मृगनी परे तेहथी रे, छोडी सकल प्रतिबंध ।

बंध अबंध ए आतमा तुमे० । करता अकरता एह भवि० ।
एह भोगता अभोगता तुमे० । स्यादवाद गुण गेह ।
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ ११ ॥
एक अनेक स्वरूप ए तुमे० । नित्य अनित्य अनादि भवि० ।
सदसद् भावे परिणम्या तुमे० । मुक्त सकल उन्माद ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ १२ ॥
तप जप किरिया खप थकी तुमे० । अष्ट करम न विलाय भवि०
ते सहु आतम ध्यानथी तुमे० । खिणमें खेरु थाय ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ १३ ॥
शुद्धातम अनुभव विना तुमे० । बंध हेतु शुभ चाल भवि० ।
आतम परिणामे रम्या तुमे० । एहज आश्रव पाल ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ १४ ॥
इम जाणी निज आतमा तुमे० । वरजी सकल उपधि भवि० ।
उपादेय अवलंबने तुमे० । परम महोदय साध ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ १५ ॥
भरत इलासुत तेतली तुमे० । इत्यादिक मुनि वृंद भवि० ।
आतम ध्यानथी ए तर्या तुमे० । प्रणमे ते देवचंद्र ॥
भविक तुमे ध्यावो रे ॥ १६ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

(शेलग शेत्रुंजे सिद्ध थया, ए देशी)

भावना मुक्ति निशानी जाणी; भावो आसक्ति आणीजी ।
योग कषाय कपटनी हानि, थाये निर्मल जाणी ॥
भावना मुक्ति निशानी जाणी० ॥ १ ॥
पंच भावना ए मुनि मनने, संवर खाणी वखाणी जी ।
बृहत्कल्प सूत्रनी वाणी, दीठी तेम कहाणी जी ॥
भावना मुक्ति निशानी जाणी० ॥ २ ॥
कर्म कतरणी शिव निसरणी, ध्यान ठाण अनुसरणी जी ।
चेतन राय तणी ए घरणी; भव समुद्र दुःख हरणी जी ॥
भावना मुक्ति निशानी जाणी० ॥ ३ ॥
जयवंत पाठक गुण धारी, राजसागर सुविचारी जी ।
निर्मल ज्ञान धरम संभाली, पाठक सहु हितकारी जी ॥
भावना मुक्ति निशानी जाणी ॥ ४ ॥
राजहंस सुगुरु सुपसाये, देवचंद्र गुण गावे जी ।
भविक जीव जे भावना भावे, तेह अमित सुख पावे जी ॥
भावना मुक्ति निशानी जाणी ॥ ५ ॥
जेसलमेरी साह सुत्यागी, वर्द्धमान वड भागी जी ।
पुत्र कलत्र सकल सुभागी, साधु गुणना रागी जी ॥

भावना मुक्ति निशानी जाणी० ॥ ६ ॥

तस आग्रहथी भावना भाई, ढालबंधमां गाई जी।
भणशे गणशे जे एह ज्ञाता, लहेशे ते सुख शाता जी ॥
भावना मुक्ति निशानी जाणी ॥ ७ ॥

मन शुद्धे पंचे भावना भावो, पावन निज गुण पावो जी।
मन मुनिवर गुण संग वसावो, सुख संपति गृह थावो जी ॥
भावना मुक्ति निशानी जाणी० ॥ ८ ॥

पडित श्री देवचन्द्रजी कृत—
साधुनी पंच भावना समाप्त ॥

॥ महालब्धिनिधानेभ्यः श्री गौतमगुरुभ्योनमः ॥

॥ अथ श्री सम्यक्त्वना सडसठ बोलनी सझाय प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

सुकृतवल्लि कादंबिनी, समरी सरसति मात समकित सडसठ बोलनी; कहिशुं मधुरी वात ॥ १ ॥ समकित दायक गुरुतणो, पच्चुवयार न थाय ॥ भव कोडाकोडी करी, करतां सर्व उपाय॥२॥ दानादिक किरिया न दियें, समकित विण शिवशर्म। तेमाटे

समकित वड्डं; जाणो प्रवचन मर्म ॥ ३ ॥ दर्शन मोह विनाशथी; जे निर्मल गुणठाण। ते निश्चय समकित कह्यो, तेहनां ए अहिठाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

देइ देइ दरिसण आपणुं ॥ए देशी॥ चउ सद्दहणा तिलिंग छे, दशविध विनय विचारो रे। त्रिण शुद्धि पण दूषण; आठ प्रभाविक धारो रे॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ प्रभाविक अड पंच भूषण, पंच लक्षण जाणियें। षट जयणाषट आगार भावना; छव्विहा मन आणियें। षट ठाण समकित तणा, सडसठ; भेद एह उदार ए। एहनो तत्वविचार करतां, लहीजे भवपार ए ॥६॥

॥ ढाल बीजी ॥

चउ विह सद्दहणा तिहां, जीवादिक परमत्थो रे। प्रवचनमांहें जे भाषिया, लीजे तेहनो अत्थो रे ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ तेहनो अर्थ विचार करीयें; प्रथम सद्दहणा खरी। बीजी सद्दहणा तेहनी जे, जाण मुनि गुण जवहरी। संवेग रंग तरंग झीले, मार्ग शुद्ध कहे बुधा। तेहनी सेवा कीजियें जिम, पीजियें समता सुधा ॥ ८ ॥

समकेत जेणे ग्रही वमिऊं, निन्हव ने अहेछंदा रे। पासत्थाने कुशीलिया, वेषविडंबक मंदा रे ॥ ९ ॥ त्रुटक ॥ मंदा अनाणी

दूर छंडो; त्रीजी सद्दहणा ग्रही । परदर्शनीनो संग तजियें; चोथी सद्दहणा कही । हीणातणो जे संग न तजे, तेहनो गुण नवि रहे । ज्यूं जलधि जलमां भळ्यूं गंगा, नीर लूणपणूं लहें ॥ १० ॥

॥ ढाल त्रीजीं ॥

कपूर होवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ त्रण लिंग समकित तणां रे, पहिलो श्रुतअभिलाप । जेहथी श्रोता रस लहे रे; जेवो साकर द्राख रे । प्राणी धरियें समकित रंग, जिम लहियें सुख अभंग रे ॥ प्राणी ॥ ए टेक ॥ ११ ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवरयो रे; चतुर सुणे सुरगीत । तेहथी रागे अति घणो रे, धर्म सुण्यानी रीत रे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥ भूख्यो अटवी उतरयो रे, जिम द्विज गेवर चंग । इच्छे तिम जे धर्मने रे, तेहिज बीजूं लिंग रे, ॥ प्राणी ॥ १३ ॥ वैयावच्च गुरुदेवनूं रे; त्रीजुं लिंग उदार । विद्या साधक तणि परें रे, आलस नविय लगार रे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

प्रथम गोवालातणे भवेजी, ॥ ए देशी ॥ अरिहंत ते जिन विचरता जी । कर्म खपी हुआ सिद्ध ॥ चेइय जिण पडिमा कही जी, सूत्र सिद्धांत प्रसिद्ध । चतुर नर समझो विनय प्रकार,

जिम लहियें समकित सार । चतुर० । १५ । धर्म खिमादिक भाखिओ जी; साधु तेहना रे गेह । आचारय आचारना जी, दायक नायक जेह ॥ चतुर० ॥ १६ ॥ उपाध्याय ते शिष्यने जी; सूत्र भणावणहार । प्रवचन संघ वखाणियें जी, दरिसण समकित सार ॥ चतुर० ॥ १७ ॥ भगति बाह्य प्रतिपत्तिथी जी, हृदय प्रेम बहुमान । गुण थुति अवगुण ढांकवा जी, आशातननी हाण ॥ चतुर० ॥ १८ ॥ पांच भेद ए दशतणो जी; विनय करे अनुकूल । सीचे तेह सुधारसें जी, धर्म वृत्तनूं मूल ॥ चतुर० ॥ १९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

धोबीडा तूं धोजे मननुं-धोतीयूं रे ॥ ए देशी ॥ त्रण शुद्धि समकीत तणी रे, तिहां पहिली मन शुद्धि रे । श्री जिनने जिनमत विना रे, जूठ सकल ए बुद्धि रे । चतुर विचारो चित्तमां रे ॥ ए आंकणी ॥ २० ॥ जिन भगतें जे नवि थयुं रे, ते बीजाथी नवि थाय रे । एवुं जे मुख भाखियें रे, ते वचनशुद्धि कहेवाय रे ॥चतुर० ॥ २१ ॥ छेद्यो भेद्यो वेदना रे जे सहतो अनेक प्रकार रे । जिण विणपर सुर नवि नमे रे, तेहनी काया शुद्ध उदार रे ॥ चतुर० ॥ २२ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

मुनि जन मारगनी देशी । समकित दूषण परिहरो; तेमां पहिली छे शंका । ते जिन वचनमां मत करो । जेहने सम नृप रंका, समकित दूषण परिहरो ॥ ए आंकणी ॥ २३ ॥ कंखा कुमतनी वांछना; बीजुं दूषण तजियें । पामी सुरतरु परगडो, किम वाउल भजियें ॥ सम० ॥ २४ । संशय धर्मना फलतणो, वितिगिच्छा नामें । त्रीजूं दूषण परिहरो, निज शुभ परिणामें ॥ सम० ॥ २५ ॥ मिथ्यामति गुण वर्णनो, टालो चोथो दोष । उन्मारगिथुणतां हुवे; उन मारग पोष ॥ सम० ॥ २६ ॥ पांचमो दोष मिथ्यामती; परिचय नवि, कीजे । इम शुभ मति अरविंदनी, भली वासना लीजे ॥ सम० ॥ २७ ।

॥ ढाल सातमी ॥

भोलिडा हंसारें विषय न राचीये ॥ ए देशी ॥ आठ प्रभाविक प्रवचनना कह्या, पावयणी धुरि जाण । वर्त्तमान श्रुतना जे अर्थनो, पार लहे गुणखाण । धन धन शासन मंडन मुनिवरा । ए आंकणी ॥ २८ ॥ धर्म कथी ते बीजो जाणियें, नंदिषेण परि जेह । निज उपदेशे रे रंजे लोकने, भंजे हृदयसंदेह । धन० । २९ । वादी त्रीजोरे तर्क निपुण भणयो; मल्लवादी परि जेह । राजद्वारे रे जयकमला वरे

गाजंतो जिम मेह ॥ धन० ॥ ३० ॥ भद्रबाहु परि जेह निमित्त कहे, परमत जी पण काज । तेह निमित्तीरे चोथो जाणिये, श्रीजिनशासन राज ॥ धन० ॥ ३१ ॥ तप गुण ऊपेरे रोपे धर्मने, गोपे नवि जिन आण । आश्रव लोपेरे नवि कोपे कदा, पंचम तपसी ते जाण । धन० ॥ ३२ ॥ छठो विद्यारे मंत्र तणो बलि, जिम श्रीवयर मुणिंद । सिद्ध सातमोरे अंजन योगथी, जिम कालिक मुनिचंद ॥ धन० ॥ ३३ ॥ काव्य सुधारस मधुर अर्थभरया, धर्म हेतु करे जेह । सिद्धसेनपरे नर पति रीझवे; अठम वर कवि तेह । धन० ॥ ३४ ॥ जब नवि होवे प्रभाविक एहवा, तब विधि पूरव अनेक । जात्रा पूजादिक करणी करे, तेह प्रभाविक छेक ॥ धन० ॥ ३५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

सतीय सुभद्रनी देशी ॥ सोहे समकित जेहथी; सखि जिम आभरणें देह । भूषण पांच ते मन वस्यां, सखी मन वस्यां तेहमां नही संदेह, मुज समकित रंग अचल होजो । ए आंकणी ॥ ३६ ॥ पहेलुं कुशलपणुं तिहां, सखी वंदन ने पच्चखाण । किरियानो विधि अति घणो, सखी आचरे तेह सुजाण ॥ मुज० ॥ ३७ ॥ बीजूं तीरथ सेवना, सखी तीरथ तारे जेह ते गीतारथ मुनिवरा; सखी तेहसुं कीजे नेह ॥ मुज० ॥३८॥

भगति करे गुरु देवनी; सखी त्रीजु भूपण होय। किणहि चलाव्यो नवि चले; सखि चोथु भूपण जोय ॥ मुज०।३८॥ जिनशासन अनुमोदना, सखी जेहथी बहुजन हुँत । कीजें तेह प्रभावना; सखी पांचभूषणनी त ॥ मुज० ॥ ४० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

इम नवि कीजे हो ॥ ए देशी ॥ लक्षण पांच कह्यां समकिततणां; धुर उपसम अनुकूल । सुगुण नर। अपराधी सुं पण नवि चितथकी, चिंतवियें प्रतिकूल । सुगुण नर, श्री जिनभाषित वचन विचारियें ॥ ए आंकणी ॥ ४१ ॥ सुरनर सुख जे दुःख करि लेखवे, वंछे शिवसुख एक ॥ सु० ॥ वीजूं लक्षण ते अंगीकरे, सार संवेग सुटेक ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ॥ ४२ ॥ नारक चारक समभव ऊभग्यो; तारक जाणिने धर्म । सु० । चाहे निकलवुं निर्वेद ते, त्रीजु लक्षण मर्म । सु० । । श्रीजिन० ।४३। द्रव्यथकी दुःखियानी जे दया; धर्महीणानी रे भावि । सु० । चोथु लक्षण अनुकंपा कही, निज शकतें मनल्यावि । सु० । श्रीजिय० । ४४ । जे जिन भाख्यु ते नहि अन्यथा; एहवो जे दढ रंग ।सु०। ते आस्तिकता लक्षण पांचमु, करे कुमतिनो ए भंग ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ४५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

जिन जिन प्रति वंदन दिसे; ए देशी । पर तीर्थी परना सुर तेणे, चैत्य ग्रह्या वलि जेह । वंदन प्रमुख तिहां नवि करवुं, ते जयणा षट भेय रे; भविका समकित यतना कीजें ॥ ए आंकणी ॥ ४६ वंदन ते करजोडन कहियें, नमन ते शीश नमाडे । दान इष्ट अन्नादिक देवुँ । गौरव भक्ति देखाडे रे ॥ भ० ॥ ४७ ॥ अनुप्रदान ते तेहने कहियें, वार वार जे दान । दोष कुपात्रें पात्रमतियें । नहि अनुकंपा मान रे ॥ भ० ॥ ४८ ॥ अण बोलावे जेह भाखवुं, ते कहियें आलाप । वारंवार आलाप जे करवो; ते कहियें संलाप रे ॥ भ० ॥४६॥ ए जयणाथी समकित दीपे, वलि दीपे व्यवहार । तेमां पण कारणथी जयणा, तेह अनेक प्रकार रे ॥ भ० ॥ ५० ॥

॥ ॥ढाल अगीआरमी ॥

॥ ललनानी देशी ॥ शुद्ध धरमथी नवि चले, अति दृढ गुण आधार ललना । तो पण जे नवि तेहवा, तेहने एह आगार ॥ ललना ॥ ५१ ॥ बोल्युं तेहवुं पालियें । दंति दंत सम बोल ॥ललना॥ सज्जनना दुर्जन तणा, कच्छप कोटिने तोल ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५२ राजा नगरादिक धणी, तस शासन अभियोग ॥ ललना ॥ तेहथी कार्तिकनी परें, नहि

मिथ्यात्व संयोग ॥ ललना ॥ वो० ॥ ५३ ॥ मेलो जननो घण कह्यो, बल चोरादिक जाण ॥ ललना ॥ खेत्रपालादिक देवता, तातादिक गुरु ठाण । ललना । वो० । ५४ । वृत्ति दुर्लभ आजीविका, ते भीषण कंतार । ललना । ते हेते दूषण नही, करतां अन्य आचार । ललना । वो० । ५५ ।

। ढाल । राग मल्हार । १२ ।

भाविजे रे समकित जेहथी रूअडुं, ते भावना रे भावो मन करि परवडुं । जो समकित रे ताजुं साजुं मूल रे, तो व्रत तरु रे दीये शिवपद अनुकूल रे । ५६ । त्रुटक । अनुकूल मूल रसाल समकित, तेहविण मति अंध रे । जे करे किरिया गर्व भरिया, तेह जूठो धंध रे । ए प्रथम भावना गुणो रुअडी, सुणो बीजी भावना । बारणुं समकित धर्मपुरनुं, एहवी ते पावना । ५७ । । ढाल ।

त्रीजी भावना रे समकित पीठ जो दृढ सही, तो मोटो रे धर्म प्रासाद डगे नही । पाइये खोटे रे मोटो मंडाण न शोभीयें तेह कारण रे समकितशुं चित्त थोभीयें । ५८ । त्रुटक । थोभीयें चित्त नित एम भावी; चोथी भावना भावियें । समकित निधान समस्त गुणनुं, एहवुं मन लावियें । तेह विण छुटा रत्नसरिखा, मूल उत्तर गुण सवे । किम रहे ताके जेह

हरवा, चोर जोर भये भवे। ५६ । ढाल। भावो पंचमी रे भावना शम दम सार रे; पृथवी परे रे समकित तसु आधार रे। छठी भावना रे समकित भाजन जो मले, श्रुत शीलनो रे तो रस तेहमां नवि ढले। ६०। त्रुटक। नवि ढले समकित भावना रस, अमिय सम संवरतणो। षट भावना ए कही एहमां, करो आदर अति घणो। इम भावना परमार्थ जलनिधि; होय नित जक झोल ए। घन पवन पुण्य प्रमाण प्रगटे। चिदानंद कलोल ए। ६१।

। ढाल बारमी ।

जे मुनिवेष सके नवी छंडी। ए देशीं। ठरे जिहां समकित ते थानक, तेहना षट विध कहियें रे। तिहां पहिलुं थानक छे चेतन; लक्षण आतम लहियें रे। खीर नीर परें पुद्गल मिश्रित; पण एहथी छे अलगो रे। अनुभव हंस चंचु जो लागे, तो नवि दीसे वलगो रे। ६२। बीजुं थानक नित्य आतमा, जे अनुभूत संभारे रे। बालकने स्तन पान वासना, पूरव भव अनुसारें रे। देव मनुज नरकादिक तेहना, छे अनित्यपर्याय रे। द्रव्यथकी अविचलित अखंडित, निज गुण आतमराय रे। ६३। त्रीजुं थानक चेतन कर्त्ता, कर्मतणो छे योगे रे। कुंभकार जिम कुंभतणो जे; दंडादिक संयोगे रे। निश्चयथी

निज गुणनो कर्त्ता, अनुप चरित व्यवहारें रे। द्रव्यकर्मनो नगरादिकनो, ते उपचार प्रकारें रे।६४। चोथुं थानक छे ते भोक्ता, पुण्य पाप फलकेरो रे। व्यवहारें निश्चय नय दृष्टे, भुंजे निज गुण नेरो रे। पंचम थानक छे परम पद; अचल अनंत सुख वासो रे। अधि व्याधि तन मनथी लहियें; तसु अभावे सुख खासो रे। ६५। छट्ठु थानक मोक्षतणुं छे, संयम ज्ञान उपायो रे। जो सहिजें लहियें तो सघले, कारण निःफल थायो रे। कहे ज्ञान नय ज्ञानज साचुं, ते विण जूठी किरिया रे। न लहे रूपूं रूपूं जाणी, सीप भणी जे फिरिया रे।६६। कहे किरियानय किरियाविण जे ज्ञान तेह शुं करशे रे। जल पेसी कर पद न हलावे, तारू ते किम तरशे रें। दूषण भूषण छे इहां बहुलां, नय एकेकने वादें रे। सिद्धांती ते बेहु नय साधे; ज्ञानवंत अप्रमादें रे। ६७। इणिपरे सडसठ बोल विचारी, जे समकित आराहे रे। राग द्वेष टाली मन वाली; ते समसुख अवगाहे रे। जेहनुं मन समकितमां निश्चल; कोइ नही तस तोलें रे। श्री नयविजय विबुध पयसेवक, वाचक जस इम बोले रे।६८।

॥ इति श्री सम्यक्त्वना सडसठ बोलनी सद्याय संपूर्ण ॥

—ooo—

। अथ श्री रूपमविजयजी कृत ।
श्रीथूलिभद्र द्वितीय सझाय प्रारंभः

श्री थूलिभद्र मुनिगणमां शिरदार जो, चोमासु आव्या कोश्या आगार जो। चित्रामण शालीये तप जप आदर्यां जो ।१। आदरियां व्रत आव्या छो अम गेह जो, सुंदरी सुँदर चंपकवरणी देह जो। हम तुम सरिखो मेलो आ संसारमां जो ।२। संसारे में जोयुं सकल स्वरूप जो; दर्पणनी छायामां जेवुँ रूप जो। स्वप्नानी सुखडली भूख भांगे नहीं जो ।३। ना कहेशो तो नाटक करशुं आज जो; बार वरसनी माया छे मुनिराज जो। ते छोडी केम जाउ हुं आशा भरी जो।४। आशा भरियो चेतन काल अनादि जो, भमियो धर्मने हीण थयो परमादी जो। न जाणी में सुखनी करणी योगनी जो।५। जोगी तो जंगलमां वासो वसिया जो; वेश्याने मंदिरीये भोजन रसिया जो। तुमने दीठा एवा संयम साधता जो।६। साधुशुं संयम इच्छारोध विचारी जो, कुरमापुत्र थया नाणी घरवारी जो; पाणी मांहे पंकज कोरुं जाणीये जो।७। जाणीये तो सघली तुमारी वात जो; मेवा मीठा रसवंता बहु जाता जो, अमर भूषण नव नवली भातें

लावत जो ॥ ८ ॥ लावता तुं देती आदर मान जो, काया जाणुं रंग पतंग समान जो, ठालीने शी करवी एवी प्रीतडी जो ॥ ६ ॥ प्रीतलडी करता ते रंगभर सेज जो, रमता ने देखाडंता घणुं हेज जो; रीपाणी मनावी मुंभने सांभरे जो ॥ १० ॥ सांभरे तो मुनिवर मनडुं वाले जो; ढांक्यो अग्नि उघाड्यो परजाले जो, संयममांहे ए छे दूषण मोटकुं जो ॥ ११ ॥ मोटकुं आव्युं तुं नंदनुं तेडुं जो, जातां न वहे कांइ तुमारुं मनडुं जो, में तुमने तिहां कोल करीने मोकल्या जो ॥ १२ ॥ मोकल्या तो मारगमांहे मलिया जो, संभूति आचारिज ज्ञानें वलीया जो, संयम दीधुं समकित तेणे शीखव्युं जो ।१३। शीखव्युं तो कहि देखाडो अमने जो, धर्म करंतां पुण्य वडेरुं तुमने जो । समताने घेर आवी वेश्या एम वदे जो ॥ १४ ॥ वदे मुनिश्वर शंकाने परिहार जो समकित मूले श्रावकनां व्रत बार जो । प्राणातिपातादिक स्थूलथी उच्चरे जो ॥ १५ ॥ उच्चरे तो वीत्युं छे चौमासुं जो, आणा लइने आव्या गुरुनी पासे जो । श्रुतनाणी कहेवाणा चउदे पूरवी जो ॥ १६ ॥ पूरवी थइने तारचा प्राणी थोक जो, उज्ज्वल ध्यानें ते गयां देवलोक जो; रुपभ कहे हुं नित्य तेने करीयें वंदना जो ॥ १७ ॥ इति ॥

। अथ श्रीवीरविजयजीकृत रहनेमीजीनी सद्याय प्रारंभः ।

वाह्यावाह्या उत्तरदिशिना वाय जो ॥ ए देशी ॥ रहनेमि अंबर विण राजूल देखि जो; मदनोदय मोह्या मुनि चित्त गवेषि जो, कहे सुंदरी सुंदर मेला संसारमां जो ॥ १ ॥ संसारे मेला आवे शे काज जो, चीर धरी कहे राजूल तुमे मुनि राज जो, आज किस्युं संभारो मेला वीसरया जो ॥ २ ॥ वीसरे नही रागीनें पूरव प्रीत जो, प्रीत करी रहे दूर ए मुरखरीत जो, चतुरशुं चित्त मेलावो चतुरनें सांभरे जो ॥ ३ ॥ सांभरे पण अमशुं तुमस्यो मेलाप जो; दीयर भोजाइपणानी जगमां छाप जो, तेमां श्यो चित्त मेलो फोगट रागनो जो ॥ ४ ॥ फोकट रागे रोतां तुम्हे घरमांहि जो, तजि तुमने मुज भाई गया वनमांहि जो, अम्हे तुम्ह घरे नित वात वीशामे आवता जो ॥ ५ ॥ आवता तो हुँ देती आदरमान जो, प्रीतम लघु बंधव मुज भाइसमान जो, कंतवियोगें तुमशुं वात विसामती जो ॥ ६ ॥ वीसांमा वनिताने वल्लभ केरा जो; अण परणी कन्याने कंत घणेरा जो; एक परखो जे राग ते धरखो नवि घटे जो ॥ ७ ॥ नवि धरे सतीयो जे नाम धरावे जो; बीजो वर वरवा इच्छा

नवि भावे जो; न फरे पंचनी साखे जे तिलक धरयो जो ॥८॥ तिलक धरे ते तो सामान्य ठराय जो, मंगल वर ते कर मेलापक थाय जो, माय पछी बोलवे कन्या सासरे जो ॥ ९ ॥ सासरियें कुंवारी जमवा जाय जो; वस्तु सामान्य विशेषे लइ समवाय जो, कग्मेलावा पेला मनमेला करे जो ॥ १० ॥ मेला करवा अमें तुम घेर आवंता जो; भूषण चीवर मेवाफल लावंता जो; तुमे लेतां अमने थइ आश्या मोटकी जो ॥११॥ मोटी आश्या शी थइ तुम दिलमांहि जो, देवर जाणी हुँ लेती उच्छांहि जो; ससरानु घर लहि न धरी शंका अमे जो ॥१२॥ अमे जाण्युं पतिव्रिण राजुल ओसीआली जो, एहने परणी सुखभर प्रीतडी पाली जो; दंपती दीक्षा लेशुं जोवनमां नही जो ॥ १३ ॥ नही ओसीयाली हुं जगमां कहेवाणी जो, त्रण्य जगत्तना राजानी हुं राणी जो; भूतल सरगे गवाणी प्रभूचरणे रही जो ॥ १४ ॥ रही चरणे तो सुख संसार ठगाणी जो, चंपकवरणी तुज काया सोसाणी जो, तप जप कष्ट जे करवुं ते वृधापणे जो ॥ १५ ॥ वृधापणे मुनिने नवि थाये विहार जो, थिरवासे एक ठामे रहे अणगार जो, जे जे कारज साधवुं ते योवन वयें जो ॥ १६ ॥ जोवनवय जगमगतो तुम हम योग जो, चालो घर जइ विलसीयें सुखभोग जो, वात बनी एकांते

गुफामां पुण्यथी जो ॥ १७ ॥ पुण्ये दीक्षा लीधी प्रभुनी पास जो; संयमथी सुर मुगती तणा सुखवास जो, वीरुआं विषफल खावा इच्छा सी करो जो ॥ १८ ॥ सीकरो तो पास प्रभु अणगार जो, उपदेशे घर छंडी थशे मुनिच्यार जो, ते भव मोक्ष सुणीनें किम जइ घरे वश्या जो, ॥ १९ ॥ घरे वश्या पण मुनि दीठा तप करता जो; पश्चात्ताप करी फरी संयम धरता जो, परिशाटन करी परमातम पदवी वरया जो ॥ २० ॥ वरी पदवी पण भुक्त भोगी थइ तेह जो, तुम उपर अमने पूरवनो नेह जो, अधुराने दुःखकर संजम साधन विधि जो ॥ २१ ॥ विधियें व्रत धरी थावच्चा कुमार जो, सिधगिरि सीधा साथे साधु हजार जो, वीरनी वारे अयमंता मुगति जसे जो ॥२२॥ जसे खरा पण बालपणामां जोगी जो; वात न जाणे आ संसारिक भोगी जो; भुगत भोगी थई अंते सयम साधशुं जो ॥ २३ ॥ साधशुं अंते संयम ते सवि खोटुं जो, जरापणानुं दुःख संसारे मोटुं जो, व्रत भांगीने जीव्या ते नरकें गया जो ॥ २४ ॥ गया नरकें ते जेणे फरी व्रत नवि धरियां जो, भागे परिणामे संयम आचरीयां जो; चारित्रें चित्त ठरसे इच्छा पूरणे जो ॥ २५ ॥ इच्छा पूरण कोइ काले नवि थावे जो, स्वर्ग तणां सुख वार अनंती पावे जो; भव भय पामी पंडित दीक्षा

नवि तजे जो ॥ २६ ॥ नवि तजे तो पूरवधर किम चूक्या जो, रहि घरवासे तप जप वेशज मूक्या जो, अरिहावात एकांते सासन नवि कहे जो ॥ २७ ॥ कहे एकांते ब्रह्मचरज जिन- वरिया जो, व्रत तजी पूरवधर निगोदें पडिया जो, विष खातां संसारे कूण सुखिया थया जो ॥ २८ ॥ थया जिनेसर सुख विलसी संसारे जो, केवल पामी पछी जगतने तारे जो; दीक्षा लेशुं आपणे सुखलीला करी जो ॥ २९ ॥ फिरी आ संजम जिन आणा सिरधारो जो; चलचित्त करीनें चरणतणुं फल हारो जो, वमन भखंतां श्वानपरें वांछा करो जो ॥ ३० ॥ करयो अमने तुमे श्वान बरोबर साचो जो, तो तुमशुं हवे राग ते धरवो काचो जो, लागो तमाचो शिक्षानो मुझने घणो जो ॥ ३१ ॥ मुझने घणो छे दीयरियानो राग जो, तेणे कहुं अगंधक कूलना नाग जो, अगनी पडे पण विष वमीयुं चूसे नही जो ॥ ३२ ॥ चूसे नही तिरजंच पशु विख्यात जो तेथी भूंडो हुँ नर क्षत्री जात जो, तुं गुरु माता वात किहां करसो नहीं जो ॥ ३३ ॥ करशो नही पण जाणे जिनवर ग्यानी जो, ग्यानी आगल वात न जगमां छानी जो; प्रभु पासे आलोयण लेइ निरमल थवुं जो ॥ ३४ ॥ निरमल थावा जंइशुं प्रभुनी पासे जो, मिच्छामि दुक्कड करी तुमशुं शुभ

वासे जो; कूप पडंतां तुमे कर झाली राखियो जो ॥ ३५ ॥ राखे आतम पोतानो मुनिराया जो; स्वामी सहोदर मात शिवाना जाया जो, रहेनेमी संयमे ठरीया इम सांभली जो ॥ ३६ ॥ सांभली जइ प्रभुचरणे सीस नमावी जो, आलोयण लेइ उज्वल भावना भावी जो, केवल पामी शिवपदवी वरिया सुखे जो ॥३७॥ सुखे रहि घरमां सय वरस तेच्यार जो; एक वरस छद्मस्था राजूल नार,नर जो; एक विहूणां पांचसें वरसज केवली जो ॥ ३८ ॥ केवली थइने विचर्यां देश विदेश जो, बहुजन तार्या देई वर उपदेश जो, शिवसुख सद्यायें पोढ्या अगुरु लघुगुणे जो ॥ ३९ ॥ गुणेकरी दोइ गाया सुणजो सयणा जो, एक एक गाथा अंतर बेहुनां वयण जो, श्रीशुभवीरविवेकी नित्य वंदन करे जो ॥ ४० ॥ इति ॥

॥ अथ बलिभद्रमुनिनी सद्याय ॥

॥शा माटे बंधन मुखथी न बोलो; आंशुडें आनन धोतां मोरारी रे ॥ पुण्यजोगें दडियो एकपाणी, जडयो छे जंगल जोता मोरारी रे ॥ शा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ त्रीकम रीस चढी छे तुजने; वनमांहे वनमाली मोरारी रे । वडीरे वारनुं मनावुं छुं वाला, तुं तो वचन न बोले फरी वाली मोरारी रे ॥ शा० ॥

॥ २ ॥ नगरी रे दाधीने शुद्ध न लाधी, महारी वाणी निसुण वाला मोरारी रे । आ वेलामां कीधो अबोलो, कानजी कां थया काला मोरारी रे ॥ शा० ॥ ३ ॥ शी शी वात कहुँ शामलीया, वीठलजी आ वेला मोरारी रे । शाने काजें सुजनें संतापे, हरि हसी बोलोने हेला मोरारी व ॥ शा०॥ ४॥ प्राण माहारा जासे पाणी विण, अधघडीने अणबोलें मोरारी रे। आरति सघली जाये अलगी, बांधवजो तु बोले मोरारी रे ॥ शा० ॥ ५ ॥ पटमास लगें पाल्यो छबीलो, हैया उपर अति हिते मोरारी रे । सिधु तटें सुरने संकेते; हरि दहन करम शुभरीतें मोरारी रे ॥ शा० ॥ ६ ॥ संयम लइ गयो सुरलोकें कवि उदयरतन इम बोले मोरारी रे । संसारमांहे बलदेव मुनिने कोइ न आवे तोले मोरारी रे ॥ शा० ॥ ७ ॥

॥ अथ मेघकुमारनी सद्धाय प्रारंभः ॥

॥ धारिणी मनावे रे मेघकुमारनें रे, तुं मुझ एकज पूत ॥ तुझ विण सुनां रे मंदिर मालियां रे, राखो राखो घर तणां सूत ॥ धारिणी० ॥ १ ॥ तुझने परणावुँ रे आठ कुमारिका रे, सुंदर अति सुकुमाल । मलपति चाले रे वन जेम हाथणी रे, नयण वयण सुविशाल ॥ धारिणी० ॥ २ ॥ मुझ मन

आशा रे पुत्र हती घणी रे, रमाडीश वहूनां रे बाल । दै अटारो रे देखी नवि शक्यो रे, उपायो एह जंजाल ॥धारिणी० ॥ ३ धण कण कंचन रे रूद्धि घणी अछे रे; भोगवो भोग संसार । छती रूद्धि विलसो रे जाया घर आपणे रे, पछें लेजो संयम भार ॥ धारिणी० ॥ ४ ॥ मेघकुमारें रे माता प्रत्यें बूजवी रे, दीक्षा लीधी वीरजीनी पास । प्रीतिविमल रे इणि परें उच्चरें रे; पोहोती महारा मनडानी आश ॥ धारिणी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ रसनानी सझाय प्रारंभ ॥

॥ बापडली रे जीभडली तुं; कां नवि बोले मीठुं ॥ विरुआ वचन तणुं फल विरुउं, ते शुं तें नवि दीठुं रे ॥ बापड० ॥ ॥ १ ॥ अन्न पान अण गमतुं तुजनें, जो नवि रुचे अनीठुं अण बोलावी तुं शा मार्टे; बोले कुवचन धीठुं रे ॥बा०॥२॥ अग्नियेंदह्युं नवपल्लव थाये, कुवचन दुर्गति घाले । अग्निथकी ते अधिकुं कुवचन, तेतो क्षण क्षण शाले रे ॥ बा० ॥ ३ ॥ क्रोध भरयुं ने कूडुं बोले, अभिमानी अणशक्ति । आप तणा अवगुण नवि देखे; ते केम जाशे मुक्ति रे ॥ बा० ॥ ४ ॥ ते नर मान महोत नवि पामे, जे नर होय मुखरोगी । तेहने कोइ नवि बोलावे, तेह तो प्रत्यक्ष शोगी रे ॥बा०॥५॥ जन्म जन्मनी

प्रीति विणाशे, कडवे वयणें वोले । मीठां बोलथकी विण गरथें, जग लीजें सवि मोलें रे ॥ वा० । ६ ॥ आगम वयण तणे अनुसारें; जे भवि रुडुं भांखें । प्रकट थई परमेश्वर तेहनी; लाज जगमांहि राखे रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ सुवचन कुवचननु फल जाणी, गुण अवगुण मन आणी । वात कही जें अमिय समाणी, लब्धि कहे सुण प्राणी रे ॥ वा० ॥ ८ ॥ इति रसनागीत समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री आत्मोपद्देश सझाय ॥

॥सासरीये एम जइयें रे वाइ, सासरीयें एम जाइये ॥ जिनधर्म ते सासरु कहीयें, जिनवर देव ते ससरो । जिनआणा सासू रढीयाली; तेना कह्यामां विचरो रे वाइ ॥ सासरीये० ॥ १ ॥ अरां ने परां क्यांहि न भमीयें, भमतां जस नवि लहीयें रे वाइ । सा० ॥ ए आंकणी ॥ शियल स्वभाव सोहे घाघरीयो, जीवदया कांचलडी । समकित ओढणी ओढी रे जीणी, शंका-मेले न खरडी रे वाइ ॥ सा० ॥ २ ॥ निश्चय ने व्यवहार तणा वे, पाये नेउर खलके । वेउविध धर्म साधु श्रावकनो; कानें अकोटा झलके रे वाइ ॥ सा० ॥ ३ ॥ तपतणा वे वेरखा वांहे, तगतगे तेजे सारा । ज्ञान परमत तणुं ते अर्चा;

मांहे परिणामनी धारा रे बाइ ॥ सा० ॥ ४ ॥ राग सिंदूरनुं कीधुं टीलुं; शियलनो चांडलो शोहे । भावनो हार हैयमां लहेके; दाननां कांकण सोहे रे बाइ ॥ सा० ॥ ५ ॥ सुमति साहेली साथें लेइनें; दीठे मारग वहीयें । क्रोध कषाय कुमति अज्ञानी; तेहथी वात न करीये रे बाइ ॥सा०॥६ ॥ मिथ्यात्व पीयरमां न वसीयें, रहेतां अलखामणां थइयें । मोह माया मावतर वीरुआं दोहिलो काल निगमीयें रे बाइ ॥ सा०॥७॥ अनुभवप्रीतम साथे रमतां; प्रेमे आनंदपद लहियें । विनय-प्रभ सूरी प्रसादें; भावें शिवसुख लहियें रे बाइ ॥ सा० ॥ ॥ ८ ॥ इत्यात्मोपदेश सज्झाय संपूर्णः ॥

। अथ द्वितीय श्री आत्मोपदेश सज्झाय ।

॥ हुं तो प्रणमुं सद्गुरु राया रे; माता सरसतीना वंदूं पीया रे, हुँ तो गाऊं आतम राया । जीवनजी वारुं मत जाजो रे, तुमे घेर बेठा कमा वो चेतनजी, वारुं मत जाजो रे ॥१॥ ताहरे घरमां छे दुर्मति राणी रे, के तासुं कुमति केहे-वाणी रे तुनें भोलवी बांधशे ताणी रे ॥ जी० ॥ वा० ॥२॥ ताहारा घरमां छे त्रण रत्न रे, तेनुं करजे तुं तो यत्न रे, ए तो अखूट खजीनो छे धन ॥ जी० ॥ वा० ॥ ३ ॥ ताहरा घरमां

पेठा छे धूतारा रे, तेने काढोने प्रीतम प्यारा रे; एथी रहो ने तुमें न्यारा ॥ जी० ॥ वा० ॥ ४ ॥ सत्तावनने काढो घरमांथी रे, त्रेवीशने कहो जाये इहांथी रे, पछी अनुभव जागशे मांहेथी ॥ जी० ॥ वा० ॥ ५ ॥ शोल कषायने दीयो शीख रे, अढार पापस्थानकने मगावो भीख रे, पछे आठ करमनी शी बीक ॥ जी० ॥ वा० रे ६ ॥ चारने करोने चकचूर रे, पांचमीशुं थाओ हजूर रे, पछे पामो आनंद भरपूर ॥ जी० ॥वा०॥ ७॥ विवेकदीवो करो अजुवालो रे, मिथ्यात्व अंधकारनें टालो रे। पछे अनुभव साथे मालो रे ॥ जी० ॥ वा० ॥ ८ ॥ सुमति साहेलीशुं खेलो रे; दुर्मतिनो छेडो मेहलो रे, पछे पामो मुक्ति गढ वेलो रे ॥ जी० ॥ वा० ॥ ९ ॥ ममताने केम न मारो रे; जींती वाजी कांइ हारो रे; केम पामो भवनो पारो रे ॥जी० ॥ वा० ॥ १० ॥ शुद्ध देवगुरु सुपसाय रे, मारो जीव आवे कांइ ठाय रे, पछे आनंदघनमय थाय रे ॥ जी० ॥ वा० ॥ ॥ ११ ॥ इति ।

॥ अथ आपस्वभावनी सद्याय ॥

॥ आप स्वभावमां रे, अवधू सदा मगनमें रहेनां । जगत जीव हे कर माधीना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आ०॥१॥ तुम नहीं केरा कोइ नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा । तेरा हे

सो तेरी पास; अवर सबे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तु अविनाशी, अब हे इनको विलासी । वपु संग जब दूर निकाशी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुखका दीसा । जब तुम उनकुं दूर करी सा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ पारकी आसा सदा निरासा, ए हे जग जन पासा । ते काटनकुं करो अभ्यासा लहो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहींक काजी कबहींक पाजी, कबहींक हुआ अब आजी । कबहींक जगमें कीर्ति गाजी; सब पुद्गलकी वाजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी । कर्म कलंककुं दूर निवारी; जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ॥७॥ इति सद्याय ॥

। अथ शीयल विषे पुरुषने शिखामणनी सद्याय

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहामणी । प्रीत न कीजें रे; परनारी तणी ॥ उथलो ॥ परनारी साथें प्रीत पिउडा, कहो कीण परें कीजिये । उंध वेची आपणी, उजागरो किम लीजिये । काछडी छूटो कहे लंपट; लोकमांहे लाजिये । कुल

विषय खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजिये ॥ १ ॥ चाल॥ प्रीति करतां रे, पेहेलां बीहीजीयें । रखे कोइ जाणे रे, मन शुं ध्रूजीये मनशुं झूरीयें पण, जोग मलवो छे नहीं । रात दिन विलपतां जाये, अवटाइ मरवुं सही । निज नारिथी संतोष न वल्यो, परनारिथी कहो शुं हशे । जो भरे भाणे तृप्ति न वली तो एठ चाटे शुं हशे ॥ २ ॥ चाल ॥ मृग तृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टले । वेलु पील्यां रे, तेल न नीसरे ।उ०। नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेश मांखणनो वली । बूडतां वाचक भरथा केणे ते तरथा वात न सांभली । तेम नार रमतां परतणी, संतोष न वल्यो एक घडी । चित्त चटपटी उचाट लागे, नयणें नावे निद्रडी ॥ ३ ॥ चाल ॥ जेवो खोटो रे; रंग पतंगनो । तेवो चटको रे, परस्त्री संगनो ॥ उ० ॥ परत्रीयाकेरो प्रेम पिउडा रखे तुं जाणे खरो । दिन चार रंग सुरंग रूडो, पछी नहीं रहे निर्धरो । जे वणा साथें नेह मांडे छांड तेहशुं प्रीतडी । एम जाणी म म कर नाहला, परनारि साथें प्रीतडी ॥४॥ चाल ॥ जे पति वाहालो रे, वंचे पापिणी । परशुं प्रेमें रे; राचे सापिणी ॥ उ० ॥ सापिणी सरखी वेंण निरखो, रखे शीयल थकी चले । आंखने मटके अंग लटके, देव दानवने छले । ए मांहे काली अति रसाली; वणी मीठी शेलडी । सांभली भोला रखेभूलो,

जाणजो विष वेलडी ॥५॥चाल॥ संग निवारो रे, पररामा तणो। शोक न कीजें रे, मन मिलवा तणो ॥ उ०॥ शोक शाने करो फोगट, देखवुँ पण दोहिलुं । त्तिण मेडियें त्तिण शेरीयें; भमतां न लागे सोहिलुं । उच्छ्वासने निःश्वास आवे, अंग भांजे मन भमे । वलि कामिनी देखी देह दाजे; अन्न दीठुं नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कलामी रे; मनशुं कल मले । उन्मत्त थइनें रे अलल पलल लवे ॥ उ० ॥ लवे अलल पलल जाणे मोहघेलो मन रडे ॥ महामदन वेदन कठिन जाणी, मरण वारु त्रेवडे । ए दश अवस्था कामकेरी, कंत कायाने दहे । एम चित्त जाणी तेज प्राणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥ चाल॥ परनारींना रे, पराभव सांभलो। कंता कीजें रे, भाव ते निर्मलो ॥ उ० ॥ निर्मलें भावे नाह समजो, परव धूरस परिहरो। चांपोउं कीचक भीमसेनें; शिला हेठल सांभलो। रण पड्यां रावण दशे मस्तक; रडवड्यां ग्रंथें कह्यां । तिम मुंजपति दुख पुंज पाम्यो, अपजश जगमांहे लह्या ॥ ८ ॥ चाल ॥शीयल सलूणा रे, माणस सोहिये । विण आभरणें रे; जग मन मोहीयें सुर नर करे सेवा, विष अमिय थइ संचरे । केसरी सिंह शीयाल थाए, अनल अति शीतल करे । साप थाए फूलमाला लच्छी घर पाणी भरे । परनारि परिहरि शीयल मन धरि,

मुक्तिवधु हेला वरे ॥ ९ ॥ चाल ॥ ते माटे हुं रे, वालम वीनवुँ पाए लागीनें रे, मधुर वयणे चवुं ॥ उ० ॥ वयण माहारुं मानीयें, परनारीथी रहो वेगला । अपवाद माथे चढे मोटो, नरकें थइयें दोहिला । धन्य धन्य ते नर नारि जे जग, शीयल पाले कुल तिलो; ते पामशे यश जगत मांहि, कुमुद चंद सम उजलो ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलविषे नारीने शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शिखामण खरी । समजी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ उ० ॥ सुंदरी सेहेजें, हृदय हेजें, पर सेजें नवि बेसीयें । चित्तथकी चूकी लाज मूकी; पर मंदिर नवि पेसीयें । बहु घेर हींडी नार निर्लज, शास्त्रें पण तजवी कही । जेम प्रेत दृष्टें पडयुं भोजन, जमवुं ते जुगतुं नहीं ॥ १ ॥ ॥ चाल ॥ परशुं प्रेमे रे, हसीय न बोलीयें । दांत देखाडी रे, गुह्य न खोलीयें ॥ उ० ॥ गुह्य घरनुं परनी आगें, कहोने केम प्रकाशीयें । वली वात जे विपरीत भासे, तेहथी दूरे नाशीयें । असुर सवारा अने अगोचर, एकलां नवि जाइयें ।

सहसातकारें काम करतां, सहेजें शील गमावीये ॥ २॥चाल॥ नट विट नरशुं रे, नयण न जोडीयें । मारग जातां रे, आधुं ओढीये ॥ उ० ॥ आधुं ते ओढी वात करतां; वणुंज रूडां शोभीयें । सासु अने माना जणया विणा; पलक पास न थोभीयें । सुख दुःख सरज्युं पामीयें पण, कुलाचार न मूकीयें । परवश वसतां प्राण तजतां, शीयलथी नवि चूकीये ॥ ३ ॥ ॥ चाल ॥ व्यसनी साथें रे, वात न कीजीयें । हाथो हाथें रे, ताली न लीजीयें ॥ उ० ॥ ताली न लीजें नजर न दीजें चंचल चाल न चालीयें । एक विषय बुद्धें वस्तु केहनी, हाथे पण नवि झालीयें । कोटि कंदर्प रूप सुंदर, पुरुष पेखी न मोहियें । तृणखलां तोले गणी तेहने, फरिय सामुं न जोइयें ॥ ४ ॥ चाल ॥ पुरुष पीयारो रे; वलि न वखाणियें । वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणीयें ॥ उ० ॥ जाणीयें पियु विण पुरुष सघला; सहोदर समो वडे । पतिव्रतानो धर्म जोतां, नावे कोइ तडोवडे । कुरूप कुष्टी कूवडो ने; दुष्ट दुर्बल निगुणो । भरतार पामी भामिनी ते, इंद्रथी अधिको गुणो ॥ ५ ॥ चाल ॥ अमरकुमारे रे, तजी सुरसुंदरी । पवनंजये रे, अंजना परिहरी ॥ उ० ॥ परिहरी सीता रामे वनमां, नलें दमयंती । महासती माथे कष्ट पड्यां पण; शीयलथी ते नवि चलि । कसोटीनी

परें कसीश्र जोतां, कंतशुं विहडे नहीं । तन मन्न वचनें शीयल राखे, सती ते जाणो सही ॥ ६ ॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडीये । व्याकुल थइने रे, मन न बगाडीये पण पुरुषपरनुं; जोग जोतां नवि मले । कलंक माथे चढे कूडां सगां सहु दूरें टले । अणसरज्यो उच्चाट थाये, प्राण तिहां लागी रहे । इह लोक पामे आपदा परलोके पीडा बहु सहे ॥७॥ ॥ चाल ॥ रामने रूपें रे शूर्पनखा मोही । काज न सीधुं रे, अने इजत खोइ ॥ उ० ॥ इजत खोइ देख अभया, शेठ सुदर्शन नवि चल्यो । भरतार आगल पडी भोंठी, अपवाद सवले उच्छल्यो । कामनी बुद्धे कामिनीयें, वंकचूल वाह्यो घणुं । पण शीयलथी चूक्यो नहीं, दृष्टांत एम केतां भणुं ॥ ८ ॥ ॥ चाल ॥ शीयल प्रभावे रे, जुत्रो शोले सती । त्रिभुवन मांहे रे जेह थई छती ॥ उ० ॥ सती थइने शीयल राख्युं, कल्पना कीधी नहीं । नाम तेहनां जगत जाणे, विश्वमां उगी रही । विविध रत्नें जडित भूषण; रूपसुंदरी किन्नरी । एक शीयल विण शोभे नहीं; ते सत्य गणजो सुंदरी ॥ ६ ॥ चाल ॥ शीयल प्रभावें रे; सहु सेवा करे । नवे वाडें रे, जेह निर्मल धरे ॥ उ० ॥ धरे निर्मल शीयल उजल, तास कीर्ति जल हले । मनकामना सवि सिद्धि पामें, अष्ट भय दूरें टले । धन्य धन्य

ते जाणो धरा, जे शीयल चोखु आदरे, आनंदना ते ओघ पामे, उदय महा जस विस्तरे ॥ १० ॥

॥ इति नारी ने शिखामणनी सधाय ॥

॥ धोबीडानी सधाय ॥

। धोबीडा तु धोजे मननुँ धोतीयुँ रे रखे राखतो मेल लगार रे । एणे रे मेले जग मेलो कर्यो रे, अण धोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥ १ ॥ जिनशासन सरोवर सोहामणु रे; समकित तणी रूडी पाली रे । दाना दिक चारे बारणा रे; मांही नवतत्व कमल विशाल रे ॥ धो० ॥ २ । तिहां जीले मुनिवर हंसला रे; पीये छे तप जप नीर रे । शम दम आदे जे सिला रे; तिहां पखाले आतम चीर रे ॥ धो० ॥ ३ ॥ तपवजे तप तडके करी रें, जालवजे नवब्रह्म वाड रे । छांटा उडाडे पाप अढारना रे एम उजलुँ होशे ततकाल रे ।धो०॥ ॥ ४ ॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे, रखे आवे माया शेवाल रें । निश्चें पवित्रपणु राखजे रे, पछें आपणा नियम संभाल रे ॥ धो० ॥ ५ ॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे; पड मेलीने संकेल रे । समय सुंदरनी शीखडी रे । सुखडी अमृत वेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥

॥ अथ भरतचक्रीनी सद्याय ॥

॥ मनमें ही वैरागी भरतजी, मनमें ही वैरागी । सहस बत्रीश मुकुट बंध राजा; सेवा करे वडभागी । चोशठ सहस अंतेउरी जाके; तोहि न हुवा अनुरागी ॥ भ० ॥ १ ॥ लाख चोराशी तुरंगम जाके, छन्नु कोड हे पागी । लाख चोराशी गज रथ सोहीयें, सुरता धर्मशु लागी ॥ भ० ॥ २ ॥ चार करोड मण अन्नज सिजे लूण दश लाख मण लागे । तिन क्रोड तो गोकुल दूजे एक कोड हल सागी ॥ भ० ॥ ३ ॥ सहस बत्रीश देश वडभागी, भये सरवके त्यागी । छन्नु कोड गामके अधिपति, तोहे न हुआ सरागी ॥ भ० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगडा बाजे; मन चिंता सब भांगी कनक कीर्ति मुनिवर वंदत हे; देजो मुक्ति में मागी । भ० ॥ ५ । इति ॥

॥ अथ अभयरामकृत श्री रत्नचिंतामणीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ आ भव रत्नचिंतामणि सरिखो, वारो वार न मलशे जी । चेति शके तो चेतजे जीवडा; आवो समय नहिं मलशे जी ॥ आ भव० ॥ १ ॥ चार गति चोराशी लख योनी, तेहमां तं भमी आयो जी । पराधसंयोगे स्वप्ननी संगते;

मानवनो भव पायो जी ॥ आ० ॥ २ ॥ वहेलो था तुं वहे
लो जीवडा, ले जिनवरनुं नाम जी । कुगुरु कुदेव कुधर्मने
छंडी, कीजें आतम काम जी ॥ आ० ॥ ३ जेम कठीयारे
चिंतामणि लाधो, पुण्य तणे संयोग जी । कांकरानी परें नाखी
दीधो; फरि नहिं मलवा जोग जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ एक काले
तुं आव्यो जीवडा, एककालें तुं जाशे जी तेहनी वच्चें तुं
वेठो जीवडा, एककाले तुं जाशे जी तेहनी वच्चें तुं वेठो
जीवडा, काल आहेडी निकासे जी ॥ आ० ॥ ५ ॥ धन्य
साधु जे संयम पाले, सूधो मारग दाखे जी, साचुं नाणुं गांठे
वांधे, खोटे दृष्टि न राखे जी ॥ आ० ॥ ६ ॥ मात पिता दारा
सुत बांधव; बहु विधमां विरति जोडे जी । तेमांहथी जो काज
सरे तो, साधु घर केम छोडे जी ॥आ०॥ ७ ॥ माया ममता
विषय सहु छंडी, संवर त्रामां एक कीजे जी । गुरुउपदेश
सदा सुखकारी; सुणी अमृत रस पीजे जी ॥ आ० ॥८ ॥ जेम
अंजलीमां नीर भराणुं; त्तण त्तण ओछुं थाय जी । घडी
घडीयें घडीयालां वाजे, त्तण लाखीणो जाय जी ॥आ०॥९॥
सामायिक मन शुद्धे कीजें, शिवरमणी फल पामीजें जी ।
मानवभव मुक्तिनो कामी, तेमां भरोंसो शानो लीजें जी ॥आ०
॥ १० ॥ देव गुरु तमें दृढ करी धारो; समकित शुद्ध आराधो

जी । छकाय जीवनी । रक्षा करीने, मुक्तिनो पंथज साधो जी ॥ आ० ॥ ११ ॥ हैडा भींतर ममता राखो; जनम फरी नवि मलशे जी । कायर तो कादवमां खूता, शूरा पार उतरशे जी ॥ आ० ॥ १२ ॥ गुरु कंचन गुरु हीरा सरिखा: गुरु ज्ञानना दडीया जी । कहे अभयराम गुरु उपदेशें, जीव अनंता तरीया जी ॥ आ० ॥ १३ ॥

॥ अथ श्री धन्नाजीनी सझाय ॥

॥ शीयालामां शीत घणी रे धन्ना, उनाले लूजाल । चोमासें जल वादलां रे धन्ना; ए दुःख सह्यु न जाय । हुं तो वारी रे धनजी आज नहि सो काल ॥१॥ वनमें तो रहेवुं एकलुं रे धन्ना; कोण करे तारी सार । भूख परिसह दोहिलो रे धन्ना; मत कर एसी वात रे हो धनजी। मत लीयो संयम भार ॥२॥ वनमें तो मृग एकलो रे माता, कोण करे उनकी सार । करणी तो जेसी आपकी रे माता, कोण बेटो कुण बाप रे हो जननी । हुं लेहुँ संयम भार ॥ ३ ॥ पंच माहाव्रतको पालवो रे धन्ना, पांच मेरु समान । बावीस परिसह जीतवा रे धन्ना; संयम खांडा की धार रे हो धनजी ॥ मत० ॥४॥ नीरविनानी नदी कीसी रे धन्ना, चंद विना केसी रात । पियु विना केसी कामिनी

रे धन्ना; वदन कमल विल खाय रे हो धनजी ॥ मत० ॥ ५ ॥ दीपक विना मंदिर किस्यां रे धन्ना कान विना केसो राग । नयण विना किस्युं निरखवुं रे धन्ना, पुत्र विना परिवार रे हो धनजी ॥ मत० ॥ ६ ॥ तुं मुझ अंधालाकडी रे धन्ना, सो कोइ टेको रे होय । जो कोइ लाकडी तोडशे रे धन्ना, अंधो होशे खुवार रे हो धनजी ॥ म० ॥ ७ ॥ रत्न जडितको पिंजरो रे माता, ते सूडो जाणे वंध । काम भोग संसारना रे माता ज्ञानीने मन फंद रे हो जननी । हुं लेहुं संयम भार ॥ ८ ॥ आयु तो कंचन भरयो रे धन्ना, राइ परवत जेम सार । मगर पच्चीशी असतरी रे धन्ना, नहिं संयमकी वान रे हो धनजी ॥ म० ॥ ९ ॥ नित्थ उठी घोडले फीरतो रे धन्ना, नित्य उठी वागमें जाय । एसी खुवी परमाणें रे धन्ना, चमर ढुलायां जाय रे हो धनजी ॥ म० ॥ १० ॥ चोडी पालखीयें पोढतो रे धन्ना, नित्य नइ खुवी माण । ए तो बत्रीस कामिनी रे धन्ना, उभी करे अरदास रे हो धनजी ॥ म० ॥ ११ ॥ नारया सकारा हुं गयो रे माता, कानें आयो राग । मुनिश्वरनी वाणी सुणी रे माता, आ संसार असार रे हो जननी ॥ हुं लेशुं० ॥ ॥ १२ ॥ हाथमें लेनो पातरो रे धन्ना, घेर घेर मागवी भीख । कोइ गालज देइ काढशे रे धन्ना, कोइ देवेंगे शीख रे हो

धनजी ॥ मत० ॥ १३ ॥ तज दियां मंदिर मालीयां रे माता; तज दियो सब संसार । तज दीनी घरकी नारीयो रे माता, छोड चल्यो परिवार रे हो जननी ॥ हुँ ले० ॥ १४ ॥ जूठां तो मंदिर मालियां रे माता, जूठो ते सब संसार । जीवतां चूंटे कालजूं रें माता, मुवां नरक लेइ जाय रे हो जननी ॥ हुँ ले० ॥ १५ ॥ रात्रिभोजन छोड दे हो धन्ना, परनारी पच्चरखाण । परधनशुं दूरा रहो रे धन्ना, एहज संयमभार रें हो धनजी ॥ मत० ॥ १६ ॥ मात पिता वरजो नहिं रे धन्ना, मत कर एसी वात । एह बत्रीशे कामिनी रे धन्ना, एसा देगी शाप रे हो धनजी ॥ म० ॥ १७ ॥ कर्मतणां दुःख में सह्यां रे माता, कोइ न जाणे भेद । राग द्वेषके पूंछडे रे माता; बाध्यां वैर विरोध रे हो जननि ॥ हुँ० ॥ १८ ॥ साधुपणामें सुख घणां रे माता; नहिं दुःखरो लवलेश । मलशे सोइ खावशुं रे माता, सोइ साधु उद्देश रे हो जननि ॥ हुँ० ॥ १९ ॥ एकलो उठी जायशे रे माता, कोइ न राखणहार । एक जीवके कारणे रे माता, क्युं करो एसो विलाप रे हो जननि ॥ हुँ० ॥ २० ॥ न कोइ धन्नो मर गयो रे माता, न कोइ गयो परदेश । उग्या सोइ आथमें रे माता, फूल्यो सो करमाय रे हो जननि ॥ हुँ ले० ॥ २१ ॥ काल अचिंतो मारशे रे माता; कोण छोडावण हार । कर्म काट मुक्तें

गया रे माता, देवलोक संसार रे हो जननि ॥हुँ ले० ॥२२॥
जे जेसी करणी करे रे माता, तिन तेसा फल होय। दया धरम
संयम विना रे माता, शिवसुख पामे न कोय रे हो जननि
॥ लेशुं०॥ २३ ॥ इति ॥

श्री द्वारिका नगरीनी सजाय

दोहा- दोनुं बंधव आरडे, दुःख धरतां मन मांहि;
बलती देखी द्वारिका, कीजे कवण उपाय. १
रतन भींत सोवन तणी, तेह बले ततकाल;
सोवन थंभा कांगरा; जाणे बले पराल. २

ढाल-बलती द्वारिका देखी ने रे भाई, घणा थया दिलगीर रे,
छाती ते लागी फाटवा रे भाई; नयणे वछुटयां नीररे,
माधव इम बोले; १
बे बांधव मलीने तीहां रे भाई; वात करे करुणाय,
दुःख साले द्वारिका तणुरे भाई; अब कीजे कवण उपायरे;
माधव० २
किहांरे द्वारिकानी साहिबीरे भाई, किहां गजदरनो ठाठ;
सज्जननो मेलो किहां रे भाई; क्षणमां हुआ घणावाट रे,
माधव० ३

हाथी घोडा रथ चले रे भाई; बेंतालीस बेंतालीस लाख;
अडतालीस क्रोड पाला हतारे भाई, चणमां हुई गया राखरे,
माधव० ४

हलधरने हरजी कहे रे भाई, धिग कायरपणुं मोय;
नयरी बळे मुज देखतारे भाई, जोर मुज न चाले कोयरे;
माधव० ५

नयरी बळे मुज देखतारे भाई, राखी न शकुरे जेम;
इंद्र धनुष में चढावीयुं रे भाई; ए बल भाग्युं केम रे,
माधव० ६

जेणी दीशे जोता तिणी दिसे रे भाई, सेवक सहस अनेक,
हाथ जोडी उभा खडा रे भाई, आज न दीसे एक रे,
माधव० ७

मोटा मोटा राजवी रे भाई शरणे रहेता आय,
उलटो शरणो ताकीओ रे भाई; वेरण वेला आय रे,
माधव० ८

बादल बीज तणी परे रे भाई; बुद्धि बदलाये सोय;
इण दोहीलीमां आपणो रे भाई; सगो न दीसे कोय रे,
माधव० ९

महेल उपगरण आयुध बले रे भाई, बळे सहु परिवार;

आ आपदा पुरी पडी रे भाई, कीजे कवण विचार रे,
माधव० १०

चलतां हलधर इम कहे रे भाई, प्रगटयां पूर्वनां पाप,
चीजुं तो सवलुं रह्युं रे भाई; मांहि वले मायने वाप रे;
माधव० ११

दोनुं बांधव मांहे घस्या रे भाई, नयरीमां चाल्या जाय;
रथ जोडी तिणे समे रे भाई, मांहे घाल्या मातने तात रे,
माधव० १२

दोनुं बांधव जुतिया रे भाई, आव्या पोलनी मांय;
दोनुं बांधव बहार नीकल्या रे भाई, दरवाजो पडियोआयरे,
माधव० १३

पाछुं वाली जुए तिहां रे भाई, घणा थया दिलगीर;
छाती ते लागी फाटवा रे भाई, नयणे वछुटयां नीर रे,
माधव० १४

हलदरने हरजी कहे रे भाई, सांभल बांधव वात,
किण दीशी आपणे जाइशुं रे भाई, ते दिश मोय वतायरे,
माधव० १५

वचन सुणी माधव तणां रे भाई; हलधर बोले एह,
पांडव भाई कुंता तणा रे भाई; अव जाइये तेहने गेहरे,
माधव० १६

वयणां सुणी हलधर तणा रे भाई, माधव बोले एम,
देशवटो देइ काढीया रे भाई, ते घर जाउं केम रे. मा०
वलतां हलधर इम कहे रे भाई. देखी होशे दिलगीर,
ते किम अवगुण आणशे रे भाई, गिरुआ गुण गंभीर
माधव०
तें तेहनां कारज कियां रे भाई, धातकीखंडमां जाय,
द्रौपदी सोंपी आणीरे भाई, ते केम भुलशे भाईरे.
अहंकारी शीर शेहरा रे भाई, एहवी संपदा थाय,
ते नर पाला चालीया रे भाई, आपदा पडी बहु आयरे.
पांडव मथुरा प्रगटी जिहांरे भाई, अग्नि खुण समुद्र त
ते नयरी भणी चालीया रे भाई, बांधव बेहु सधीर
माधव०
जे नर सय्याए पोढता रे भाई, ते नर पाला होय,
करजोडी विनयविजय इम भणे रे भाई, आ भव पार उता
माधव इम बोले.

॥ अथ सुमतियें दुर्मतिने कीधेल उपदेशनी सभाय ॥

हो दुर्मतडी वेरण थइ लीधो रे महारा नाथने । हो पुरपतडी शील शिथिल कीधो रे संघी साथनें । ए आंकणी । तुने ममता मातायें जाइ छे; तुं तो दूंतपणामां डाही छे, तुं तो वावण थइने वाही छे ॥ हो दु० ॥ १ ॥ तुं मिथ्यामतनी वेटी छेः तुं तो कपट पणानी पेटी छे, तुं तो लोभ पणानी लेटी छे ॥ हो दु० ॥ २ ॥ तें मोह मदिराप्यालो पायो छे; मारो नाथ तेणे भरमायो छे; तें सुकृत खजानो खायो छे ॥ हो० ॥ ३ तें कपट कीधी केलवणी छे, दुःख करवामां तुं प्रवीणी छे, पण गुणठाणे गुणहीणी छे ॥ हो० ॥ ४ ॥ मारो कंथ पासमां पाड्यो छे, मारो विवेक पुत्र विणसाड्यो छे, मारो समकित मंत्री ताड्यो छे ॥ हो० ॥ ५ ॥ तारो मान पुत्र मन खारो छे, तेतो दुर्गतिपुरनो द्वारो छे, ए तो भव अटवी फरनारो छे ॥ हो० ॥ ६ ॥ कहे दुर्मति दोप नहिं ए मारो, में तेड्यो नहिं स्वामी तारो, ए उपाधि तणो सहि उपगारो ॥हो० ॥ ७ ॥ इति ॥ अथ दुर्मतियें सुमतिने दीधेला प्रत्युत्तरनी सभाय ॥ हो शुभ मतिजी मुजने एवडो दोप दियो शा माटें । हो जगजननी-उवट चले ते आवे मुज घर घाटें ॥ ८ ॥ ए

आंकणी ॥ नीर वहे नीचु चाले, उंचु न वहे कोइ काले, एतो कल वल करि कोइ वाले ॥ हो शु० ॥ ६ ॥ मेला खेला जिहां होवे; तिहां अणतेड्यो जग सहु जोवे, एतो खांते निशि सघली खोवे ॥ हो० ॥ १० ॥ जिहां देव गुरु दरसण करवा, कथा सुणी पातिक हरवा, तिहां मोह आवे छे मन हरवा ॥ हो० ॥ ११ ॥ संगें कथा सुणवा जावे, आलस उंघ तिहां आवे, भगवंत वचन नहिं मन भावे ॥ हो० ॥ १२ ॥ सहि कंत तमारो समजावो, प्रेमवायकथी वली रीजावो, तिहां दुर्मतिनो नहिं दावो ॥ हो० ॥ १३ ॥ समता घरमांहे जेह वसे; शुद्ध समकित तो तेहज धरशे, भवसागर पण ते तरशे ॥ हो० ॥ तेने उपाधि तणुं घरतो टलशे, ते समाधि तणा घरमां भलशे तेतो महानंद पदमां जइ मलशे ॥ हो० ॥ १५ ॥

॥ अभव्यने उपदेश न लागवा विषे ॥
॥ सज्झाय ॥

॥ उपदेश लागे न अभव्यने, वहुविधशुं वूजवे कोय रे । गंगाजल नवरावीयें, पण वायसहंस न होय रे ॥ २० ॥ ॥ १ ॥ जिम जिम वहु प्रतिवोधियें, तिम तिम वमणो थाय रे । हांजी कुटिल अश्वतणी पेरें, अवलो अवलो ते जाय रे

॥ उ० ॥ २ ॥ पयने शाकर पातां थकां, विपधरने वधे-विप पूर रे। हांजी हाण करे हित दाखतां, ते माटें वेशीयें दूर रे ॥ उ० ॥ ३ ॥ अजाण दुःखें आराधियें; सुजाण घणुं सुलभ रे। हांजी दाधारींगा मांनवी, वूजवंतां महादुर्लभ रे ॥ उ० ॥ ॥ ४ ॥ मारक उदाइ रायनो, नमुची नामें प्रधान रे। हांजी वार वरस लगें वूजव्यो, तो पण न वली कांइ शान रे ॥उ०॥ ॥ ५ ॥ शीखामण देतां थकां; जे समजे नहि कलपंत रे। हांजी अवगुण कारी जाणजो, सुग्रीव वानरनो दृष्टांत रे ॥उ० ॥ ६ ॥ कुसंगा संग न कीजीयें, धरियें नवपदनुं ध्यान रे। हांजी उदय सदा सुख उपजे, उत्तम संगनिदान रे ॥ उ० ॥ ॥ ७ ॥ इति सज्झाय ॥

॥ पद ९ मुं ॥

काल तारे शिर भमेरे, चेतन प्यारा। मनवा तुं जो विचारी जगमां न रह्या जारी। राम शंभु के मोरारी रे॥ चेतन प्यारा॥ ॥ काल० ॥ ए टेक ॥ १ ॥ नाम तेनो नाश थाशे, जनम्यो ते मरी जाशे। घडी न राखी शकाशेरे ॥ चेतन० ॥ २ ॥ जेम होलापर दोडे, बाज पंखी डोक मोडे। कोइने न काल छोडेरे ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ जेनी राजरिद्धि भारे; क्रोड सैन साज सारे। कालने न कोइ वारे रे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥

आव्योतो तुं मुठीवाली; जवुं जीव हाथ खाली । करे माथाकूट ठाली रे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ लखपती छत्रपती, गया कैंक करोडपती । दीठा तें नयणावती रे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ चक्रि हरिवल राया, खट खंडमां न माया । वलती चेहमां समाया रे ॥ चेतन० ॥ ७ ॥ जर जोरुने जवानी मोहनी ए राजधानी । दुनियां वनी दिवानी रे ॥ चेतन० । ८ ॥ धन धरणी ने धरा, अंतवेला थाय परा । पुण्य पाप साथ खरा रे । चेतन० ॥९॥ जीव तारी जींदगानी, एक वेला धूलधाणी । कर तुं साची कमाणी रे ॥ चेतन० ॥ १० ॥ रेंट घटमाल जेवो, आरा पछी वारो लेवो । एक दहाडो सौने देवोरे ॥चेतन० ॥ ११ ॥ पण मायाने न तजे, प्राणियो न प्रभु भजे । सामग्री न रुडी सजे रे ॥ चेनन० ॥ १२ ॥ माया तजी ध्यान धरे, स्हेजमां संसार तरे । सांकलो पोकार करे रे ॥ चेतत० ॥ १३ ॥

॥ श्री दशारणभद्रनी सज्जाय ॥

(भेखरे उतारो राजा भरथरी- ए देशी.)

वीरजिणंद समोसर्या, दशनपुरे मुनिरायरे; सुर नर इंद्र सेवा करे, हरप धरी मुनिभाय रे ॥ १ ॥ दशारणभद्र राजा चिंतवे; आणी मन अभिमानरे, किणेरे न वांद्या तिम हुं

वांदशुं, महारो जनम करीश परमाण रे ॥ दशा० ॥ २ ॥ चतुरंग सैन्यशुं परिवर्यो, साथे सवि परिवाररे, त्रिभुवन तृण सम मानतो, वीर वंदिया हर्ष अपार रे ॥ दशा० ॥ ३ ॥ सोहमपति अवधियें करी, जाणियो अति अभिमानरे; इंद्र एरावण आविया, दीपता मेरु समान रे ॥ दशा० ॥ ४ ॥ पंच सय चार मुख शोभता, मुख मुख आठ आठ दंत रे, दंत दंत आठ आठ वावडी, वाव्यें वाव्यें आठ कमल हुंतरे ॥ दशा० ॥ ५ ॥ कमल कमल लाख पंखडी, पत्रें पत्रें नाटक होय रे; पदम पदम विच करणीका; तिहां जिनमंदिर जोय रे ॥ दशा० ॥ ६ ॥ इंद्र इंद्राणी आठशुं, पूजे जिनबिंब भावरे; चोसठ सहस गज एहवा, आव्या वंदवा जिन सुरराव रे ॥ दशा० ॥ ७ ॥ इंद्र देखी भूप इम भणे; मान जीपवा कर्यो उपाय रे; सिंह शियाल न होय सही; लेइ संयम लगाडुं पाय रे ॥ दशा० ॥८॥ दानेश्रीशांति जिनेशरु, माने श्रीदशारणभद्र रे, भोगे श्रीशालिभद्र गुणनीलो, शीले श्रीथूलिभद्र रे ॥ दशा० ॥ ९ ॥ तपबलें करम क्षय करी, पामियो मुक्ति निस्तंद्र रे, आचार्य (श्री) शिवचंद्र पाय नमी, विनवे मुनि रामचंद्र रे ॥ दशा० ॥ १० ॥

॥ रहनेमी मुनिनी सज्झाय ॥

(राग मारुणी सांभलजो मुनि सजमरागी ए देशी)

पावस ऋतु वरसे घनमाली; भीनी पहेरण फालीरे; चीर उगावतें तन ऊघालि, रहनेमि मति चाली रे ॥ १ ॥ ममकर ममकर देवर आली, अस्हेअ नहीं ते वाली रे, सतीअ शिरोमणि राजुल वाली, वचन बोले टंकशाली रे ॥ मम० ॥ २ ॥ दिवस घणा दीक्षा तें पाली, इणि कारणि विटाली रे, सुकुल जात बांधव वनमाली, हीयडे जोय निहाली रे ॥ मम० ॥३॥ मम काया पेखी सुंवाली, भ्रम भूलो दंदाली रे, मलमूत्रें भरी विकराली, तोही न चेते हाली रे ॥ मम० ॥४॥ एहवी आल करे रे पींडाली, अम्हेअ नहीं गोवाली रे, वाघ गाय चीतर जिम छाली, विहे मेघ मराली रे ॥ मम० ॥ ५ ॥ इणे आले जो अरे कपाली ! मन्मथ देही वाली रे, इंद्रे काया कीधी छिद्राली, रावणे दुरगति भाली रे ॥ मम० ॥ ६ ॥ इण आले उत्तम गति टाली, दे दुरगति कंटाली रे; शोभा सुयश लिये उदालीं; अयशतणी परनाली रे ॥ मम० ॥ ७ ॥ इण आले बांधे रे भवाली; कांय तें लज्जा राली रे, महीमां कीरती होशे काली, अवर केही देउं गाली रे ॥ मम० ॥ ८ ॥ सुणि मुनि मेरी शीप विशाली, तिज किन डाकडमाली रे, कां घाले रज

कंचन थाली, चतुर चेतो मनवाली रे ॥ मम० ॥ ६ ॥ शीलें शिवमंदिर पटशाली, जनम लगे दीवाली रे, वेरी फोज टले अणीआली; सुखसंपति भणशाली रे, ॥ मम० ॥ १०॥ शीलें भवसंतती परजाली; मणि कंचन परवाली रे; नेमिनाथ जपुं जपमाली; करे शील रखवाली रे ॥ मम० ॥ ११॥ सतीअतणे वचने अजुआली, आलोयण पखाली रे,॥ यतन करी दीक्षा संभाली; शुद्ध लगाइ ताली रे ॥ मम० ॥ १२ ॥ कीरति कविजन करे रसाली; वयण नीका संभाली रे, तप करीय करी काया चोखाली, गुण गावे अमराली रे ॥ मम० ॥ १३ ॥ जमक बावनी नित हितकारी; जे भणशे नरनारी रे; शील सदा व्रत पालो भवियण, शीख नीको कहे सारी रे ॥ मम०॥ ॥ १४ ॥

॥ श्री मेघकुमार मुनिनी सज्झाय ॥

चारित्र लइ चिंतचिंतवरे हां; मनमें मेघकुमार; दीक्षा दो हिली; शिर तांइ पगरी लगीरे हां कदि आवे करतार, दीक्षा दोहिलीं, पाली जावे केम रे हां, साधु संतापे एम दिक्षा दोहिली, नहीं मुज उपर प्रेम रे हां कूड कहु तो नेम ॥ दी० । १॥ रात हुइ खटमासनीं रे हां, वेदन वधती थाय ।दी०। दुखरांदाधां माणसां रे हां;

जनमारो किम जाय ॥ दी० ॥ २ ॥ आवे जावे उपरे रे हां भर यतियांरी भीड, ॥ दी० ॥ ए सहु आप सवारथी रे हां, कुण जाणे परपीड ॥ दी० ॥ ३ ॥ आगें देखी आवतां रे हां, हस मिलता सहुकोय ॥ दी० ॥ हिव साथी हुवा पछी रे हां, सार न पूछे कोय ॥ दी० ॥ ४ ॥ दीक्षालघु नीचे सुवेरे हां काढण लागा कैद ॥ दी० ॥ साचो काम सर्यां पछे रे हां, वैरी हुवा वैद ॥ दी० ॥ ५ ॥ जो हुँ पहिली जाणतो रे हां, तो न करतो ए काज ॥ दी० ॥ हिव हुँ पिण परवश पडयोरे हां मुष्टिभली वछगज ॥ दी० ॥ ६ ॥ अथवा कयुं न गयो अजेरे हां, शरम न कीधी जाय ॥ दी० ॥ आपणे हाथे आपणोरे हां, पग कहो केम कपाय ॥ दी० ॥ ७ ॥ ए ओघो ए मुहपति रे हां, वीनवशुं महावीर ॥ दी० ॥ मे म्हारे थें थांहेरे रे हां, सस्यो वस्यो (सर्योंवर्यों) इणसीर ॥ दी० ॥८॥ इम चिंतवीने आवियारे हां, प्रहसमें जिणवर पास दी० ॥ वीर कहे किम साधुजीरे हां, दीसो आज उदास ॥ दी० ॥ ९॥ हाथीरे भव तुं हुवोरे हां; पर उपकार प्रधान ॥ दी० ॥ सार करी शशलातणीरे हां, दीधो अभयादान ॥ दी० ॥ १० ॥ सात दिवस वेदन सहीरे हां, बीजें भव बहु भांत ॥ दी० तिण दुख आगे ए किशुं रे हां, न करे केम निरांत ॥ दी० ॥

॥ ११ ॥ वचन सुणया महावीरना रेहां, श्रवण अमृत समान, ॥ दी० ॥ ईहापोहें उपनो रेहां, जाती समरण ज्ञान ॥ दी० ॥ ॥ १२ ॥ दीधो मिच्छा दुक्कडं रेहां, अभिग्रह लीधो एह, ॥ दी० ॥ नयणपणे न करुं कदे रेहां, ओषध हुं इण देह ॥ दी० ॥ १३ ॥ चतुरपणे चारित्र लियो रेहां; सूधे मन परिणाम, ॥ दी० ॥ मुनि श्रीसार नमे सरदारे हां, त्रिविध त्रिविध शिर नाम ॥ दी० ॥ १४ ॥ इति श्रीवादीन्द्रश्रीपार्श्व-चंद्रसूरीन्द्र विनेयश्रीसारमुनिराजेनकृतः स्वध्यायः ॥

॥ श्री नदिषेणमुनिनी सज्जाय ॥

(थांरा महेलां उपर मेहझबुके बीचरी ए राह)

नंदिषेण नयर मझार आव्यो तप पारणे; होलाल आव्यो० भमतां साधु सुजाण कोश्या घर बारणे, होलाल, कोश्या० विहेरणरो धर्म लाभ दियो तिहां थोभीने; हो लाल दियोति० इहांकण अर्थनो लाभ हुए जो तो कने; होलाल हुए० ॥ १ ॥ वेश्यानो सुण बोल वल्यो मुनि चिंतवे, हो लाल ॥ वल्यो० ॥ निर्धन जाणी मुज जिम तिम ए लवे, होलाल जिम० आणी मन अहंकार लियो तिणे ताणीने, होलाल लियो० नाखे तृण करी खंड तिहां किणजाणीने, हो लाल तिहां० ॥ २ ॥ घरपे

सोवन कोडि वार तिहां तप बले, होलाल वार० ॥ लालच लागी कोश्यानमे मुनि पाय तले, हो लाल नेमे० आवो मंदिर मांजी रहो घर म्हालीये, होलाल रहो० तुं पिउडो हुं नारि मिल्यां० दिन गालिये, हो लाल मिल्यां० ॥ ३ ॥ मीठा वयण मलके सुणि मन पीगल्यो; होलाल सुणि० कर्म लिख्यानो दोष न जाए किणि कल्यो; हो लाल न जाए० वेदे इम शासन देव अछे फल भोगतो, होलाल अछे० भमर परे रस लियो तजो दिन योगनो हो लाल तजो० ॥ ४ ॥ वेश्या गेह निवास रह्यो नंदिषेणजी; हो लाल रह्यो० न पडे नारी पासे अछे कुण तेहजी, हो लाल अछे० मांगवी घर घर भीख सहु मन राखवो, होलाल सहु० श्रावक श्राविका मिष्ट वयणनो भाखवो, हो लाल वयण० ॥ ५ ॥ इणि परे भावठ भीख तजी धर्म बुझवे; हो लाल तजि० राखी थापण वेप दीक्षामग सुझवे होलाल दीक्षा० दश दश दिन प्रतिबोधी मूके श्रीजिनकने, होलाल मूके० बीत्यां वर्ष इम वार न बुझे इम किमे होलाल न बुझे० ॥ ६ ॥ जाय न सासरे आप ओरां दे शीखडी, होलाल ओरां० जाणी कहो मुजधर्म रहो कां तुम पडीहो लाल रहो० वांकाजडशु वाद कार्यो नवि किम पचे होलाल कर्यो० भोजन थाय अवीर शीतल अन्न किम रुचे हो लाल शीत० ॥ ७ ॥ आसंगाइत

नारी कहे इम आकुली होलाल कहे० दशमे ठामे तुम उठो० तिहां कचटली होलाल उठो नर विण वुज्यां एह हुँ न उठुं हवे हो लाल न उठुं० महारो भाजे नेम कोश्याप्रति इम चवे होलाल कोश्यां० ॥८॥ सांभली उठयो धीर आव्यो दिन दीखनों हो लाल आव्यो, हसतां बोल्यो बोल थयो मुज शीखनो हो लाल थयो० रहो रहो व्हाला पिउजी कह्यो में हास्यमें हो लाल कह्यो० मांखण टाली मान न होवे आशमें हो लाल न होवे० ॥ ९ ॥ बोल विणठो खास किमे ग ना चडे हो लाल किमे० बोले भाग्या मन तिको जडतां ना जडे हो लाल तिको० तंतविण तूटो नेह तिहांकिण कारिमो हो लाल तिहां० जिणरे त्रियाशुं नेह तिहां शनि बारमो हो लाल तिहां० ॥ १० ॥ वीर कने लही दीख करे तप कष्टनो हो लाल करे० नरककुंडथी ऊठी कियो मन श्रेष्टनो हो लाल कियो० संयम पालिय देव थया गुण गाइये हो लाल थया० मुनि दशरथ कहे एम शीले धर्यां सुख पाइये हो लाल धर्यां० ॥ ११ ॥

॥ श्री कामलत्तानी सज्जाय ॥

शी कहुँ कथनी मारी हो राज० हो शी कहुँ कथनी मारी,
मने कर्म करी महीयारी हो राज हो शी० १

शीवपुरना माधवद्वीजनी, हुं कामलत्ताभिध नारी
रूप कला भर यौवन भारी, उरवशी रंभा हारी हो राज शी० २
पारणे केशव पुत्र पोढाडी, हुँ भरवा गई पाणी,
शीवपुरी दुश्मनराये घेरी,
हुँ पाणीयारी लुंटाणी हो राज शी० ३
सुभटोए निज रायने सोपी, राये करी पटराणी
स्वर्गना सुखथी पण पति माधव;
विसरें नहि गुणखाणि हो राज शी० ४
वरस पंदरनो पुत्र थयो तव,
माधवद्वीज मुज माटे, भमतो योगी सम गोखेथी,
दीठो जातां वाटे हो राज शी० ५
दासी द्वारा द्वीजने बोलावी; द्रव्य देई दुःख काप्युं,
चौदश दिन महाकाली मंदिरमां,
मनशुं वचन में आप्युं हो राज शी० ६
कारमी चूके चीसे पोकारी महीपतिने में कीधुं,
एकाकी महाकाली जावा,
तुम दुःखे में व्रत लीधुं हो राज शी० ७
विसरी बाधा कोपी काली, पेटमां पीड थई भारी,
राय कहे ए बाधा करशुं;

तिलण चूक मटी मारी हो राज शी० ८
चौदशने दीन राजा राणी एकाकी पगपाले,
महीपति आगल ने हुँ पाछल,
पहोंच्या बेउ महाकाली हो राज शी० ९
राजाए निज खडग विश्वासे मारा करमां आप्युः
जव नृप मंदिरमांही पेसे,
तव में तस शिर काप्यु हो राज शी० १०
रायने मारीने पतिने जगाड्‌ु; ढंढोलतां नवि जागे,
नाग डस्यो पति मरण गयो तव,
उभय भ्रष्ट थई भागी हो राज शी० ११
नाठी वनमां चोरे लुंटी, गुणीकाने घेर वेची,
जार पुरुषथी जारी रमतां;
कर्मनी वेल में सींची हो राज शी० १२
माधव सुत केशव पितृ शोधे, भमी गुणिकाने घेर आवे,
धन देखी जेम दूध मंजारी;
गुणिकाने मन भावे हो राज शी० १३
गुणिकाए निज मुजने सोंप्यो; जाण्यु न में ललचाव्यो;
धिक धिक पुत्रथी जारी खेलु,
कर्मे नाच नचाव्यो हो राज शी० १४

ज्ञारी रमतां काल वीत्यो कांई; एक दीन कीधी में हांसी,
कयांना वासी क्यां जवाना;
तव तेणे अथ इति प्रकाशी हो राज शी० १५
द्रढ मन राखी वात सुणी में; मति गुह्य में राखी मारी,
पुत्रने कह्युं तुमे देश सिधावो,
में दुनिया विसारी हो राज शी० १६
पुत्रने वोलावीं कह्युं गुणिकाने, हा हा धीक मुज तुजने,
महा पातिकानी शुद्धि माटे,
अग्निुं शरण हो मुजने हो राज शी० १७
सरिता कांठे चेह सलगावी, अग्नि प्रवेश में कीधो,
कर्मे नदी दीनापुरमां तणाणी;
अग्निए भोग न लीधो हो राज शी० १८
जलमां तणाती कांठे आवी, आहिरे जीवती काढी!
मुज पापीणीने संघरी न नदीये,
आहिरे करी भरवाडी हो राज शी० १९
ते भरवाडण दहीं दूध लइ; हुं वेचवा पुरमां पेठी,
गज छुट्यो कोलाहल सुणीने;
पाणीयारी ने हुं नाठी हो राज शी० २०
पाणीयारीनुं फुट्युं वेडुं, अ सके रोवा लागी,

दहीं दूधनी मटुकी मम फुटी;
हुँ तो हसवा लागी हो राज शी० २१
हसवानुं कारण तें पुछ्युं, वीरा अथ इति कीधुं,
केने जोउ ने केने रोउ हुं,
दैवी दुःख मने दीधुं हो राज शी० २२
महीयारीनी दुःखनी कहाणी, सुणी मूर्छा थइ द्रिजने,
मूर्छा वली तव हा हा उचरे,
द्विज कहे धीक धीक मुजने हो राज शी० २३
मा दीकरो वेउ पस्तावो करतां, ज्ञानी गुरुने मलीया,
गुरुनी दींक्षा शिक्षा पामी, भवना फेरा टलीया होराज शी० २४
एक भवे भव बाजी रमतां, उलट सुलट पडे पासा,
नाना विध भवोलाव सांकलचंद,
खेले कर्म तमासा हो राज शी० २५

हरिश्चन्द्र नृपनी सज्झाय

दोहा

श्री गुरुपद पंकज नमी, समरी शारदा माय,
सत्यवादी हरिश्चन्द्रनी, उत्तम कहुं सज्झाय ।

(पंथीड़ा संदेशो कहेजो श्यामने—ए राग)

सत्य शिरोमणि हरिश्चन्द्र पृथ्वीपति,
नगरी अयोध्या जेनी स्वर्ग समान जो;
१ सुरगुरु सम वसुभूति, मंत्री जेहनो,
राणी सुताराने कुमार देव समान जो। सत्य १
अवसर जाणी २सुरपति एक दिन उच्चरे,
हरिश्चंद्रना गुण देवने करे जाण जो,
प्राण जतां पण ३सत्यपणु छोडे नहि;
मनुष्य छतां पण केटलां करु वखाण जो सत्य. २
स्वामी वचने श्रद्धा नहिं वे देवने,
तेणे विकुर्व्या तापसो पुरनी वाह्य जो,
४सुवर थईने नाश कर्यो ५ आरामनो,
पोकार करतो गयो तापस पुरमांय जो. सत्य ३
सांभली नृपति चाल्यो तापस आश्रमे,
हाथमां लइने खेंच्युं ताणी तीर जो;
गर्भणी हरणीने वचमां लागी गयुं,
हरणी मरतां ६ कुलपति, कुटे शिर जो; सत्य. ४
पश्चातापनी सीमा न रही रायने;
कुलपति पासे नृप नमावी काय जो,

प्रायश्चित माटे राज्यपाट दउं आपने, पाप हत्या जो लागेली मुज जाय जो. सत्य० ५ उपर लाख सोनैया आपु पुत्रीने; पोपेली मृगली जेणे दिवस ने रात जो, कुलपति कहे हुँ राजा; आजथी पुरनो, लाख सोनैया, द्यो वेची तुम जात जो; सत्य. ६ राज्यने तजतां; आडो मन्त्री आवीयो, त्यारे तापसे कीधो मन्त्रो ७कीर जो, कपिंजल अंग रक्षक वचमां बोलीयो तेने पण कीधो ८जंबुक छांटी नीर जो, सत्य. ७ ९कसोटी कीधी देवे राज्य तजावीयु, तोपण सत्वमां अडग रह्यो छे भूप जो; काशी नगरीमां जई चौटामां रही, वेचाण माटे १०त्रखे उभां चूप जो, सत्य० ८ वेचाण लीधी राणीने एक ब्राह्मणे, कुमारने पण वेच्यो ब्राह्मण घेर जो, पोते पण वेचाणो भंगीना घरे, कर्मराजाए कीधो कालो केर जो. सत्व. ९ जल वहन कर्यु वार वरस लगे नीचनु, नोकर थईने चर्यो चंडाल घेर जो, दुःख सहन करवामां मणा राखी नहिं तोपण कर्मे जरा न कीधी म्हेर जो, सत्य. १० राक्षसीरूप करावी कीधी विटंबना, तारापतिने भरी सभानी मांय जो, नाग डसावी मरण कर्यो रोहिताश्वने; ११विखुटो कर्यो तारामतिथी राय जो, सत्व. ११ १२मृतक अंबर लेवा १३प्रेतवने गयो, चंडालना कहेवाथी नोकर १४राय जो. आवी

सुतारा कुमार मृतकने उचकी, १५दहन क्रिया करवा मूकी काय जो; सत्य. १२ रुदन करती छातीफाटने कुटती, खोलामां लइने १६ बालक उपर प्रेम जो; एटलामां हरि आव्यो दोडतो आगले, ओलखी राणीने; पूछे छे कुशल क्षेम जो, सत्य. १३ सुतारा कहे पुत्र मरणनी आ दशा, चंडाल थइने मने वेची १७द्विज घेर जो, राज्यपाट गयुं कुटुंबकबीलो वेगलो पुत्र मरणथी वत्यों कालो केरजो सत्य. १४ बार बरस लगे भंगीपणुं आपे कयुं, चाकरडीपणुं थयुं मारे शिर तेम जो, कुंवर डसायो वनमां काष्ट लेवा जाता; स्वामि हवे शुं पुछो छो कुशल क्षेम जो ? सत्य १५ प्रभु हवे तो दुःखनी हद आवी रही; शिरपर उगवा बाकी छे हवे तृण जो, दुःख लख्युं हशे केटलुं आपणा भाग्यमां, नाथ हवे तो मागुं छुं हुं मरण जो; सत्य. १६ गभरायो नृप राणीनी वातने सांभली, धीरज धारी कयुं हृदय कठीन जो, सहन करीश हुं जेटलुं जे दुःख आवशे, पण १८सूर्यवंशी, थाशे नहि कदि १९दीनजो, सत्य. १७ आटलुं बोली प्रेमनुं बंधन तोडीने; मुख फेरवीने माग्युं मृतकनुं वस्त्र जो; रायनी समस्या सुतारा समजी नहि, फरि फरि नृपना हाथमां दे छे २०पुत्र जो. सत्य. १८ पुत्रना शबनुं काम नथी हवे माहरे, त्यारे शुं कहो छो- बोलो थई

सन्मुख जो, लज्जा मूकी; अश्रुथी नेत्रो भरी नृपे; माग्युं २२अंबर, मृतकनु करी २३उन्मुख जो, सत्व. १९ एटलामां करी, देवे वृष्टि पुष्पनी; सत्यवादी तमे जय पामो महाराज जो कसोटी कीधी, दुःखमां नाखी आपने, क्षमा करो ते सत्वतणा शिरताज जो सत्य. २० दीधुं वरदान देवे राज्य आवादनुं; *संजीवन करी पुत्रने गया देवलोक जो; मंत्रीश्वर-अंगरक्षक२४ वन्ने आवीया, २५श्लाघा थई छे नृपनी त्रणे लोक जो सत्व. २१ धन्य छे धन्य छे सत्यशिरोमणि रायने; जेम जेम कसीये; तेम तेम कंचनवान जो, २६सुरपति आगल स्तुति करे हरिश्चंद्रनी; दीठो न जगमां धैर्यमां मेरू समान जो; सत्व. २२ विचरंता प्रभु शान्ति २७जिनवर आवीया, रायने राणी वंदन अर्थे जाय जो, देश २८नांते हरिश्चद्रे पूरवभव पुछीयो, श्या कारणथीं; भंगीपणुं मुज थाय जो १ सत्व. २३ वार वरस लगे दुःखना डुंगर देखीया, सुतारा शिरपर आव्युं महान २९कलंक जो विखुटो कर्यो पुत्र ने राणीथी मुजने, कारण विण कदी कार्य बने न निशंकजो. सत्व. २४ प्रभु कहे राय राणी तुमे पुर्वे हता, सार्थ साथे बे मुनि आव्या तुम गाम जो, रूप ३०देखीने राणी वींधाणी कामथी, बोलावे दंभथी दासी द्वारा भोडीं हाम जो, सत्व. २५ हाव-भाव देखाडया बहु एकांतमां;

पण मुनि कहे छे भस्म थयो अमकाम जो, तेथी अमारो काम हवे नथी जागतो; वली मल-मूत्रनी कूंडी काया छे, ३१उद्दाम जो, सत्व. २६ निराशी थई राणी नृप कने ३२ जइ; आल चडाव्युं मुनि उपर निरधार जो, ताडना पुर्वक घंघीखाने नखावीया, ३३मासांते राय करे पस्तावो अपार जो, सत्व. २७ दोप खमावी मुनिथी समकित पामीया, मुनिवर बन्ने काल करी देवलोक जो, कसोटी सीपथी, वैर पुरव तेणे वालीयुं, सुख दुःख निमित्त कर्म जाणी तजो शोक जो. सत्व. २८ राय ने राणी जातिस्मरण पामीया, अल्प निदानने दीठो विपाक महानजो; जगतनी विचित्रता सर्व अनुभवी, कर्मबंधनना छोडया सकल निदान जो. सत्व. २६ ३४साकेतपुरनुं राज्य दई रोहिताश्वने; दीक्षा लीधी सोलमां जिनवर पास जो; केवल पामी ३५शिवपुरमां सीधावीयां नीति-उदयनो करजो शिवपुर वास जो सत्व. ३०

दादा साहेबनी आत्मशिक्षा-पचीशी

(दुहाछंद)

रे अभिमानी जीवडा !, तुं केम पामीश पार; लघु छल नीरखे पारका, तुं तेहनो भंडार ॥१॥ अछता दूपण

पारका, गुण आपणा प्रकाश; एणीपरे अभिमान वशे, वसीयो नरक-निवास ॥ २ ॥ मांहे सूत्र अनेरडुं, अवर देखाडे वहार, गयवर केरा दंत जेम, फोगट जनम म हार ॥ ३ ॥ सुणी प्रशंसा आपणी, हैडे थाय उल्लास, दाझे पर-गुण सांभली ए तुज नित्य अभ्यास ॥ ४ ॥ ए ओखाणो जग प्रगट, जननी जाणे बाप, जीवडा ! तें छानां कर्यां, तिहां मन जाणे पाप ॥ ५ ॥ तें न कर्यां बाहेर प्रकट, जाणतां थयो अजाण, पर अवगुण हसि हसि कहे, ए तुजकिसुं विन्नाण ॥ ६ ॥ भोला भूलिम भ्रम पड्यो, रे जीवडला ! अन्नाण; अण-गमते अमर्ष म धर; कर्म सरिखो प्राण ॥ ७ ॥ परभवे तें तेम नवि कर्युं, जेम गंजी न शके कोय; हवे पस्तावे थाय किशुं, हैये विमासी जोय ॥ ८ ॥ नीचे उंचे थोडले, तुला जेम तुं थाय क्षण क्षण एणि परे चालतां, मुज मन एम न सुहाय ॥ ९ ॥ जेम तेम घर परिहरी, चाल्यो दूर विदेश, रे काचा तुं प्राणियां ! पाछी दृष्टि म देश ॥ १० ॥ जो ते पाछुं संभारीए; तो आगल होय दूर, काज न सीझे आपणुं; मरीए झूरी झूर ॥ ११ ॥ स्त्री संभारे पुरुषने पुरुष संभारे नार, वली वली उससी नीससी, हियडा-हरख मझार ॥ १२ ॥ जो तें जिन-धर्म आदर्यो; तो जे सुख मधु-बिंदु, तेहने शुं संभारवुं

दूधे आछण बिंदु ॥ १३ ॥ जीवन-कारण ठीकरी सुधा-कुंभ म फोड, काणी कोडी काचवली, हार म रतन कोड ॥ १४ ॥ जे चाले तुज पग पडया; ओलखी तेज कुबुद्धि, अवर बूंब बाहर अवर, करत किसी फल सिद्धि ॥ १५ ॥ प्राणी कहे प्राणी ! तुं, निशि निचिंत सुएस, ए मा साहस सारिखो साहस कांई करेस ? ॥ १६ ॥ काया माया कारमी, फोगट तुं फुलाय, सनत-कुमार चक्री जेम, क्षणमां रोगी थाय ॥ १७ ॥ प्राणी ! मोटा ताहरे; वैरि विषय-कषाय, अह-निशि ग्हेजे जागतो; जेओ करी न शके घाय ॥ १८ ॥ एणे घाणी परे घासव्यो; तो पण एहशुं प्रीति; करतो वार्यो नवि रहे, भटके भाटकी भीति ॥ १९ ॥ शुनक पाषाणे हण्यो, पाषण करडे जोय, दूरे शर तजी केशरी, शरपति केडे होय ॥ २० ॥ तेम दुःख-कारण कर्म गणी, तेहने केडे लाग, मोहनी निद्रा छांडी जीव ! ;जागी शके तो जाग ॥ २१ ॥ धर्म-साधन विण जीवडा, एले नर-भव खोय, पुण्य विहुणा प्राणीने, दुर्लभ मलवो सोय ॥ २२ ॥ एम जाणी रे जीवडा ! परमारथ संभाल, श्रुत-बल सम-रसे झीलतु ; कांई पडे जंजाल ॥ २३ ॥ चेतनशुं थिर-वास करी, माया परिहरी दूर, महियल-महिमा मह-महे, वाधे कीरती-पूर ॥ २४ ॥ एम आतम-शिक्षा तणा,

जे भणशे दुहा एह, पार्श्वचन्द्रसूरि कहे तसु मन धर्म-संनेह २५

दादासाहेब कृत लघु आराधना (बीजी)

(चोपाई छंद)

प्रणमुं पहेला श्री- अरिहंत भरते जे संपइ विहरंत, वंदु सिद्ध अनादि अनंत; श्री आचारज जे गुणवंत १ श्री उवज्झाय नमुं चित्त-धार, साधु जे अढी दीव मजार, नमुं हुं भक्तिए पंच त्रिकाल; त्रिविध त्रिविध त्रिभुवन प्रतिपाल ॥ २ ॥ पंचपरमेष्टी एज नवकार, चउदह पूरवनो उद्धार; श्रीजिन-शासन एहज सार; समरंतां लहीए भव-पार ॥ ३ ॥ अरिहंत सिद्ध साधु ने वली, धर्म जेह भाख्यो केवली, ए मंगल मुज मंगल-कार एहज चार लोगुत्तम-सार ॥ ४ ॥ एहज चार कीजे नित शरण जेम मुज टाले जन्म-मरण; ए जामलि न हुं बीजो कोय, शरण वज्र-पंजर जे होय ॥५॥ ए संसार असार अपार, अथिर बहुल दुःख-भंडार, स्वारथे मलीयो सहु परिवार, जिन विण मुज न हु तारणहार ॥ ६ ॥ चिहुगति भम्यो जीव एकलो, सुख-दु:ख सहतो ए एकलो, एकज जन्मे एकज मरे एकज भव-सायर उतरे ॥७॥ बीजो कोई न चाले साथ, धर्ममित्र कीधो निज

हाथ, तेहज पूंठे आवे एक; एम जाणो जीव ! आणी विवेक ॥ ८ ॥ पामी नर-भव आरज-लोग; श्रवक-कुल सामग्री जोग गुरु-उपदेश सूत्रनी साख, निज मति सहित तत्वग्रही राख ॥ ९ ॥ छांडीसुं चार भेदह मिथ्यात, लौकिक लोकोतर विख्यात, अनंतकाल एहज रोलवे; आपी कुमति मुज मन भोलवे ॥ १० ॥ जिन-मत मांही मतांतर घणा, दृष्टिरागे थाय आपणा, अणखम कर जीव ! हुं ओ को किमे, करे तेय जसु मन जे गमे ॥ ११ ॥ परिहर पर चिंता-जंजाल; कर एक आपणनी संभाल; तारे करणी आप आपणी, सत्य ज भाख्युं त्रिभुवन धणी ॥ १२ ॥ जिनवर-प्रतिमा जिनवर दणी, प्रथम तत्व ए देवे गणी, सूध प्रकाशे सूधो करे, ते गुरु तारे आपण तरे ॥ १३ ॥ दयामूल जिन-भाषित-धर्म, प्रवचन-सार तत्वनो मर्म अहिनिशि मुजने एहज प्रमाण, निंदु पाप अढारह ठाण ॥ १४ ॥ इण वेला जे होय प्रमाद, मुजने तो तजो हर्ष-विवाद, सुगुरु-साखे अणसण उच्चरु; दुःकृतनी आलोयण करुं ॥ १५ ॥ पडिवज्जु हवे चारे शरण, इणिपरे साधु पंडित-मरण; वोसिरामि परिग्रह आरंभ, तप-संयमनो लहुं अवठंभ ॥ १६ ॥ मैं वहु लालीयु आ शरीर, चुआ चंदन पहेर्यां चीर; नावण धोवण वहु शणगार, दीधा मधुर सरस

आहार ॥ १७ ॥ चरम-समय पण वोसिरुं, तेहनी ममता-मति
परिहरुं, खामुं जीव चोराशी लक्ष; श्रीजिन सिद्ध सुसाधु समक्ष
॥ १८ ॥ चुल्लो पाणी सावरणी घंटी उखल हल नहरणी;
कोदाला पावडा ने कुठार, बाण धनुष प्रमुख हथियार ॥१९॥
इख्खुवाड करसण घर हाट, बहु वखार अरट घडिघाट,
इण भवे कर्या अनेरे भवे, खामी वोसिरामि ते सवे ॥ २० ॥
जे मुजने लाग्या अधिकरण, अणगण जल कीधा जे तरण,
जीव हण्याइण भवे परभवे, खामी वोसिरामि ते सवे ॥ २१ ॥
कीधी भक्ति देव-गुरु तणी, आसायण टाली गुण-गणी,
इणभवे कीध अनेरे भवे, वली वली अनुमोदुं ते सवे ॥२२॥
साहंमी जनतुं कर्युं सन्मान, करुणा-पात्र भक्तिशुं दान,
इणभवे कीध अनेरे भवे; वली वली अनुमोदुं ते सवे ॥२३॥
पोसह पडिक्कमणां पच्चख्खाण, श्रुत सांभली पाली जिन-आण,
थुण्या देव सुगुण नव नवे, वली वली अनुमोदुं ते सवे ॥२४॥
पाखी चौमासा-दिक पर्व, सूत्र तणी साखे ते सर्व,
इणभवे कीध अनेरे भवे, वली वली अनुमोदुं ते सवे ॥२५॥
किं बहुना ? त्रिहु काले जेह, सुकृत सूत्र अनुसारे तेह;
इणभवे कीध अनेरे भवे, वली वली अनुमोदुं ते सवे ॥२६॥
आराधना संक्षेपे करी, अहनिशि ए भाव मन-धरी;

समरतां भत्व आराधीए, पार्श्वचंद्र सूरि मुक्ति साधीए ॥२७॥

श्री सकलचंदजी उपाध्यायकृत

श्री शांतसुधरसकुंडनी सज्झाय

(राग स्वामी सीमंधर विनती)

शांतसुधारस कुँडमां; तुं रमे मुनिवर हंस रे, गारव-
रेणुशुं मत रमे; मूकजे तुं शिथील मुनि संग रे; शांत० ॥१॥
स्वहित कर म कर भवपूरणा, म कर तुं धर्ममांहि क्रुद्ध रे,
लोकरंजन घणुं मत करे; जाणतो होइ एम मुग्ध रे शांत० ॥२॥
जो यतिवर थयो जीवडो, प्रथम तुं आपने तार रे;
आप सारखे मुनि जो तर्यो; तो पछी लोकने तार रे शांत० ॥३॥
तुज गुणवंत जाणी करी, लोक दीये आपणा पुत्त रे;
अशनवसनादि भरी दीये, खोटडुं म धर मुनिसुत्तरे शांत० ॥४॥
नाणदंसणचरणगुण विना; तुं किम होइश सुपात्र रे,
पात्र जाणी तुज लोक दीये; म भरीश तुं निज गात्र रे शांत० ॥५॥
सुधी समितिगुपति नहीं, नहीं तप एषणा शुद्धि रे,
मुनि गुणवंतमांही मूलगो, किम होये लब्धि ने सिद्धि रे शांत० ।६।
व्याप पार मांडयो घणो गुण विना, भूरि आडंबर इच्छरे, घर तजी
मान माया पडयो, किम होये सिंहगति रींच्छ रे शांत० ॥ ७ ॥

उपशम अंतरंगे नहीं; होये तुज शवल आचार रे; नतिथुति
पूज तु ं अभिलखे, म कर अणमानी पर खाररे शांत० ॥ ८॥
उदरभरणादि चिंता नहीं, स्वजन सुत कलत्त घरवाररे, राज–
चौरादिक भय नहीं,तो हि तुज शिथिल आचाररे शांत० ॥९॥
विविध सुख देखीने लोकना, तुं किश्युं चिंते मुनिराज रे ? तु ं
जनावर्जनादिक पडयो; चूक मा आपणु ं काजरे शांत० ।१०।
आपणु ं पारकुँ मम करे, मूक ममता परिवार रे, चित्त समता-
रसे सींचजे, म कर बहु वाजी विस्तार रे शांत० ॥ ११ ॥
लोक सत्कार पूजे स्तवे, मुज मिले लोकना वृ ंद रे; मुज जस
नाम वहु विस्तरे, इशो अभिमान मुनींद रे शांत० ॥ १२ ॥
पूर्व मुनि सारिखो नही कीसी; आपणी लब्धि ने सिद्धि रे;
अतिशय पण तेहवा नहीं, तोही तुज मान ए बुद्धिरे शांत० ।१३।
पूर्वे प्रभाविक मुनि हुआ; तेटलो नहीं तुज तोलरे, आप हीणुँ
घणु ं भावजे, मुखे घणु ं घणु ं मत बोल रे शांत ॥ १४ ॥
निश्रडी करी जे जन रंजीया, वश कर्या बहु जन लोकरे पू ंठ
दीघे न ते ताहरा, गृही मुनी नातरु फोक रे शांत० ॥ १५ ॥
गुरुप्रसादे गुणहीनने, हुये अछे गुणऋद्धि रे, तु ं गुणमत्सरी
मत हुए; कर निज जीव ए शुद्धि रे शांत० ॥ १६ ॥
संयम योग मूकी करी, वश कर्या जे जनलोक रे, शिष्य गुरु-

भक्ति पुस्तक भर्या, अंत दीए सान विणु शोकरे शांत० ॥१७॥
परम समता सुखजलधिमां, सुरनर सुख एक बिंदुरे तेणे तुं
सेव शमवेलडी; मूकी दे अवर सव धंध रे शांत० ॥ १८ ॥
एक क्षण विश्व जंतु परे, तुं धरे जीव समभाव रे; सर्व मैत्री
सुधापानथी, सकल सुख सन्मुखे लाव रे शांत० ॥ १९ ॥
अल्प गुणवंत गुण रंजीयो; दीन दुःखी देखी दुःखभूर रे, निर्गुणी
द्वेष विरति रही, सकलमुनि सुख चित्त पूर रे शांत० ॥२०॥

उपनय साथे (राग-मेवाडी)

नाहलो न माने कांइ कह्यु माहरुं रे, शोकय हसीने जोय,
नणंद वेहु रे घणी अटारडी रे, जेठ भूठो मुज होय ॥ १ ॥
किम जालवीए रे कुटुंब अटारडुं रे, करे मुजशुं नित रोप, एकण
गामे रे पियर सासरुं रे, वोले मेली मेलो दोप किम ॥२॥

अर्थ—वार भावनामांथी अनित्य भावना भावतो भव्य प्राणी चिंतवे छे के–आ काया स्त्री छे अने मन तेनो स्वामी छे। ते काया स्त्री कहे छे के—'आ मारो नाथ मन मारुं कह्यु मानतो नथी ते जोइने मारी शोकय कुमति के जे हमणां मननी प्रिया वनी छे ते हसे छे। मारी वेउ नणंद निद्रा ने विकथा छे ते वहु अटारी-माठी छे। मारो जेठ कपट नामे

छे ते महाभूंडो छे । काया मन साथे विचारे छे के-आ अटारा कुटुंबने केम जालववुं ? ते कुटुंब मारी साथे निरंतर रोष करे छे । मारुं सासरुं ने पियर एकज गाममां एटले आ संसाररूप शहेरमां ज छे; तेथी ते कुटुंब मारी उपर नवा नवा दोष मूकीने मने पजवे छे १-२

जेठाणी मुज परघर बहु फरे रे, देवरने नहिं लाज,
देराणी छे अति उछांछली रे; मांडि विरुओ ए काज किम० ३

अर्थ—मारा जेठ कपटनी स्त्री परवंचना मारी जेठाणी घरे घरे अनेक जनोने ठगती फर्या ज करे छे । मारो दियर अविवेक छे तेने तो लाज ज नथी । ते अविवेकनी स्त्री कुमति जे मारी देराणी छे, ते तो बहु उछांछली छे तेथी ते घणां माठां कार्यो करे छे । ३

ससरो सुंहालो रे बोलो नवि शके रे, सासुडीनो नहीं विश्वास,
पियरे पिता छे मुज रोषीयो रे, माडलडी देखाडे त्रास किम० ४

अर्थ – मननो बाप जीव ते कायानो ससरो ते तो बहु सुकुमाल छे । ते बधुं सहन करे छे, पण कांइ बोलतो ज नथी । जीवनी स्त्री चेतना ते मारी सासु तेनो कांइ विश्वास नहीं । ते तो घडीमां आम ने घडीमां तेम एम अनिश्चितपणे रह्या करे छे । कायानुं पियर अशुभ स्थान ने त्यां रहेनार अशुभ कर्म ते कायाना पिता दुष्कर्मनी स्त्री कुगति मोरा

माता । ते बंने तो मने त्रास आपे छे । ४

फुवो बेठो रे खी खी बहु करे रे, फुइडी लगावे मुज राव,
परघरभंजक मामो माहरो रे; मामीनो खोटो स्वभाव केम० ।५।

अर्थ—दुष्कर्मनी बहेन वेदना, तेनो धणी ते कायानो फुवो थाय छे ते आ बधुं जोइने खी खी हस्या ज करे छे। अने तेनी स्त्री वेदना जे कायानी फुइ ते तो मारी राव-फरियाद तेनी पासे कर्या ज करे छे। दुष्कर्मनी स्त्री वेदनानो भाई अहंकार ते कायानो मामो ते निरंतर पारकां घर भांगवानो धंधो ज करे छे। अहंकार नी स्त्री माया ते कायानी मामी छे तेनो स्वभाव तो बहु ज खोटो छे, खराब छे। ए मामा मामीए तो आ जगतने बहु हेरान कर्युं छे। ५

मासी लूंटे मंदिरमां पेसीने रे, मासा देखत लेइ जय'
काम करावे जोरे भाइलो रे, भोजाइ बढवा धाय. किम० ।६।

अर्थ—वेदनानी बेन तृष्णा ते कायानी मासी कायारूपी घरमां पेसीने धर्मरूप धनने लोभरूप मासाना देखतां लइ जाय छे। दुष्कर्मनो पुत्र मोह मायानो भाइ ते जोरावरीथी अनेक प्रकारनां काम—अशुभ कार्य करावे छे अने तेनी स्त्रि कुशिक्षा कायानी भोजाइ ते तो कायम बढवा ज धाय छे—बढया ज करे छे ॥ ६ ॥

फंद पाडे रे पितरीयो वली रे, पितराणी कमजात,

दादो मारो धुरथी लोभियो रे, दादी करे बहु घात क्रिम०॥७॥

अर्थ दुष्कर्मनो भाई विषय ते कायानो पितराई थाय छे ते जीवने नवा नवा फंदमां पाडया ज करे छे। विषयनी स्त्री कुपति ते कायानी पितराणी महा कमजात छे दुष्मनो बाप पाप ते कायानो दादो थाय छे। ते प्रथमथी ज लोभीयो छे अने ते पापनी स्त्री अशुभ आचरणा-कायानी दादी ते तो अनेक प्रकारे कायानो घात करे छे—कायाने दुर्गतिमां नाखीने पीडे छे ॥ ७ ॥

बेटडी तपावे मुजने अति घणुं रे; जमाइ करे रे संताप,
बेटो रहे रे मुजथी रुसणे रे, वहुअरे दे छे सराप क्रिम० ॥८॥

अर्थ—कायानी बेटी-पुत्री चिंता ते मने बहु तपावे छे। अने चिंतानो पति जे रोष ते कायानो जमाइ थाय ते पण बहु संतापे छे। कायानो पुत्र जे अदोष ते तो कायाथी कायम रुसणे रहे छे—जुदो ज रहे छे। तेनी स्त्री आशा कायानी वहूयर ते तो कायम श्राप ज दीधा करे छे ॥ ८ ॥

निर्लज्ज मारो वडुओ सहु कहे रे, वडीआई विकराल,
कोई भलुं नहीं एह कुटुंबमां रे, बोले आलपंपाल क्रिम० ॥९॥

अर्थ—कुगतिनो बाप मिथ्यात्व तेने कायानो वडुओ (मातानो पिता) सहु कहे छे पण ते तो महानिर्लज्ज छे, अने तेनी स्त्री अविरति जे मारी वडीआई (मातानी माता)

कहेवाय छे ते तो महाविकराल छे। आ बंने मिथ्यात्व ने अविरतिए ज आ संसारमां अनंतकाल पर्यंत जीवने भमाव्यो छे, रखडाव्यो छे। आ कुटुंबमां कोइ सारुं के भलुं नथी। वधा आलपंपाल जेम-तेम बोले छे अने मनमां आवे तेम करे छे ॥ ९ ॥

इणे गामे दो चोर नित्य फिरे रे, तिणे सुख नहीं लवलेश,
ए मूकीने जे अलगा रहे रे; ते पुण्यवंत विशेष. किम० ॥ १० ॥

अर्थ—आ गाममां एटले आ संसारमां संयोग ने वियोग नामना बे चोर वसे छे, ते कायम फर्या करे छे। तेणे करीने जीवने लवलेश मात्र पण सुख नथी। जे प्राणी ए संसारने-मूकीने अलगा रहे छे-संसारने तजी दे छे ते जीवो विशेष पुण्यवंत कहेवाय छे। तेने संयोग, वियोग दुःख आपी शकता नथी ॥ १० ॥

एह अर्थ कह्यो अगोचरु रे; सद्गुरुने आधार;
कर जोडी मुनि दयाशील कहे रे, जोजो पंडित विचार किम०

अर्थ—आ सज्जायनो अर्थ अगोचर-न समजाय तेवो छे, कारण के तेमां अभ्यंतर भाव भर्यो छे। अहीं जे उपनय दर्शाववामां आव्यो छे ते में सद्गुरुने आधारे-अवलंबने कहेल छे। सज्जायना कर्ता दयाशील मुनि हाथ जोडीने कहे छे के हे पंडितो! तमे तेनो अर्थ विचारी जोजो ॥ ११ ॥

* समाप्त *